@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
शनिवार, 26 अप्रैल 2025

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 165 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

राकांपा शरद गुट ने भंग की प्रवक्ताओं की समिति

मुंबई, 25 अप्रैल। महाराष्ट्र में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी शरद गुट ने प्रवक्ताओं की समिति को भंग कर दिया है। पार्टी में असंतोष की अटकलों के बीच महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष जयंत पाटिल ने बड़ा कदम उठाया है। महाविकास अघाड़ी गठबंधन में शामिल एनसीपी शरद गुट का इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया पर प्रतिनिधित्व करने के लिए 22 प्रवक्ता हैं। पार्टी प्रवक्ता ने कहा कि जयंत पाटिल की ओर से प्रवक्ताओं की समिति को भंग करने के बारे में एक पत्र मिला है और इस कदम का कोई कारण नहीं बताया गया है। हो सकता है कि पार्टी इकाई का पुनर्गठन किया जा रहा है। महाराष्ट्र में पिछले साल हुए विधानसभा चुनाव में एनसीपी केवल 10 सीटें ही जीत सकी थी। इसके बाद पार्टी के राज्य नेतृत्व के खिलाफ असंतोष बढ़ने की खबरें आ रही थीं। ऐसा कहा जा रहा है कि शरद पवार के पोते और पार्टी विधायक रोहित पवार के प्रदेश अध्यक्ष जयंत पाटिल के साथ अच्छे संबंध नहीं थे। चर्चा यह भी है कि पाटिल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले गठबंधन में शामिल हो सकते हैं। लेकिन पवार और पाटिल दोनों ने इन अटकलों को खारिज कर दिया है। पिछले महीने पार्टी की कार्यसमिति की बैठक में शरद पवार ने संगठन को मजबूत करने पर जोर दिया था। उन्होंने कहा कि था कि चुनावी हार से निराश नहीं होना चाहिए। शरद पवार ने पार्टी नेताओं से लोगों के बीच नए जोश के साथ काम करने और संगठन को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने को कहा। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के बाद एनसीपी-एसपी की यह पहली विस्तारित कार्यसमिति बैठक थी। इस बैठक में बोलने वाले कई नेताओं ने विधानमंडलों में विपक्ष की आवाज दबाने और महाराष्ट्र में नफरत फैलाने वाले भाषणों की बढ़ती घटनाओं का आरोप लगाया और संसदीय और विधानसभा क्षेत्रों के आसन्न परिसीमन से उत्पन्न चुनौतियों पर चिंता व्यक्त की।

पाकिस्तानी नागरिकों की पहचान करें और वापस भेजें: अमित शाह

सिम्मी कौर बब्बर

नई दिल्ली, 25 अप्रैल। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सभी राज्य के मुख्यमंत्रियों से बात की। उन्होंने सभी से अपने-अपने राज्यों में सभी पाकिस्तानी नागरिकों की पहचान करने और उनकी शीघ्र पाकिस्तान वापसी सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाने को कहा। शाह ने कई मुख्यमंत्रियों से बात कर ली है और बाकियों से भी वे बात कर रहे हैं। इस बीच राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने पहलगाम आतंकी हमले की निंदा की। सूत्रों के मुताबिक, अमित शाह ने शुक्रवार को सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को फोन किया और उनसे यह सुनिश्चित करने को कहा कि कोई भी पाकिस्तानी नागरिक देश छोड़ने के लिए निर्धारित समय सीमा से आगे भारत में न रहे। भारत ने गुरुवार को 27 अप्रैल से पाकिस्तानी नागरिकों को जारी किए गए सभी वीजा रद्द करने की घोषणा की थी और पाकिस्तान में रहने वाले भारतीय नागरिकों को जल्द से जल्द घर लौटने की सलाह दी थी। मुख्यमंत्रियों को यह भी कहा गया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों की पहचान करें और उनका निर्वासन सुनिश्चित करें। दरअसल, जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए भीषण आतंकी हमले में दहशतगर्दों ने 26 लोगों (दो स्थानीय और दो विदेशी नागरिकों) को मौत के घाट उतार दिया था। हमला मंगलवार को अपराह्न करीब तीन बजे हुआ, जब आतंकवादी बैसरन घाटी में पहाड़ से नीचे उतरे और वहां पर्यटकों पर गोलीबारी शुरू कर दी। इस स्थान को लंबे हरे-भरे घास के मैदानों के कारण मिनी स्विट्जरलैंड कहा जाता है। हमले के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से फोन पर बातचीत की थी और उनसे सभी उचित कदम उठाने को कहा था। उसी दिन अमित शाह ने आपात बैठक बुलाई। बैठक में कई शीर्ष अधिकारियों को निर्देश दिए गए। सबसे पहले भारत ने 1960 की सिंधु जल संधि को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। सरकार ने कहा कि जब तक पाकिस्तान सीमा-पार आतंकवाद को समर्थन देना बंद नहीं कर देता, तब तक यह संधि निलंबित रहेगी। अटारी एकीकृत चेक पोस्ट बुधवार को ही बंद कर दी गई। जिन लोगों ने अनुमोदन के साथ सीमा पार की है, उन्हें 1 मई से पहले उस रास्ते से लौटने की अनुमति है।

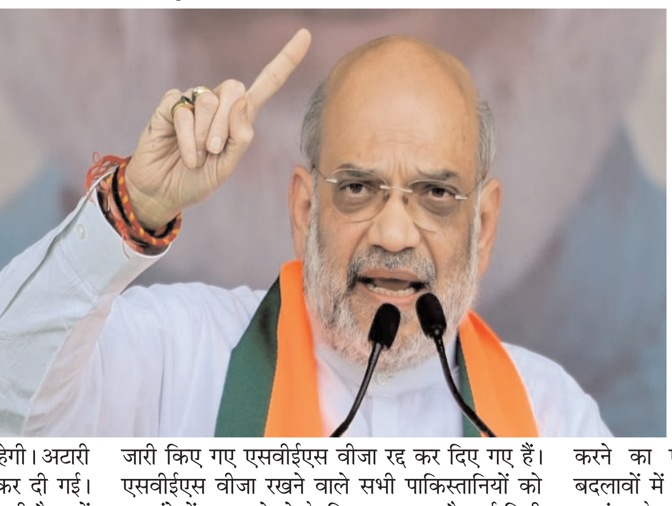

सरकार ने अब पाकिस्तानी नागरिकों को सार्क वीजा छूट योजना (एसवीईएस) वीजा के तहत भारत आने की अनुमति नहीं दी है। पाकिस्तानी नागरिकों को पहले जारी किए गए एसवीईएस वीजा रद्द कर दिए गए हैं। एसवीईएस वीजा रखने वाले सभी पाकिस्तानियों को 48 घंटे में भारत छोड़ने के लिए कहा गया है। नई दिल्ली में पाकिस्तानी उच्चायोग में रक्षा, सैन्य, नौसेना और वायु सलाहकारों को अवांछित घोषित कर दिया गया और उन्हें देश छोड़ने के लिए एक सप्ताह का समय दिया गया। भारत ने यह भी घोषणा की कि वह इस्लामाबाद में भारतीय उच्चायोग से अपने रक्षा कर्मचारियों को वापस बुलाएगा। भारत ने कहा कि वह 1 मई तक और कटौती करके उच्चायोगों की कुल संख्या को वर्तमान 55 से घटाकर 30 कर देगा। सरकार ने बीते दिन पाकिस्तानी नागरिकों के लिए वीजा सेवाओं को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया। इसने सभी पाकिस्तानी नागरिकों को 27 अप्रैल तक भारत छोड़ने को कहा। हालांकि, जिनके पास मेडिकल वीजा है वे केवल 29 अप्रैल तक ही रह सकते हैं। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने पंजाब के अटारी, हुसैनीवाला और सादकी में रिट्रीट समारोह के दौरान औपचारिक प्रदर्शन को कम करने का एक सुनियोजित निर्णय लिया। प्रमुख बदलावों में भारतीय गार्ड कमांडर और समकक्ष गार्ड कमांडर के बीच प्रतीकात्मक हाथ मिलाने की प्रक्रिया को निलंबित करना भी शामिल है।

इसरो के पूर्व अध्यक्ष के कस्तूरीरंगन का निधन

कौमी संवाददाता

बंगलूरू, 25 अप्रैल। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के पूर्व अध्यक्ष के कस्तूरीरंगन का निधन हो गया। अधिकारियों ने बताया कि उन्होंने बंगलूरू में अंतिम सांस ली। वे 84 वर्ष के थे। बताया जा रहा है कि वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका पार्थिव शरीर 27 अप्रैल को अंतिम दर्शन के लिए रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट (आरआरआई) में रखा जाएगा। पूर्व इसरो प्रमुख के निधन पर पीएम मोदी ने शोक जताया। पीएम मोदी ने कहा कि के कस्तूरीरंगन ने इसरो में बहुत परिश्रम से काम किया और भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा तैयार करने के लिए भारत हमेशा डॉ. कस्तूरीरंगन का आभारी रहेगा। प्रख्यात वैज्ञानिक के कस्तूरीरंगन का जन्म 24 अक्तूबर 1940 को केरल के

एर्नाकुलम में हुआ था। उन्होंने लंबे समय तक भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में सेवाएं दीं। वे 1994 से 2003 तक इसरो के चेयरमैन और भारत सरकार के सचिव रहे। 2003 में इसरो से सेवानिवृत्त होने के बाद कस्तूरीरंगन इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज के अध्यक्ष बने। इसके साथ ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सदस्य बने। भारत सरकार ने विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उनको पद्म श्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण से सम्मानित किया। वे 2003 से 2009 तक राज्यसभा सदस्य भी रहे। इसके अलावा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज बंगलूरू के डायरेक्टर, नई शिक्षा नीति ड्राफ्ट कमेटी के चेयरमैन, एनआईआईटी विवि राजस्थान के चेयरमैन रहे। डॉक्टर कृष्णा कस्तूरीरंगन नई शिक्षा नीति 2020 का ड्राफ्ट तैयार करने वाले समिति के अध्यक्ष भी रहे। इसरो अध्यक्ष के कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में अंतरिक्ष कार्यक्रम ने कई प्रमुख उपलब्धियां हासिल कीं। उन्होंने ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी) का सफल प्रक्षेपण और जीएसएलवी का पहला सफल उड़ान परीक्षण कराया। इसके अलावा उन्होंने उपग्रह आईआरएस-1सी और 1डी के डिजाइन, विकास और प्रक्षेपण, दूसरी पीढ़ी के निर्माण और तीसरी पीढ़ी के इनसेट उपग्रहों के प्रक्षेपण के अलावा महासागर अवलोकन उपग्रहों आईआरएस-पी3/पी4 के प्रक्षेपण की भी देखरेख की। डॉ. कस्तूरीरंगन ने उच्च ऊर्जा एक्स-रे और गामा किरण खगोल विज्ञान के साथ-साथ प्रकाशीय खगोल विज्ञान में अनुसंधान किया। उन्होंने ब्रह्मांडीय एक्स-रे स्रोतों, आकाशीय गामा-किरण और निचले वायुमंडल में ब्रह्मांडीय एक्स-रे के प्रभाव के अध्ययन में व्यापक और महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

देश उनके साथ खड़ा है, संसद में प्रस्ताव पारित करें: सिब्बल

नई दिल्ली, 25 अप्रैल। राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने शुक्रवार को पीएम मोदी को सलाह दी कि उन्हें संसद का विशेष सत्र बुलाना चाहिए और एकमत होकर एक प्रस्ताव पारित करना चाहिए, जिसमें पहलगाम आतंकी हमले को लेकर देश की भावनाओं को पूरी दुनिया के सामने प्रदर्शित किया जा सके। कपिल सिब्बल ने कहा कि मेरी प्रधानमंत्री को कुछ सुझाव हैं। संसद का विशेष सत्र बुलाया जाए, जिसमें ताजा हालात पर चर्चा हो और सभी से सुझाव लिए जाएं। पूरा देश उनके साथ खड़ा है। एक आतंकी, आतंकी होता है, उसका कोई धर्म नहीं होता। संसद में एक प्रस्ताव एकमत से पारित किया जाना चाहिए, जिसमें देशवासियों की भावनाओं को पूरी दुनिया के सामने प्रदर्शित किया जाए। राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने कहा कि हमें सत्तापक्ष और विपक्ष के सांसदों का एक प्रतिनिधिमंडल अफ्रीका, अमेरिका, यूरोप, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, रूस और दक्षिण अमेरिकी देशों में भेजने की जरूरत है, ताकि हम दुनियाभर के देशों को स्थिति के बारे में बता सकें। अगर हम ये कदम नहीं उठाएंगे तो हम कूटनीतिक दबाव नहीं डाल पाएंगे। वरिष्ठ नेता ने कहा कि हमें सभी बड़े देशों को बताना होगा कि अगर वे पाकिस्तान के साथ व्यापार करेंगे तो हम उनके साथ व्यापार नहीं करेंगे। संयुक्त राष्ट्र को भी दबाव बनाना चाहिए और सुरक्षा परिषद में भी प्रस्ताव पारित होना चाहिए। बीती 22 अप्रैल को जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान समर्थित लश्कर ए तैयबा के संगठन टीआरएफ के आतंकियों ने 26 निर्दोष पर्यटकों की गोली मारकर हत्या कर दी थी। इस घटना के बाद भारत सरकार ने सख्त कदम उठाते हुए सिंधु जल समझौता स्थगित कर दिया। साथ ही पाकिस्तान के साथ कूटनीतिक संबंध भी कम कर लिए हैं। भारत ने पाकिस्तान के उच्चायुक्त को एक हफ्ते में देश छोड़ने का निर्देश दिया है। आतंकी हमले के बाद भारतीय सेना भी अलर्ट पर है।

पहलगाम हमला याद दिलाता है कि आतंकवाद वैश्विक खतरा: धनखड़

सौरभ शर्मा

चेन्नई, 25 अप्रैल। भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शुक्रवार को अपने एक बयान में कहा कि पहलगाम आतंकी हमला इस बात की याद दिलाता है कि आतंकवाद वैश्विक खतरा है, जिसका समाधान मानवता को एकजुट होकर करना होगा। उन्होंने लोगों से राजनीतिक, व्यक्तिगत और अन्य हितों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देने की अपील की। उपराष्ट्रपति ने कहा कि भारत दुनिया का सबसे शांतिप्रिय देश है और इसकी सभ्यता की भावना वसुधैव कुटुम्बकम (दुनिया को एक परिवार के रूप में देखने का सिद्धांत) में परिलक्षित होती है, पूरी दुनिया अब इसे मान रही है। उपराष्ट्रपति ने तमिलनाडु के राजभवन में आयोजित राज्य, केंद्रीय और निजी विश्वविद्यालयों के दो दिवसीय कुलपति सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए कहा, हमने इस सम्मेलन के आरंभ में मौन रखा। मैं पहलगाम में हुए जघन्य हमले पर गहरा दुख और आक्रोश व्यक्त करने में राष्ट्र के साथ हूं,

जिसमें निर्दोष लोगों की जान चली गई। तमिलनाडु के राज्यपाल आर एन रवि और कुलपतियों ने भी 22 अप्रैल को जम्मू और कश्मीर के पहलगाम आतंकवादी हमले में मारे गए लोगों की याद में एक मिनट का मौन रखा। पूर्व आर्मी चीफ शंकर रॉय चौधरी ने पहलगाम की घटना को खुफिया विफलता करार दिया है। उन्होंने कहा कि पहलगाम हमले में पाकिस्तान और पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई की भूमिका है। रिटायर्ड जनरल शंकर रॉय चौधरी ने कहा कि इतनी संख्या में आतंकवादी सीमापार कैसे आ गए, इसकी जांच होनी चाहिए। बीती 22 अप्रैल को जम्मू कश्मीर के पहलगाम में आतंकियों ने 26 निर्दोष पर्यटकों की नृशंस तरीके से हत्या कर दी। घटना में पाकिस्तान समर्थित आतंकी संगठन लश्कर ए तैयबा से जुड़े संगठन टीआरएफ का हाथ बताया जा रहा है। भारत सरकार ने भी इस मामले में कड़ा रुख अपनाया है और पाकिस्तान के साथ साल 1960 में हुए सिंधु जल समझौते को स्थगित कर दिया है। साथ ही पाकिस्तान के उच्चायुक्त को एक हफ्ते में देश छोड़ने का निर्देश दिया है।

आतंकी हमले का लिया जाएगा बदला: अजित पवार

तेजिन्दर कौर बब्बर

पुणे, 25 अप्रैल। महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम अजित पवार ने पहलगाम आतंकी हमले की निंदा की। उन्होंने कहा कि आतंकी हमले का बदला लिया जाएगा। पूरा देश यही चाहता है। इसके अलावा पुणे के दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल में भर्ती न करने पर हुई गर्भवती महिला की मौत के मामले में उन्होंने कहा कि इसने सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में विसंगतियों और असंवेदनशीलता को उजागर किया है। पुणे में राज्य परिवार कल्याण भवन एवं प्रशिक्षण केंद्र के शिलान्यास समारोह और 43 नए आपला दवाखाना क्लीनिकों के उद्घाटन मौके पर डिप्टी सीएम अजित पवार ने कहा कि भारतीय सेना जम्मू एवं कश्मीर में मंगलवार को हुए हमले के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करेगी। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि हमने हमले में जान गंवाने वालों को श्रद्धांजलि अर्पित की है। इनमें महाराष्ट्र के छह लोग भी शामिल हैं। पूरे देश में यह भावना है कि हमले का बदला लिया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सिंधु जल संधि को निलंबित करने जैसे कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं और पाकिस्तान के साथ सभी संबंध तोड़ दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि कायरतापूर्ण हमले में निर्दोष पर्यटक मारे गए। सभी ने इस कृत्य की निंदा की है और इसकी पुनरावृत्ति नहीं

होनी चाहिए। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारी भारतीय सेना इस कृत्य के लिए जिम्मेदार लोगों को खत्म कर देगी। दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल द्वारा 10 लाख रुपये जमा कराने की मांग को लेकर कथित तौर पर गर्भवती महिला को भर्ती करने से इनकार करने के बाद उसकी मौत के मामले में अजित पवार ने कहा कि राज्य सरकार आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं को मजबूत करने के लिए काम कर रही है। साथ ही ऐसी नीति लागू करने की योजना बना रही है, जिससे आपात स्थिति में मरीजों को उपचार देने से मना न किया जाए। महिला की मौत को हृदय विदारक बताते हुए पवार ने कहा कि इस घटना से उसके परिवार को अपूरणीय पीड़ा पहुंची है और समाज की अंतरात्मा को गहरा आघात पहुंचा है। यह प्रकरण सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में जारी विसंगतियों और असंवेदनशीलता को उजागर करता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने मामले का गंभीरता से संज्ञान लिया है। जांच शुरू कर दी गई है। हमें प्रारंभिक रिपोर्ट मिल चुकी है और जिम्मेदारों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इसका उद्देश्य सिर्फ जिम्मेदारी तय करना नहीं है बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि ऐसी घटनाएं दोबारा न हों। राज्य सरकार मृतक महिला के परिवार को न्याय दिलाने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाना हमारा कर्तव्य है।

मेधा पाटकर निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार

नई दिल्ली, 25 अप्रैल। सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर को दिल्ली पुलिस ने निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार किया। उनके खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी था। उन्हें साकेत कोर्ट में पेश किया जाएगा। दक्षिणी रेंज के संयुक्त पुलिस आयुक्त एसके जैन ने बताया कि उनके खिलाफ क्या जमानती वारंट जारी हुआ था। सामाजिक कार्यकर्ता और नर्मदा बचाओ आंदोलन की नेता मेधा पाटकर को दिल्ली पुलिस ने मंगलवार देर रात निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार किया। उनके खिलाफ एक पुराने मामले में दिल्ली की एक अदालत ने गैर-जमानती वारंट जारी किया था। मेधा पाटकर को आज साकेत कोर्ट में पेश किया जाएगा। पुलिस के अनुसार, यह गिरफ्तारी जमानती धाराओं के तहत हुई है। उन्हें कोर्ट से जमानत मिलने की संभावना है। मेधा पाटकर की गिरफ्तारी एक पुराने मामले से जुड़ी है, जिसमें दिल्ली के उपराज्यपाल (एलजी) ने उनके खिलाफ शिकायत दर्ज की थी। यह मामला कई साल पुराना है। इसमें मेधा पाटकर पर कुछ विवादास्पद बयानों या गतिविधियों का आरोप है। हालांकि, मामले की डिटेल जानकारी अभी सार्वजनिक नहीं की गई है।

स्वतंत्रता सेनानियों पर टिप्पणी करने की किसी को इजाजत नहीं दी जाएगी: सुप्रीम कोर्ट

नरेश मल्होत्रा

नई दिल्ली, 25 अप्रैल। सुप्रीम कोर्ट से कांग्रेस सांसद राहुल गांधी को बड़ी राहत मिली है। कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस आदेश पर रोक लगा दी है, जिसमें लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ उत्तर प्रदेश की एक ट्रायल कोर्ट की ओर से जारी समन को रद्द करने से इनकार कर दिया गया था। राहुल को उनके खिलाफ दायर वीडी सावरकर मानहानि मामले में समन किया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी को विनायक दामोदर सावरकर पर उनकी गैरजिम्मेदाराना टिप्पणी के लिए फटकार लगाई। कोर्ट ने कहा कि हमें अपने स्वतंत्रता सेनानियों का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। हालांकि, शीर्ष अदालत ने उत्तर प्रदेश में उनकी टिप्पणी के लिए दर्ज मामले में राहुल गांधी के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही पर रोक लगा दी। न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और जस्टिस मनमोहन की पीठ ने राहुल गांधी को भविष्य में इस तरह के कोई भी बयान न देने की चेतावनी भी दी, क्योंकि शीर्ष अदालत इस तरह की टिप्पणियों पर स्वतः संज्ञान ले सकती है। पीठ ने कांग्रेस नेता की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक सिंघवी से पूछा कि क्या राहुल गांधी जानते हैं कि महात्मा गांधी भी अंग्रेजों के साथ अपने संवाद में आपका वफादार सेवक जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते थे। जब सिंघवी ने तर्क दिया कि राहुल के खिलाफ शत्रुता और सार्वजनिक उत्पात को बढ़ावा देने के आरोप नहीं बनते तो पीठ ने टिप्पणी की, आप बहुत आज्ञाकारी हैं, क्या आपके मुवक्किल को पता है कि महात्मा गांधी ने भी वायसराय को संबोधित करते समय आपका वफादार सेवक शब्द का इस्तेमाल किया था? क्या महात्मा गांधी को केवल इसलिए अंग्रेजों का सेवक कहा जा सकता है, क्योंकि उन्होंने वायसराय को आपका सेवक कहकर संबोधित किया था। उन दिनों मैंने भी देखा है, कलकत्ता उच्च न्यायालय के हमारे न्यायाधीश मुख्य न्यायाधीश को आपका सेवक लिखकर संबोधित करते थे। न्यायमूर्ति दत्ता ने कहा, क्या आपके मुवक्किल को पता है कि उनकी दादी (इंदिरा गांधी) जब प्रधानमंत्री थीं, तो उन्होंने भी इन्हीं सज्जन (सावरकर) की प्रशंसा करते हुए एक पत्र भेजा था? न्यायाधीश ने कहा कि तो स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में गैर-जिम्मेदाराना बयान न दें। आपने कानून के बारे में अच्छी बात कही है, आप इस पर रोक लगाने के हकदार हैं। हम इस पर कुछ नहीं कह रहे हैं। पीठ ने चेतावनी देते हुए कहा कि उनके द्वारा दिए गए किसी भी अन्य बयान पर स्वत: संज्ञान लिया जाएगा। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के बारे

में और कुछ नहीं कहा जा सकता। उन्होंने हमें स्वतंत्रता दिलाई है और हम उनके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं? यह सही तरीका नहीं है। इसके बाद शीर्ष अदालत ने उत्तर प्रदेश सरकार और शिकायतकर्ता अधिवक्ता नृपेंद्र पांडे को नोटिस जारी किया और इलाहाबाद उच्च न्यायालय के उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें राहुल गांधी के खिलाफ निचली अदालत के समन को रद्द करने से इनकार कर दिया गया था। सिंघवी ने अदालत से कोई टिप्पणी न करने का आग्रह किया और कहा कि राहुल गांधी का समूहों के बीच दुश्मनी पैदा करने का कोई इरादा नहीं था। पीठ ने पलटवार करते हुए कहा, आप स्वतंत्रता सेनानियों के साथ इस तरह का व्यवहार नहीं करते। जब आपको भारत के इतिहास के बारे में कुछ भी पता नहीं है, तो आपको ऐसी कोई टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। न्यायमूर्ति दत्ता ने आगे कहा कि वह एक राजनीतिक दल के नेता हैं और आप इस तरह की टिप्पणी क्यों करेंगे। आप महाराष्ट्र जाइए, वहां उनकी (सावरकर की) पूजा होती है। ऐसा मत कीजिए। राहुल गांधी ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस आदेश को चुनौती देते हुए शीर्ष अदालत का रुख किया, जिसमें मामले में उनके खिलाफ जारी समन को रद्द करने से इनकार कर दिया गया था। पेशे से वकील पांडे ने राहुल गांधी के खिलाफ वर्गों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देने और सार्वजनिक शरारत जैसे कथित अपराधों के लिए विभिन्न दंड प्रावधानों के तहत मामला दर्ज कराया था।

भाजपा के राजा इकबाल बने दिल्ली के मेयर

नई दिल्ली, 25 अप्रैल। भाजपा के वरिष्ठ पार्षद व निवर्तमान नेता राजा इकबाल सिंह दिल्ली के नए मेयर चुने गए हैं। उन्होंने एकतरफा मुकाबले में कांग्रेस के मनदीप सिंह को 125 वोट से हराया। चुनाव में 142 सदस्यों ने हिस्सा लिया, जिनमें से वैध पाए गए 141 वोटों में से राजा को 133 वोट मिले, जबकि कांग्रेस के मनदीप सिंह को आठ वोट मिले। एक वोट अवैध करार दिया गया, यह वोट भाजपा सदस्य का बताया जा रहा है, क्योंकि कांग्रेस को अपने सदस्यों की संख्या के बराबर आठ वोट प्राप्त हुए है। भाजपा के ही जयभगवान यादव निर्विरोध डिप्टी मेयर चुने गए। चुनाव में 120 सदस्यों ने भाग नहीं लिया। इनमें आम आदमी पार्टी के तीनों राज्यसभा सांसद, विधानसभा से एमसीडी मनोनीत तीन विधायक व 113 पार्षद और भाजपा के सांसद मनोज तिवारी शामिल है। एमसीडी सदन में भाजपा के 135 सदस्य है, लेकिन उसके उम्मीदवार को 133 वोट ही मिले। दरअसल मनोज तिवारी मतदान करने नहीं आए और उसके एक सदस्य का वोट रद्द हो गया। उधर, आम आदमी पार्टी ने कल तक सत्ता में रहने के बावजूद मेयर व डिप्टी मेयर चुनाव में अपने उम्मीदवार मैदान में नहीं उतारे थे। इसके अलावा उसने इन पदों के चुनाव का बहिष्कार करने का भी ऐलान किया था। एमसीडी के इतिहास में यह पहला अवसर था जब सत्तारूढ़ दल ने मेयर व डिप्टी मेयर पद के चुनाव में हिस्सा नहीं लिया। उसके चुनाव में नहीं उतरने की स्थिति में कांग्रेस ने इन दोनों पदों के लिए उम्मीदवार मैदान में उतार दिए। इस सदन में इससे पहले हुए मेयर के तीन चुनाव में उम्मीदवार नहीं उतारे थे। मेयर चुनाव में 10 सांसदों, 14 विधायकों और 238 पार्षदों को मतदान का अधिकार था। एमसीडी में 12 वार्ड रिक्त है। एमसीडी की सत्ता प्राप्त होने के मद्देनजर सिविक सेंटर भाजपा पार्षद दल के कार्यालय में सुबह से उत्साह का माहौल देखने को मिला। प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा दोपहर दो बजे सदन की बैठक शुरू होने से तीन घंटे पहले ही पहुंच गए थे। इसी भाजपा के सांसद व विधायक भी बैठक से काफी पहले आए गए थे।

ब्रिटेन का यूक्रेन में सेना भेजने की योजना त्यागने की संभावना

एजेंसी

मॉस्को। ब्रिटेन अब यूक्रेन में हजारों सैनिक भेजने के विचार को त्यागने की योजना बना रहा है क्योंकि वहां सेना को भेजने में जोखिम बहुत अधिक है। टाइम्स अखबार ने ब्रिटिश सूत्रों का हवाला देते हुए यह जानकारी दी। 'इच्छुक गठबंधन' के बारे में चर्चा में शामिल एक सूत्र ने कहा, 'जोखिम बहुत अधिक है और इस तरह के कार्य के लिए सेना अपर्याप्त है। यह हमेशा ब्रिटेन का विचार था। फ्रांस ही अधिक सशक्त दृष्टिकोण चाहता था।' रिपोर्ट में कहा गया है कि यूक्रेन के लिए सुरक्षा प्रतिबद्धता यूक्रेन के सशस्त्र बलों के पुनर्गठन और पुनः शस्त्रीकरण पर केंद्रित होगी। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने 27 मार्च को पेरिस में 'इच्छुक गठबंधन' के शिखर सम्मेलन की मेजबानी के बाद कहा कि कई देश 'निवारक बलों' के रूप में यूक्रेन में सेना भेजना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि ब्रिटेन-फ्रांस की पहल न तो यूक्रेनी सैनिकों का प्रतिस्थापन होगी और न ही शांति सेना। इसका लक्ष्य रणनीतिक स्थानों पर सैनिकों को तैनात करके रूस को रोकना होगा। रूसी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मारिया ज़खारोवा ने कहा है कि यूक्रेन में किसी भी विदेशी सैन्य उपस्थिति को रूस के लिए खतरे के रूप में देखा जाएगा और इससे प्रत्यक्ष सैन्य टकराव का खतरा है।

रूस यूक्रेन समझौते पर पहुंचने के लिए तैयार है, विवरण पर चर्चा जारी -लावरोव

मास्को। रूस यूक्रेन के साथ संघर्ष के समाधान पर एक समझौते पर पहुंचने को तैयार है, लेकिन सौदे के कुछ प्रावधानों को अभी भी ठीक करने की आवश्यकता है। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने एक साक्षात्कार में यह बात कही। श्री लावरोव ने अमेरिकी प्रसारक 'सीबीएस' न्यूज़ के साथ एक साक्षात्कार के दौरान कहा, 'अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के बयान में एक समझौते का उल्लेख है, और हम

एक समझौते पर पहुंचने के लिए तैयार हैं, लेकिन अभी भी कुछ विशिष्ट बिंदु हैं - इस सौदे के तत्व जिन्हें ठीक करने की आवश्यकता है।साक्षात्कार के अंश प्रकाशित किए गए। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार रविवार को पूरा संस्करण प्रसारित किया जाएगा। इससे पहले श्री ट्रम्प ने उम्मीद जताई थी कि रूस और यूक्रेन इस सप्ताह एक समझौता करेंगे। श्री ट्रम्प ने कहा कि उन्होंने यूक्रेनी संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान पर वार्ता में भागीदारी के लिए अपनी समय सीमा निर्धारित की है, लेकिन इसका खुलासा नहीं किया।

थाईलैंड में पुलिस विमान दुर्घटनाग्रस्त, छह की मौत

बैंकॉक। थाईलैंड के फेत्चाबुरी प्रांत के रिसॉर्ट शहर हुआ हिन के तट के पास शुक्रवार सुबह एक छोटा पुलिस विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें छह लोगों की मौत हो गई। थाई पुलिस ने यह जानकारी दी।थाई राष्ट्रीय पुलिस ने अपने सोशल मीडिया पेज पर कहा कि पुलिस विमानन प्रभाग का विमान उड़ान भरने के तुरंत बाद समुद्र में दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें सवार सभी छह लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने कहा कि यह दुर्घटना उस समय हुई जब विमान पैराशूट प्रशिक्षण के लिए परीक्षण उड़ान भर रहा

था। दुर्घटना के कारणों की जांच की जाएगी। वीडियो फुटेज में विमान को समुद्र में गिरते हुए दिखाया गया है। शुरुआती जांच से पता चलता है कि उड़ान भरने के तुरंत बाद इंजन में खराबी आ गई। पुलिस ने कहा कि दुर्घटना के कारणों की जांच की जाएगी। फेत्चाबुरी प्रांत के पुलिस आपातकालीन केंद्र ने कहा कि उन्हें स्थानीय समयानुसार सुबह करीब 8~15 बजे एक स्थानीय रिसॉर्ट के पास समुद्र में एक विमान के गिरने की सूचना मिली।

ब्राजील के पूर्व राष्ट्रपति बोल्सोनारो की तबीयत बिगड़ी

ब्रासीलिया। ब्राजील के पूर्व राष्ट्रपति जेयर बोल्सोनारो की हालत बिगड़ रही है और उनका रक्तचाप भी बढ़ रहा है। दो सप्ताह से भी कम समय पहले उनकी आंत की सर्जरी की गयी थी और वह इससे उबर रहे थे। जारी एक मेडिकल बुलेटिन में यह जानकारी दी गयी। ब्रासीलिया के डीएफ स्टार अस्पताल ने बुलेटिन में कहा कि बोल्सोनारो के लीवर की प्रयोगशाला जांच में भी स्थिति बिगड़ने की बात

सामने आई है। तेरह अप्रैल को बोल्सोनारो का 12 घंटे का ऑपरेशन हुआ था, जिसका उद्देश्य आंत की रुकावट को दूर करना और आंत की दीवार का पुनर्निर्माण करना था। वर्ष 2018 के चुनाव अभियान के दौरान पेट में चाकू घोंपने के बाद से यह पूर्व राष्ट्रपति पर की गई छठी सर्जरी थी। बोल्सोनारो 2019 से 2022 के अंत तक ब्राजील के राष्ट्रपति रहे।

पाकिस्तान करता है 'गंदा काम' ! आतंकवाद पर रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने स्वीकारा 'सच'

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने स्वीकार किया कि उनका देश आतंकवाद का समर्थन करता रहा है। एक इंटरव्यू के वायरल क्लिप में उन्हें कहता सुना जा सकता है कि पाकिस्तान पश्चिम के लिए दशकों से 'गंदा काम' करता रहा है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक आसिफ ने यह हैरान करने वाला बयान स्काई न्यूज के साथ एक इंटरव्यू के दौरान दिया। आतंकियों ने जम्मू-कश्मीर में एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल - पहलगाम स्थित बैसरन घाटी में लोगों (ज्यादातर पर्यटक) पर अंधाधुंध गोलियां चला दी थीं। हमले में कम से कम 26 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। इस हमले के बाद भारत-पाक के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया। वायरल वीडियो क्लिप में पाकिस्तान के रक्षा मंत्री स्काई न्यूज

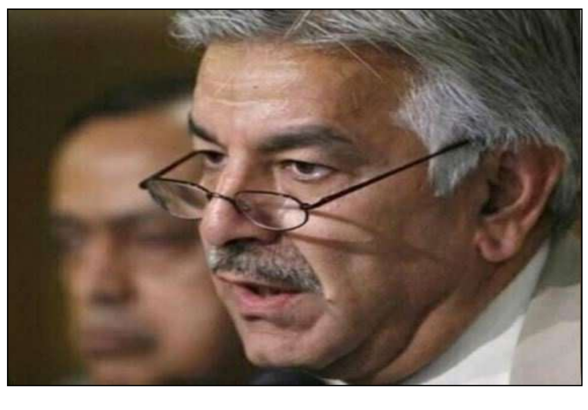

की यल्दा हकीम से बातचीत करते नजर आ रहे हैं। वह उनसे पूछती हैं, ÷लेकिन आप मानते हैं, आप मानते हैं, महोदय, कि पाकिस्तान का इन आतंकवादी संगठनों को समर्थन, ट्रेनिंग और फंडिंग का एक लंबा इतिहास रहा है? ख्वाजा आसिफ ने अपने जवाब में कहा, 'हम करीब तीन दशक से अमेरिका और ब्रिटेन समेत पश्चिमी देशों के लिए यह गंदा काम कर रहे हैं...यह एक गलती थी और हमें इसकी कीमत चुकानी पड़ी, इसीलिए आप मुझसे यह कह रहे हैं। अगर हम सोवियत संघ के खिलाफ युद्ध में और 9/11 के बाद की जंग में शामिल नहीं होते, तो पाकिस्तान का ट्रैक रिकॉर्ड बेदाग होता।' इंटरव्यू में आसिफ ने पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान के खिलाफ सुरक्षा उपाय लागू करने के लिए नई दिल्ली की आलोचना की। 22 अप्रैल के क्रूर आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कई कूटनीतिक कदम उठाए हैं। भारत ने पाकिस्तान के साथ 1960 के सिंधु जल समझौते को तुरंत प्रभाव से निलंबित करने, अटारी इंटिग्रेटेड चेक पोस्ट को बंद करने, पाकिस्तानी नागरिकों के लिए वीजा सेवाओं को तत्काल प्रभाव से निलंबित करने, जैसे कई कदम उठाए हैं।

अमेरिका ने रूस को दी चेतावनी, ट्रंप ने कहा-यूक्रेन से शांति समझौता न करने पर करना पड़ेगा प्रतिबंधों का सामना

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका ने रूस को यूक्रेन पर किए गए ताजा हमलों के बाद कड़ी चेतावनी दी है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कड़ा रुख अपनाते हुए कहा कि अगर यूक्रेन के साथ शांति समझौता नहीं हुआ तो रूस को प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि ट्रंप ने बाद में संवाददाताओं से कहा कि उनका मानना ??है कि रूस, यूक्रेन पर हमले रोकने की उनकी अपील को गंभीरता से लेगा। दोनों देशों के बीच समझौता अभी भी संभव है।

न्यूज के अनुसार, राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि अमेरिका लगातार रूस पर यूक्रेन पर हमले रोकने के लिए दबाव डाल रहा है। ट्रंप ने दावा किया, आपको पता नहीं है कि हम रूस पर कितना दबाव डाल रहे हैं। ट्रंप से पूछा गया कि यूक्रेन के साथ शांति योजना पर पहुंचने के लिए रूसी सरकार ने क्या रियायतें दी हैं? उन्होंने इसका

स्पष्ट जवाब नहीं दिया।ट्रंप ने कहा कि वह द अटलांटिक अखबार के प्रधान संपादक जेफरी गोल्डबर्ग से मिलने जा रहे हैं, जिन्हें अनजाने में सिग्नल चैट में शामिल कर लिया गया था। उल्लेखनीय है कि इस चैट में रक्षा सचिव पीट हेगसेथ सहित अमेरिकी रक्षा अधिकारियों ने यमन में हूथी विद्रोहियों पर हमले की योजनाओं पर चर्चा की थी।

गाजा में इजराइली हमलों में कम से कम 28 लोगों की मौत

एजेंसी

गाजा। इजराइल द्वारा गाजा पट्टी में किए गए ताजा हवाई और जमीनी हमलों में कम से कम 28 लोगों की जान चली गई है। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, मरने वालों में अधिकांश महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। इजराइल ने पिछले महीने हमास के साथ संघर्ष विराम तोड़ते हुए सैन्य अभियान को फिर से तेज कर दिया है। मार्च की शुरुआत से इजराइल ने गाजा में 20 लाख फिलिस्तीनियों की खाद्य और अन्य आवश्यक आपूर्ति को पूरी तरह रोक दिया है, ताकि हमास को बंधकों की रिहाई के लिए दबाव में लाया जा सके। हमास का कहना है कि वह अब भी 59 बंधकों को रखे हुए है, जिनमें से 24 के जीवित होने की आशंका है। संगठन ने साफ कर दिया है कि वह बंधकों की रिहाई केवल फिलिस्तीनी कैदियों की रिहाई, स्थायी युद्धविराम और इजराइल की पूरी तरह वापसी की शर्तों पर ही करेगा। इजराइल का रुख इससे बिल्कुल विपरीत है, उसने हमास को पूरी तरह नष्ट करने की कसम खाई है। यह युद्ध 07 अक्टूबर 2023 को शुरू हुआ

था, जब हमास के नेतृत्व में लड़ाकों ने दक्षिणी इजराइल पर हमला करते हुए लगभग 1,200 लोगों की हत्या कर दी थी और 251 लोगों को बंधक बना लिया था। अब तक अधिकांश बंधक विभिन्न युद्धविराम समझौतों और सौदों के तहत रिहा किए जा चुके हैं। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इजराइल के जवाबी सैन्य अभियान में अब तक 51,000 से अधिक फिलिस्तीनियों की जान जा चुकी है, जिनमें बड़ी संख्या में महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। वहीं, इजराइल का दावा है कि उसने करीब 20,000 हमास लड़ाकों को मारा है, लेकिन उसने इसका कोई सबूत सार्वजनिक नहीं किया है। इस बीच, इजराइल ने 'यॉम हाशोआ' (होलोकॉस्ट स्मृति दिवस) मनाया। सुबह 10 बजे पूरे देश में दो मिनट के लिए सायरन बजाया गया, लोग सड़क किनारे रुक गए और मृतकों को श्रद्धांजलि दी। इससे पहले, इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने यरुशलम स्थित 'याद व शेम' होलोकॉस्ट स्मारक पर आधिकारिक में कहा था होलोकॉस्ट की मुख्य सीख यही है कि हम ईरान को परमाणु हथियार हासिल नहीं करने देंगे। हम हमास को पूरी तरह नष्ट करेंगे और सभी बंधकों को वापस लाएंगे।

नेपाल संसद के बजट सत्र में विपक्ष के बहिष्कार से प्रधानमंत्री का संबोधन स्थगित

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल के संसद का बजट सत्र शुरू हो रहा है, लेकिन पहले ही दिन सरकार और प्रतिपक्ष के बीच विवाद शुरू हो चुका है। विपक्षी नेता ने प्रधानमंत्री के संबोधन का बहिष्कार करने की घोषणा कर दी है, जिसके कारण प्रधानमंत्री का संबोधन कार्यक्रम अंतिम समय में स्थगित कर दिया गया है। आमतौर पर संसद सत्र के पहले दिन सदन में सभी प्रमुख दल के नेता उपस्थित रहते हैं और उन नेताओं का संबोधन होता है, लेकिन प्रमुख विपक्षी नेता माओवादी के पुष्प कमल दहाल प्रचंड ने सुबह ही प्रधानमंत्री के संबोधन का बहिष्कार करने की घोषणा कर दी। संसदीय दल की बैठक के बाद प्रचंड ने प्रधानमंत्री से तत्काल इस्तीफा देने की मांग की। उन्होंने कहा कि सरकार हर मोर्चे पर विफल हो गई है और प्रधानमंत्री ओली को एक भी दिन भी पद पर रहने का कोई अधिकार नहीं है। संसद सचिवालय को भेजे गए पत्र में प्रधानमंत्री का आज का संबोधन

कार्यक्रम रद्द होने की जानकारी दी गई है। इस पत्र में भी विपक्षी नेताओं की अनुपस्थिति के कारण प्रधानमंत्री का संबोधन रद्द किए जाने की जानकारी दी गई है। प्रधानमंत्री द्वारा संसद को संबोधित करते समय विपक्ष सहित सभी प्रमुख दलों के नेताओं के उपस्थित होने की प्रथा है। सिर्फ विपक्षी नेता ही नहीं सत्ता पक्ष के प्रमुख नेता नेपाली कांग्रेस के शहर बहादुर देउवा भी विदेश यात्रा पर होने के कारण वो भी आज संसद की बैठक में उपस्थित नहीं हो सकेंगे। देउवा आज अपराह्न बैंकाक और सिंगापुर की यात्रा से वापस आ रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र का भारत-पाकिस्तान से अधिकतम संयम बरतने का आग्रह

एजेंसी

न्यूयॉर्क। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच उत्पन्न तनाव पर संयुक्त राष्ट्र ने चिंता जताई है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने दोनों देशों से इस दौरान अधिकतम संयम बरतने का आग्रह किया है। द गार्जियन अखबार के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र महासचिव गुटेरेस के प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने न्यूयॉर्क में संवाददाताओं से कहा, 'महासचिव स्पष्ट रूप से स्थिति पर बहुत बारीकी से और बहुत चिंता के साथ नजर रख रहे हैं। उन्होंने दोनों सरकारों से अपील किया है कि अधिकतम संयम बरतें। और यह सुनिश्चित करें कि स्थिति और न बिगड़े।' एक सवाल पर प्रवक्ता ने कहा कि यूएन प्रमुख गुटेरेस ने फिलहाल भारत और पाकिस्तान के नेतृत्व से इस बारे में कोई सीधा संपर्क नहीं किया है। पहलगाम आतंकी हमले

के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ दंडात्मक कूटनीतिक उपायों की घोषणा की। इसमें कहा गया कि भारत तत्काल प्रभाव से 1960 की सिंधु जल संधि को स्थगित कर रहा है। इससे तिलमिलाए पाकिस्तान ने भी कूटनीतिक कदम उठाए। भारत ने पाकिस्तान पर सीमा पार आतंकवाद का समर्थन करने का आरोप लगाया है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव के प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने कहा, 'हमारा मानना है कि पाकिस्तान और भारत के बीच कोई भी मुद्दा सार्थक पारस्परिक जुड़ाव के माध्यम से शांतिपूर्ण तरीके से हल किया जा सकता है। और ऐसा किया भी जाना चाहिए। 'भारत के सिंधु जल संधि के निलंबित किए जाने के बारे में विशेष रूप से पूछे जाने पर दुजारिक ने कहा, 'मुझे लगता है कि यह हमारे अधिकतम संयम बरतने और ऐसी कोई कार्रवाई न करने की अपील के दायरे में आएगा।

उधर, एक प्रेस ब्रीफिंग में अमेरिकी विदेश विभाग की प्रवक्ता टैमी ब्रूस ने भी दक्षिण एशिया में पनप रहे संकट पर बात की। उन्होंने कहा, 'यह तेजी से बदलती स्थिति है और हम इस पर बारीकी से नजर रख रहे हैं। हम अभी कश्मीर या जम्मू की स्थिति पर कोई रुख नहीं अपना रहे हैं। इस विषय पर उन्हें बस इतना ही कहना है।

फ्रांसः स्कूल में छात्रों पर चाकू से हमला, 1 की मौत और 3 घायल

एजेंसी

पेरिस। पश्चिमी फ्रांस के नांतेस (नांत) में एक हाई स्कूल का छात्र चाकू लेकर स्कूल में घुस गया। इसके बाद उसने कम से कम चार छात्रों पर चाकू से हमला कर दिया।बीएफएमटीवी ने विभिन्न स्रोतों के हवाले से बताया कि चाकू हमले में गंभीर चोटों के कारण एक छात्र की मौत हो गई। सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, बीएफएमटीवी ने बताया कि पुलिस के पहुंचने से पहले ही शिक्षकों ने हमलावर को रोक लिया था। हमलावर हाई स्कूल का छात्र है, जिसे हिरासत में ले लिया गया है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, युवक ने एडोल्फ हिटलर के प्रति प्रशंसा व्यक्त की थी। कई कक्षाओं में हमले करने के बाद शिक्षकों ने उसे पकड़ लिया था। इसके बाद उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया। पुलिस ने उसे हिरासत में लिया, लेकिन मनोवैज्ञानिक जांच के बाद उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। संदिग्ध ने हमलों से ठीक पहले अन्य छात्रों को एक अस्पष्ट ईमेल भेजा था। नांतेस के अभियोक्ता एंटोनी लेरॉय ने पत्रकारों को बताया, जांच करने वाले मनोचिकित्सक ने बताया कि संदिग्ध का स्वास्थ्य पुलिस हिरासत के लिए ठीक नहीं है।फ्रांस को झकझोर देने वाली नई घटना में हमलावर ने पश्चिमी शहर नांतेस के नोट्रे-डेम डे टाउट्स-आइडेस ग्रामर स्कूल में साथी छात्रों पर चाकू से हमला किया। फ्रांस के आंतरिक मामलों के मंत्री ब्रूनो रेटायो ने करीब 50 जांचकर्ताओं को जांच में लगाया है। फ्रांस के प्रधानमंत्री फ्रेंकोइस बायरू ने हमले के बाद स्कूलों के आसपास और भीतर नियंत्रण बढ़ाने का आह्वान किया है। साथ ही आगे चाकू से होने वाले हमलों को रोकने के लिए प्रस्ताव मांगे। राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने एक्स पर कहा कि हमलावर को पकड़कर शिक्षकों ने एक बड़ी दुर्घटना को होने से रोक लिया।

ब्रिटेन की संसद में पहलगाम आतंकी हमले की गूंज

एजेंसी

लंदन। ब्रिटेन की संसद में भारत के जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले की गूंज सुनाई दी। स्लॉ से सांसद तनमनजीत सिंह धेसी ने अपने भाषण में नागरिकों पर हुए आतंकी हमले पर दुख जताया। उन्होंने कहा कि वह पीड़ितों के परिवारों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले में 26 लोगों की मौत हुई है। सांसद धेसी ने अपने भाषण को एक्स पर साझा किया है। उन्होंने कहा कि हम इस सप्ताह पोप फ्रांसिस के निधन का शोक मना रहे हैं, लेकिन मैं इस सप्ताह जम्मू-कश्मीर में निर्दोष पर्यटकों पर कायरतापूर्ण, घातक, चौंकाने वाले आतंकवादी हमले से भी बहुत दुखी हूं। पीड़ितों के परिवार मेरी प्रार्थनाओं में हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि अपराधियों को जल्द ही न्याय के कटघरे में लाया जाएगा। सांसद धेसी ने इस मौके पर गाजा का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि गाजा में

इजराइली भयावहता और पीड़ा का तत्काल अंत चाहिए।

एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, हाउस ऑफ कॉमन्स की नेता लूसी पॉवेल ने भी पहलगाम हमले का जिक्र किया। उन्होंने इसे कायरतापूर्ण कृत्य बताया और कहा कि ब्रिटेन सरकार की संवेदनाएं प्रभावित लोगों के साथ हैं। इसके अलावा ब्रिटेन में भारतीय उच्चायोग ने पहलगाम हमले के पीड़ितों को याद किया। भारतीय उच्चायोग ने इंडिया हाउस में स्मृति समारोह आयोजित किया। इस अवसर पर संसदीय मामलों के राज्यमंत्री एल. मुरुगन, महाराष्ट्र के सामाजिक न्यायमंत्री संजय शिरसाट, यूके के सांसद बॉब ब्लैकमैन और

'वह पीड़ितों के परिवारों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले में 26 लोगों की मौत हुई है।'

कई विशिष्ट अतिथि मौजूद रहे। ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त विक्रम दोराईस्वामी ने इस मौके पर कहा कि पहलगाम हमला जम्मू-कश्मीर के लोगों को सामान्य दैनिक व्यवसाय करने से रोकने के लिए किया गया।

वर्जीनिया में एयरशो से पहले विमान क्रैश, पायलट रॉब हॉलैंड की मौत

हैम्पटन। वर्जीनिया के लैंगली एयर फ़ोर्स बेस पर विमान क्रैश होने से एयरोबैटिक पायलट रॉब हॉलैंड की मौत हो गई। वह इस सप्ताहांत एयरशो में हिस्सा लेने वाले थे। रॉब हॉलैंड के इंस्टाग्राम अकाउंट पर उनकी मृत्यु की पुष्टि की गई है। न्यूज के अनुसार, इंस्टाग्राम अकाउंट पोस्ट में लिखा गया, रॉब हॉलैंड विमानन इतिहास में सबसे सम्मानित और प्रेरणादायक एरोबैटिक पायलटों में से एक थे। वह विनम्र स्वभाव के व्यक्ति थे। उनका एकमात्र लक्ष्य बस कल की तुलना में और बेहतर करना था। संघीय विमानन प्रशासन के अनुसार, दुर्घटना कुछ पहले हुई। वन सीटर प्रायोगिक एमएक्स एयरक्राफ्ट एमएक्सएस उस समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया जब रॉब बेस पर उतरने का प्रयास कर रहे थे। हादसे की जांच की जा रही है। हॉलैंड को शनिवार और रविवार को बेस पर होने वाले एयर

पावर ओवर हैम्पटन रोड्स एयरशो में हिस्सा लेना था। हॉलैंड की वेबसाइट के अनुसार, वह 13 बार यूएस नेशनल एरोबैटिक चैंपियन रहे। शो के आयोजनकर्ता इंटरनेशनल एरोबैटिक क्लब के अध्यक्ष जिम बॉर्के ने बयान में कहा, रॉब को एक दोस्त, एक मार्गदर्शक, एक नेता और एक नवप्रवर्तक के रूप में याद किया जाएगा। रॉब के परिवार के दुख को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

उल्लेखनीय है कि लैंगली एयर फोर्स बेस चेसापीक खाड़ी के दक्षिण-पश्चिमी किनारे के पास स्थित है। यह प्रतिष्ठान एफ-22 रैप्टर लड़ाकू विमानों के स्क्वाड्रन का घर है। उनमें से एक ने 2023 में अटलांटिक के ऊपर एक चीनी जासूसी गुब्बारे को मार गिराया था।

लेबनान में ड्रोन विस्फोट, 8 सीरियाई शरणार्थी घायल

बेरूत/दमिश्क। पूर्वी लेबनान के होश अल-सैय्यद अली शहर के एक खेत में हुए ड्रोन विस्फोट में आठ सीरियाई शरणार्थी घायल हो गए। लेबनान की सरकारी समाचार एजेंसी (एनएनए) ने बताया कि सीरियाई सीमा के पास एक ड्रोन में विस्फोटक लगाकर उड़ा दिया गया। हादसे में घायल सभी आठ लोगों को लेबनान के पूर्वी शहर हर्मेल के अस्पतालों में ले जाया गया। एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, सीरियाई अधिकारियों ने लेबनान के हिजबुल्लाह मिलिशिया पर पश्चिमी सीरिया के होम्स प्रांत के अल-कुसायर शहर के पास सीरियाई सेना के ठिकानों पर तोपों से गोले दागने का आरोप लगाया।

पाक पत्रकार ने पहलगाम को लेकर किया सवाल तो अमेरिकी प्रवक्ता ने दिया टका सा जवाब

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिकी विदेश विभाग की प्रवक्ता टैमी ब्रूस ने एक प्रेस वार्ता के दौरान एक पाकिस्तानी पत्रकार की बोलती बंद कर दी। पत्रकार ने उनसे जम्मू एवं कश्मीर के पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा तनाव को लेकर सवाल किया था। इस पर प्रवक्ता ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने स्पष्ट किया है कि अमेरिका भारत के साथ खड़ा है और सभी प्रकार के आतंकवाद की कड़ी निंदा करता है। विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता टैमी ब्रूस ने कहा, हम इस पर कोई भी टिप्पणी नहीं करने वाले हैं, हम किसी दूसरे मुद्दे पर आपसे बात करने के लिए आएंगे। इस स्थिति पर तो कुछ नहीं बोलेंगे। राष्ट्रपति और सेकेट्री ने पहले ही काफी कुछ कह दिया है, हमारा रुख स्पष्ट है। बिना नाम लिए टैमी ब्रूस ने पाक आतंकियों के खिलाफ कड़े एक्शन की बात कर दी है। उन्होंने कहा कि अमेरिका उन लोगों के लिए प्रार्थना करता है जिन्होंने आतंकवादी हमले में अपनी जान गंवाई और घायलों के ठीक होने के लिए प्रार्थना करता है। पहलगाम में आतंकवादी हमले पर ब्रूस ने कहा, जैसा कि राष्ट्रपति ट्रंप और सचिव रूबियो ने स्पष्ट किया है, अमेरिका भारत के साथ खड़ा है, आतंकवाद के सभी कृत्यों की कड़ी निंदा करता है। हम मारे गए लोगों के जीवन के लिए प्रार्थना करते हैं और घायलों के ठीक होने के लिए प्रार्थना करते हैं और इस जघन्य कृत्य के अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाने का आह्वान करते हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को आतंकवादी हमले के पीड़ितों के प्रति संवेदना व्यक्त करने के लिए फोन किया था। पीएम मोदी ने ट्रंप को उनके समर्थन के लिए

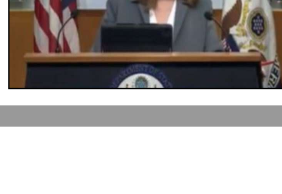

धन्यवाद दिया और कहा कि भारत इस कायरतापूर्ण और जघन्य आतंकवादी हमले के अपराधियों और समर्थकों को न्याय के कठघरे में लाने के लिए दृढ़ संकल्पित है। 22 अप्रैल को, आतंकवादियों ने दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल बैसरन, जिसे ÷मिनी स्विट्जरलैंड÷ के रूप में जाना जाता है, में 26 लोगों की हत्या कर दी थी इस आतंकी हमले के बाद पहली सार्वजनिक सभा में प्रधानमंत्री ने आतंकियों को मिट्टी में मिलाने का संकल्प लिया था। बिहार के मधुबनी में एक जनसभा को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कसम खाई कि भारत पहलगाम नरसंहार में शामिल हर आतंकवादी और उनके समर्थकों की पहचान करेगा, उनका पता लगाएगा और उन्हें दंडित करेगा। उन्होंने कहा, दोस्तों, आज बिहार की धरती से, मैं पूरी दुनिया से कहता हूं कि भारत हर आतंकवादी और उनके समर्थकों की पहचान करेगा, उनका पता लगाएगा और उन्हें सजा देगा। हम उनका पीछा दुनिया के आखिरी छोर तक करेंगे। आतंकवाद भारत का मनोबल नहीं तोड़ पाएगा। अपने पहले जवाबी हमले में, भारत ने सिंधु जल संधि को निलंबित करने और राजनयिक संबंधों को कम करने सहित पाकिस्तान के खिलाफ दंडात्मक उपायों की घोषणा की। भारत ने 27 अप्रैल से पाकिस्तानी नागरिकों को जारी सभी वीजा रद्द करने की घोषणा की और पाकिस्तान में रह रहे भारतीय नागरिकों को जल्द से जल्द स्वदेश लौटने की सलाह दी।

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

पोप फ्रांसिस के अंतिम संस्कार के दिन शनिवार को रहेगा राजकीय शोक

एजेंसी

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार ने 26 अप्रैल को कैथोलिक धर्म गुरु पोप फ्रांसिस के अंतिम संस्कार के दिन पूरे देश में राजकीय शोक मनाये जाने की घोषणा की है। केंद्रीय गृह मंत्रालय का कहना है कि राजकीय शोक के तहत 26 अप्रैल को पूरे भारत में उन सभी इमारतों पर राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा, जहां नियमित रूप से राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। इस दिन आधिकारिक तौर पर मनोरंजन का कोई कार्यक्रम नहीं होगा।सरकार ने पोप फ्रांसिस के निधन पर सम्मान स्वरूप तीन दिवसीय राजकीय शोक की घोषणा की थी। उनके निधन के अगले दो दिन 22 और 23 अप्रैल को राजकीय शोक मनाया गया। वहीं 26 अप्रैल को उनके अंतिम संस्कार के दिन अंतिम दिन का शोक रहेगा। उल्लेखनीय है कि पोप फ्रांसिस का 21 अप्रैल को वेटिकन सिटी के डोमस सैंक्टे मार्थे में निधन हो गया था। वह 88 वर्ष के थे। 26 अप्रैल को पोप फ्रांसिस को रोम में सांता मारिया मैगीगोर के बेसिलिका में दफनाया जाएगा।

पाकिस्तानी हिंदू शरणार्थियों पर नहीं लागू होगा वीजा प्रतिबंधः विदेश मंत्रालय

नई दिल्ली। भारत सरकार द्वारा हाल ही में पाकिस्तानी नागरिकों के लिए वीजा सेवाएं रद्द किए जाने के फैसले को अधिक स्पष्ट करते हुए विदेश मंत्रालय ने कहा कि यह प्रतिबंध भारत में रह रहे हिंदू शरणार्थियों पर लागू नहीं होगा। मंत्रालय की ओर से जारी आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया है कि 'भारत सरकार द्वारा दिनांक 24 अप्रैल 2025 को लिए गए वीजा रद्द करने के निर्णय का स्पष्ट उल्लेख यह है कि यह प्रतिबंध उन पाकिस्तानी हिंदू नागरिकों पर लागू नहीं होता जिन्हें पहले से वैध दीर्घकालिक वीजा (एलटीवी) जारी किया गया है।' सरकार की ओर से यह भी कहा गया है कि एलटीवी धारकों के अधिकारों की रक्षा के लिए सभी संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश दे दिए गए हैं, जिससे कि उनके निवास, शिक्षा और चिकित्सा से जुड़े कार्यों में कोई बाधा न आए। उल्लेखनीय है कि जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के साथ बढ़ते राजनयिक तनाव के मद्देनजर भारत ने 24 अप्रैल को पाकिस्तानी नागरिकों के लिए नई वीजा सेवाएं अस्थायी रूप से निलंबित कर दी थीं। इस निर्णय के बाद यह चिंता सामने आई थी कि कहीं इसका प्रभाव उन हिंदू शरणार्थियों पर न पड़े, जो पहले से ही भारत में शांति और सुरक्षा की तलाश में बसे हुए हैं। ऐसे में विदेश मंत्रालय की यह सफाई अब इन समुदायों के लिए राहत का संकेत मानी जा रही है।

कांग्रेस की संविधान बचाओ रैली की तैयारी, 26 अप्रैल को बैठक

नई दिल्ली। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिका अर्जुन खड़गे के नेतृत्व में 28 अप्रैल को जयपुर में संविधान बचाओ रैली का आयोजन किया जाएगा। इस रैली को सफल बनाने के लिए जिला कांग्रेस ने 26 अप्रैल को सुबह 10:30 बजे श्याम सरोवर में एक अति आवश्यक बैठक आयोजित करने का निर्णय लिया है। बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष श्रीरामजीलाल ओढ़ करेंगे, और इस दौरान प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी इंद्राज गुर्जर, सांसद, पूर्व मंत्री, पूर्व विधायक, पूर्व जिला प्रमुख, वर्तमान जिला प्रमुख सहित कांग्रेस के सभी अग्रिम संगठनों के अध्यक्ष, पदाधिकारी और कार्यकारिणी के सदस्य भी मौजूद रहेंगे। इसके अलावा, नगर अध्यक्ष, ब्लॉक अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष, इकाई अध्यक्ष, सभापति, प्रधान, महिला कांग्रेस और उनके कार्यकारिणी के सदस्य और कांग्रेस कार्यकर्ता भी बैठक में शामिल होंगे। बैठक का उद्देश्य रैली की तैयारियों की समीक्षा करना और सभी कार्यकर्ताओं को रैली के सफल आयोजन में योगदान देने के लिए प्रेरित करना है।

फिजियोथेरेपी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए नीट अनिवार्य

बंगलूरू, 25 अप्रैल। कर्नाटक के चिकित्सा शिक्षा एवं कौशल विकास मंत्री शरण प्रकाश पाटिल ने शुक्रवार को घोषणा की कि फिजियोथेरेपी पाठ्यक्रमों में प्रवेश अब नीट के दायरे में आएगा, जो मानकीकृत चिकित्सा शिक्षा की दिशा में राष्ट्रीय कदम के अनुरूप है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कहा कि योग्यता-आधारित शिक्षा और गहन नैदानिक अनुभव को सक्षम करने के लिए पाठ्यक्रम की अवधि को पांच वर्ष तक बढ़ा दिया गया है। बंगलूरू में फिजियोथेरेपी पर आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, कर्नाटक फिजियोकॉन-25 के उद्घाटन पर बोलते हुए, मंत्री पाटिल ने नीट के दायरे में फिजियोथेरेपी पाठ्यक्रम में प्रवेश को शामिल करने के लिए राज्य सरकार के समर्थन को व्यक्त किया। एक बयान में उनके हवाले से कहा गया, हम नीट के तहत फिजियोथेरेपी पाठ्यक्रमों के एकीकरण का स्वागत करते हैं, जो शैक्षणिक गुणवत्ता और पेशेवर मानकों को बढ़ाएगा। इस कार्यक्रम में 10,000 से अधिक छात्रों को संबोधित करते हुए, मंत्री पाटिल ने स्वास्थ्य सेवा स्पेक्ट्रम में फिजियोथेरेपिस्टों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला - प्रसव से लेकर बुजुर्गों की देखभाल तक। उन्होंने कहा, फिजियोथेरेपिस्ट आज न्यूरो और आर्थोपेडिक रिहैब, कार्डियोपल्मोनरी केयर, पीडियाट्रिक्स, विकलांगता सहायता, खेल चिकित्सा, फिटनेस और समुदाय-आधारित देखभाल में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उन्होंने प्रशिक्षित पेशेवरों की बढ़ती घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय मांग को पूरा करने के लिए अधिक सरकारी कॉलेजों में फिजियोथेरेपी पाठ्यक्रम शुरू करने की राज्य की योजनाओं के बारे में भी विस्तार से बताया। इस दौरान कार्यक्रम में मौजूद, राष्ट्रीय संबद्ध और स्वास्थ्य पेशेवरों के आयोग की अध्यक्ष यज्ञ शुक्ला ने कहा कि आयोग फिजियोथेरेपी शिक्षा में एक राष्ट्र, एक पाठ्यक्रम पहल शुरू करने की योजना बना रहा है।

पहलगाम हमलाः पाकिस्तान से रिश्ते लगभग समाप्त, सिंधु जल समझौता निलंबित

एजेंसी

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का फैसला लिया है। सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीएस) ने सिंधु जल संधि को निलंबित करने, पाकिस्तान के नागरिकों के लिए सार्क वीजा जारी करने पर रोक लगाने और अटारी-वाघा सीमा को बंद करने का निर्णय लिया है। साथ ही पाकिस्तान के उच्चायोग को सीमित करने का भी निर्णय लिया है। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का निर्णय लिया है। हमले में 25 भारतीयों और एक नेपाली नागरिक की मौत हुई थी। सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति की आज शाम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में बैठक हुई। सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने हमले की कड़ी निंदा की और पीड़ितों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। विदेश सचिव ने

कहा कि इस हमले के बाद, विश्वभर से कई सरकारों ने भारत के प्रति समर्थन और एकजुटता व्यक्त की है, जो आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस की भावना दर्शाती है। बैठक में इस आतंकी हमले के पाकिस्तानी संबंधों की जानकारी दी गई। विदेश मंत्रालय के सचिव विक्रम मिस्री ने पत्रकार वार्ता में सीसीएस के निर्णयों की जानकारी दी। इसके अनुसार, सिंधु जल संधि को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाएगा, जब तक पाकिस्तान क्रॉस-बॉर्डर आतंकवाद का समर्थन छोड़ने की विश्वसनीय और स्थायी प्रतिबद्धता नहीं करता। अटारी चेक पोस्ट को तुरंत बंद किया जाएगा, जो लोग वैध अनुमोदनों के साथ पार कर चुके हैं, उन्हें 01 मई 2025 से पहले लौटने का अवसर दिया जाएगा। पाकिस्तानी नागरिकों को सार्क वीजा छूट योजना के तहत भारत आने की अनुमति नहीं होगी। पहले जारी किए गए वीजा रद्द कर दिए गए हैं और वर्तमान में भारत में मौजूद पाकिस्तानी नागरिकों को 48 घंटे के भीतर देश छोड़ना होगा। पाकिस्तानी उच्चायोग में रक्षा, नौसेना और वायु सलाहकारों को पर्सोना नॉन ग्राटा घोषित किया गया है। इन्हें एक सप्ताह के भीतर भारत छोड़ने का आदेश दिया गया है। भारत भी इस्लामाबाद में अपने रक्षा/नौसेना/वायु सलाहकारों को वापस बुलाएगा। इसके अलावा, उच्चायोगों की कुल संख्या को वर्तमान 55 से घटाकर 30 किया जाएगा, जो 01 मई 2025 तक प्रभावी होगा। सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने सुरक्षा स्थिति की समीक्षा की और सभी बलों को उच्च सतर्कता बनाए रखने का निर्देश दिया। यह सुनिश्चित किया गया कि हमले के अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाया जाएगा और उनके प्रायोजकों को भी जवाबदेह ठहराया जाएगा। भारत आतंकवादियों के खिलाफ अपनी कार्रवाई को जारी रखेगा।

राष्ट्रपति से मिले गृहमंत्री और विदेश मंत्री, पहलगाम हमले पर दिया अपडेट

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से मुलाकात की। दोनों मंत्रियों ने राष्ट्रपति को पहलगाम हमले और देश की सुरक्षा स्थिति की जानकारी दी। राष्ट्रपति भवन ने राष्ट्रपति मुर्मु से दोनों नेताओं की मुलाकात की तस्वीरें जारी की हैं। इस बीच, भारतीय विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने पहलगाम हमले के बारे में विभिन्न देशों के राजदूतों को जानकारी दी। इस बैठक में जर्मनी, जापान, पोलैंड, यूनाइटेड किंगडम और रूस सहित कई देशों के राजदूत शामिल हुए।

विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि राजदूतों और उच्चायुक्तों को हमले की स्थिति, उसके पीछे के कारण और भारत की सुरक्षा रणनीति के बारे में बताया गया। सूत्रों के अनुसार ब्रीफिंग भारत के साथ सुरक्षा और आतंकवाद के मुद्दों पर सहयोग बढ़ाने में रुचि रखने वाले देशों के लिए थी।

अमेरिका के उपराष्ट्रपति वेंस को दी भावभीनी विदाई

एजेंसी

नई दिल्सी। संयुक्त राज्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेम्स डेविड वेंस गुरुवार प्रातः अपनी जयपुर यात्रा पूर्ण कर स्वदेश रवाना हुए। इस अवसर पर जयपुर एयरपोर्ट पर उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ एवं मुख्य सचिव सुधांश पंत ने उन्हें भावभीनी विदाई दी।

जयपुर से प्रस्थान इस यात्रा का अंतिम चरण था, जिसमें वेंस परिवार ने प्रमुख विरासत स्थलों का भ्रमण किया और भारतीय नेताओं के साथ बातचीत की। एक दिन पहले उन्होंने आगरा में प्रतिष्ठित ताजमहल का दौरा किया था। वेंस 21 अप्रैल को चार दिन की भारत यात्रा पर पहुंचे थे। उनके साथ उनकी पत्नी उषा और तीनों बच्चों इवान, विवेक और मिराबेल भी भारत आए थे। दिल्ली में लैंड होने के बाद वेंस ने अक्षरधाम मंदिर में दर्शन किए। इसके बाद शाम को पीएम मोदी से मुलाकात की। वेंस सोमवार रात को ही दिल्ली से जयपुर के लिए रवाना हो गए थे। इसके बाद

उन्होंने मंगलवार को जयपुर में आमेर का किला देखा। अमेरिकी उपराष्ट्रपति ने आगरा के ताजमहल का दौरा किया। इसके बाद वापस जयपुर लौटें, जहां से वे वॉशिंगटन के लिए रवाना हुए। तय शेड्यूल के मुताबिक उन्हें जयपुर के सिटी पैलेस का दौरा करना था, लेकिन यह दौरा रद्द कर दिया गया है। दौरा रद्द करने का कोई कारण नहीं बताया गया है, लेकिन माना जा रहा है कि पहलगाम आतंकी हमले की वजह से यह फैसला किया गया।

वीजा रद्द, जल्द से जल्द पाकिस्तान लौटें पाकिस्तानीः भारत

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत ने सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीएस) की बैठक में लिए गए निर्णयों के बाद आज कहा कि देश में रह रहे सभी पाकिस्तानियों का वीजा 27 अप्रैल और मेडिकल वीजा 29 अप्रैल तक ही वैध रहेगा। यहां मौजूद सभी पाकिस्तानी नागरिकों को अब जल्द से जल्द भारत छोड़ देना चाहिए। वहीं पाकिस्तान में रह रहे भारतीयों को जल्द से जल्द स्वदेश लौटने को कहा गया है।

विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि पहलगाम आतंकी हमले के मद्देनजर सीसीएस द्वारा लिए गए निर्णयों के क्रम में भारत सरकार ने पाकिस्तानी नागरिकों को तत्काल प्रभाव से वीजा सेवाएं निलंबित करने का निर्णय लिया है। भारत द्वारा पाकिस्तानी नागरिकों को जारी किए गए सभी मौजूदा वैध वीजा 27 अप्रैल से रद्द कर दिए गए हैं। पाकिस्तानी नागरिकों को जारी किए गए मेडिकल वीजा केवल 29 अप्रैल

तक वैध रहेंगे। भारत में मौजूद सभी पाकिस्तानी नागरिकों को अब संशोधित वीजा की अवधि समाप्त होने से पहले भारत छोड़ देना चाहिए। विदेश मंत्रालय ने भारतीय नागरिकों को पाकिस्तान की यात्रा करने से बचने की सख्त सलाह दी है। साथ ही वर्तमान में पाकिस्तान में मौजूद भारतीय नागरिकों को भी जल्द से जल्द भारत लौटने की सलाह दी है।

विश्व नेताओं ने प्रधानमंत्री मोदी को फोन कर जताई भारत के साथ एकजुटता

एजेंसी

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर में हुए भीषण आतंकी हमले के बाद अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने एक स्वर में आतंकवाद के खिलाफ कड़ा रुख दिखाया है। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से फोन पर बातचीत की और आतंकवाद के खिलाफ मजबूती से भारत के साथ खड़े होने का संकल्प दोहराया। जार्डन के किंग और जापान के प्रधानमंत्री ने शोक व्यक्त किया है। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने भारत के लोगों और पीड़ित परिवारों के साथ एकजुटता व्यक्त की। उन्होंने भारतीय धरती पर हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने हमले की कड़ी निंदा की और भारतीयों के साथ पूर्ण समर्थन और एकजुटता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि इस तरह की बर्बरता पूरी तरह से अस्वीकार्य है। इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने इस हमले की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में उनके देश का पूर्ण समर्थन व्यक्त किया। जापान के प्रधानमंत्री शिगेरु इशिबा ने फोन पर प्रधानमंत्री मोदी से जम्मू-कश्मीर में हुए है कि आतंक के हर रूप की निंदा की जानी चाहिए

NAME CHANGE
I, SHARAD S/O SUBHASH ADVANSHI residing at M.C.D FLAT-3/69, SECTOR-4, ROHINI, DELHI-110085. Have changed my name to SHARAD AADVANSHI for all future purpose

NAME CHANGE
I, PRABHJEET SINGH ALAG S/O MANJEET SINGH residing at 20B/66B TILAK NAGAR DELHI-110018 . have changed my name to PRABHJEET SINGH for all future purpose

NAME CHANGE
I, hitherto known as VIJENDER Alias VIJAY INDER S/O KARAN SINGH R/O D-56, GROUND FLOOR NAWADA HOUSING COMPLEX, UTTAM NAGAR, WEST DELHI-110059 have changed my name and shall hereafter be known as VIJENDER SINGH.

NAME CHANGE
I SAGAR ANAND S/O NARINDER KUMAR ANAND R/O B-1074 FIRST FLOOR GREEN FIELDS COLONY AMARNAGAR FARIDABAD HARYANA 121003 HAVE CHANGED MY NAME TO SAGAR LAL ANAND FOR ALL FUTURE PURPOSE

NAME CHANGE
I, Manoj Garg son of Shri Rajpal Garg resident of RZ-112-113, Santosh Park, Uttam Nagar, New Delhi-110059 have changed my son's name as from VASHU GARG to VASU GARG for all future purposes.

सार्वजनिक सूचना
मै अंजलि अग्रवाल, गोल्फ लिनक्स पोस्ट ऑफिस की एजेंट, मेरे असली एजेंसी के कागजात एन बी सी सी प्लेस लोधी रोड दिल्ली से खो गए है, जो कि [Directorate of small savings & lotteries] के द्वारा जारी किए गए थे.
*एजेंसी = एस ऐ एस एजेंसी कोड=एस एस/769
*एजेंसी = एस एस/ एम बी ए/629
कृपया किसी को मिले तो नीचे लिखे नंबर पर सूचित करें. 9873129381

NAME CHANGE
I, SHASHEE KUMARI Daughter of No. 3003321L Rank-HAV Name-SHEESH RAM Presently residing at VILL-SEOPURA, PO-SHAHPURA, TEHSIL-BAYANA, DISTT-BHARATPUR, RAJASTHAN-321401, have changed my name from SHASHEE KUMARI to SHASHI KUMARI for all future purposes vide Affidavit dated 25/04/2025 before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, SHARAD SHARMA S/O DAU DAYAL R/O H.No- 1/1, Shiv Hanuman Mandir, Near Safdarjung Mardasa, Arvindo Marg, Lodhi Road, H.O, South Delhi, Delhi- 110003, declare that name of my minor daughter has been wrongly written as TANISHIKA SHARMA in my minor daughter namely TANISHKA SHARMA, aged 14 years in her School Record. The actual Name of my minor daughter is TANISHKA SHARMA, respectively, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, JAGMOHAN SINGH ALAG S/O JASBIR SINGH ALAG residing at H-1/113 VIKAS PURI DELHI-110018 . have changed my name to JAGMOHAN SINGH for all future purpose

NAME CHANGE
I, KEWAL KRISHAN BAJAJ S/O JAGDISH LAL residing 9/80 GEETA COLONY DELHI-110031 . have changed my name to KEWAL BAJAJ for all future purpose

सार्वजनिक सूचना
हमारे मुवक्किल तिलक सिंह यादव पुत्र स्व. श्री फूल सिंह यादव निवासी बी-600, अमन विहार, दिल्ली-86 ने अपने पुत्र दीपक एवम पत्नी श्रीमती सोनिया यादव के गलत चाल चलन, व्यवहार एवम असंसदीय, गैर कानूनी भाषा के कारण समस्त चल अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है एवंम मिलना जुलना, आना जाना तथा समस्त सबंध भी विच्छेद कर लिए है। भविष्य मे उपरोक्त अपने किसी भी कत्य के लिए स्वय ही जिम्मेदार होगे, हमारे मुवक्किल का उनके किसी भी कार्य के लिए कोई जिम्मेदारी नही होगी

प्रतिमा रानी एडवोकेट
डां. ए पी सिंह एण्ड कं
एडवोकेट
एफ.ए-329, मानसरोवर गार्डन
महात्मा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-15

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, Pradeep Sharma S/o Harish Chand Sharma R/O H.NO-108 GALI NO-2 Neb Sarai New Delhi-110068, declare that name of mine and my father has been wrongly written as Pradip Kumar sharma and H.C Sharma in my L.L.B Marksheet and name of my father has been wrongly written as Harish Chandra Sharma in my 10th and 12th class Educational documents. That actual name of mine and my father are Pradeep sharma and Harish Chand Sharma respectively, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I VIVEK GUPTA S/O RAJINDER PARSAD GUPTA R/O Plot No- 24B, Block No- L3, Near Raghubir Singh Modern School, Uttam Nagar, PO-D.K Mohan Garden, Dist- West Delhi, Delhi -110059, declare that name of my father has been wrongly written as RAJENDER PRASAD GUPTA in my 12th Class and Graduation Educational documents and name of my father has been wrongly written as RAJINDER PRASAD GUPTA in my Post Graduation Diploma in Business Management documents. That actual name of my my father is RAJINDER PARSAD GUPTA respectively, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
NOTICE is hereby given to public at large that my client **Mr. Ashish Rana** is purchasing the Fourth Floor, LHS, with roof rights, area admeasuring 800 Sq. Ft., built upon Plot No. 11, comprised in Khasra No. 632/2/1, 632/2/2 & 632/2/3, situated in the Village Chhattarpur, Hauz Khas, New Delhi-110074; from Mr. Naresh Kumar Prop. of M/s. Jai Hind Developers & Builders who is the owner of the said property vide GPA, ATS & Will dated 19.12.2022 registered as Document No.1861,at Sub-Registrar-V(I), New Delhi and Intend to mortgage the said property with **Aditya Birla Housing Finance Ltd.** If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.

Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Ph. No: 011-49774545

सार्वजनिक सूचना
सर्वसाधारण को यह सूचित किया जाता है कि राजनीतिक दल प्रजा धर्म पार्टी (दल का नाम) के नाम से रजिस्ट्रीकृत होना प्रस्तावित है जिसका कार्यालय H.No 54-5-130, गुंडलसिंगाराम, जिला-हनमकोंडा, तेलंगाना, पिन-506009 पर स्थित है। इस दल ने लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 29क के अधीन राजनीतिक दल के रूप में रजिस्ट्रीकरण के लिए भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली को आवेदन प्रस्तुत किया है। पार्टी के पदाधिकारियों के नाम/पता नीचे दिए गए हैं।
अध्यक्ष : वेणु एसमपेल्ली, निवासी- 54-5-130, एससी कॉलोनी, गुंडला सिंगाराम हनमकोंडा, वारंगल अर्बन, 506009
महासचिवः सचिव-रमा देवी इस्मपेल्ली, निवासी-54-5-130, एससी कॉलोनी, गुंडला सिंगाराम हनमकोंडा, वारंगल अर्बन, 506009
कोषाध्यक्षः वेनेला एसमपेल्ली, निवासी- 3-13/2, गुंडला सिंगाराम गुंडला सिंगाराम, हनमकोंडा वारंगल अर्बन, 506009
यदि किसी को प्रजा धर्म पार्टी (प्रस्तावित पार्टी का नाम) के रजिस्ट्रीकरण में कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति और इसके कारण सहित सचिव (राजनीतिक दल), भारत निर्वाचन आयोग, निर्वाचन सदन, अशोक रोड़, नई दिल्ली-110001 को, इस सूचना के प्रकाशन के 30 दिनों के भीतर भेजें।

PEGASUS LAND AND HOUSING PRIVATE LIMITED
Corp. Off.: ROF Group, Building No. 80, First Floor, Sector-44, Gurgaon-122003, Ph. 0124-4399399

Notice is hereby given to the Public at large that the following booking of residential apartments in the Affordable Housing Project **"ROF ATULYAS"** being developed by **M/s Pegasus Land and Housing Pvt. Ltd.** situated at **Sector 93,** Gurugram, Haryana vide **License no. 19 of 2020 dated 01.08.2020** has been cancelled due to non –payment of installments or allotment amount by successful allottee (s) of their apartments till its due date or any other reason, the information/reminders of which has been given them according to terms of the Haryana Affordable Housing Policy 2013, dated 19/8/2013 (as amended).

Application No.	Carpet & Balcony Area (Sq. Ft.)	Apartment No.
1168	2 BHK+S.ROOM TYPE-2 (641.426+123.25)	T4-1308
52696	2 BHK, TYPE-2 (468.556+155.00)	T7-303
52649	2 BHK, TYPE-1 (502.571+171.58)	T7-1001

Therefore, all the person/allottee (s) are hereby informed to submit claims/objections in writing, if any, for the cancellation of the said apartments to the undersigned company/developer along with the relevant documents to support their claims/ objections within 7 days from the date of publication hereof.
In the absence of any claim within the stipulated period above, it shall be presumed and/or deemed that the allottee (s) or concern has no such claims/objections by virtue of this notice and, if any, the same have been waived or abandoned without any reference to such claims/objections made thereafter and necessary action will be taken as per rules for the process of re-allotment.

For Pegasus Land and Housing Pvt. Ltd.
Place: Gurugram (Haryana) Director

NAME CHANGE
I, OMWATI Wife of No. 3003321L Rank-HAV Name-SHEESH RAM Presently residing at VILL-SEOPURA, PO-SHAHPURA, TEHSIL-BAYANA, DISTT-BHARATPUR, RAJASTHAN-321401, have changed my name from OMWATI to OMVATI for all future purposes vide Affidavit dated 25/04/2025 before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE
This is to inform the general public that **Mr. Surender Kumar & Mrs. Indu Devi** are the owners of Apartment no.C-1402, on 14th floor, area measuring 4590 sq. ft., i.e., 426.425 sq. mtrs., in block-I-2, tower-C, on group housing project Cosmos Golden Heights built on plot no.06, situated at Crossings Republik Tm village Dundahera Tehsil & Distt. Ghaziabad U.P. through Sale Certificate dated 05.02.2024 as doc. No. 1327 executed by Punjab National Bank in favour of Mr. Surender Kumar & Mrs. Indu Devi in respect of said flat.
Mr. Surender Kumar & Mrs. Indu Devi are in the process of mortgaging the said property with **SMFG India Credit Co. Ltd. (Formerly Fullerton India Credit Co. Ltd.).** Any objections or concerns regarding this transaction should be raised within a period of 07 days from the date of this public notice. Any objections submitted after the completion of this 07-day period will not be considered binding with respect to the said property or the interests of our client.
If anyone wishes to raise an objection, please do so within the stipulated 07-days period by contacting
Law Veritas: North (Advocates & Legal Consultants) at Office No. 11, 1st Floor, Building No. A-44/A, Sector-16, Noida, Uttar Pradesh-201301;
Landline(s): +910120-3101683,
E-mail: accounts@lvnorth.in

सार्वजनिक सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्री सतीश कुमार पुत्र श्री रामप्रीत प्रसाद सिंह, श्रीमती स्वेता से बुराड़ी गाँव, संत नगर, बुराड़ी, दिल्ली - 110084 में स्थित बालाजी अपार्टमेंट में खसरा संख्या 784/1 में से भूमि के प्लॉट पर निर्मित 67 वर्ग गज क्षेत्रफल वाले बिना छत के अधिकार वाले आवासीय प्राइवेट फ्लैट संख्या सी-1 को खरीदना चाहते हैं। श्रीमती स्वेता ने उक्त संपत्ति श्रीमती राजेंद्र प्रसाद से 08.05.2008 को एक बिक्री विलेख के माध्यम से खरीदी थी। कृपया ध्यान दें कि दस्तावेजों की श्रृंखला में मूल बिक्री विलेख शामिल है, जिसे 20.03.2007 को सब रजिस्ट्रार-I, दिल्ली के कार्यालय में पुस्तक संख्या I, खंड संख्या 2142 के पृष्ठ 134-138 पर दस्तावेज़ संख्या 1238 के रूप में पंजीकृत किया गया था खोए हुए दस्तावेजों के बारे में ऑनलाइन एफआईआर एलआर संख्या- 2785391/2025 दिनांक 25.04.2025, पी.एस- क्राइम ब्रांच, दिल्ली पर दर्ज की गई थी। संपत्ति का वित्तपोषण जीआईसी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड शाखा यूजीएफ-10 ए-ई, कंचनजंगा बिल्डिंग, बाराखंबा रोड, नई दिल्ली द्वारा किया जाना है। यदि कोई व्यक्ति उपरोक्त संपत्ति के कब्जे में पाया जाता है या किसी प्रकार की आपत्ति है, तो कृपया इस नोटिस की तारीख से 07 दिन के भीतर मूल संपत्ति दस्तावेज के साथ नीचे दिए गए पते पर संपर्क करें। ऐसा न करने पर, उपरोक्त बिक्री पत्र के अनुसार दावा विषय संपत्ति के संबंध में शून्य और अमान्य माना जाएगा।

[ASHWANI KUMAR] Advocate
Chamber No. 122,
Tehsil Compound, Ghaziabad, U.P.

NAME CHANGE
I hitherto known as SAVITHA KRISHNAN alias SAVITHA K K daughter of NARAYANAN NAIR, and wife of M. RADHAKRISHNAN, permanent R/o Meyasseri, Vakayad, Nanduvannur via, Avitanallur, P.O. Vakayad Dist. Kozhikode, Kerala-673614, and currently residing at Qtr. No. 208, Police Line, Vikas Puri, Tilak Nagar, West Delhi, Delhi-110018, have changed my name and shall hereafter be known as SAVITHA K K, for all future purposes.

PUBLIC NOTICE
Public at large is hereby informed that my clients. Smt. Sangeeta, W/o Late Sh. Sunil Kumar, and Sh. Naveen, S/o Late Sh. Sunil Kumar, both the resident of H.No.-285, Nawada Bazar, Najafgarh, South West, Delhi, Delhi-110043 have severed all their relations with Pankaj (S/o Smt. Sangeeta and Brother of Sh. Naveen), and they have disowned him from all their moveable and immovable properties, as he is not under control of my above said clients. Any person dealing with the above named Pankaj, shall be doing so at his/her/their own risks and responsibilities and my clients shall not be responsible for their act(s), deed(s) and misdeed(s).

ARJUN SHARMA ADVOCATE
CH. NO. 837, DWARKA COURTS,
SEC-10, NEW DELHI-110075

PUBLIC NOTICE
Information is given to general public at large that our client Mrs. Munni Devi W/o Mr. Lokesh is the owner of Freehold Residential Plot No. 24 & 25, Area Measuring 106.76 Sw. Yds., i.e. 89.262 Sq. Mtrs, out of Khasra No. 2994, Situated at Balaji Vihar, Village Shahpur Bemheta, Pargana Dasna, Tehsil & District Ghaziabad, U.P. by virtue of Sale Deed dated 27.11.2013 As Doc no. 10225, Book no.1, Vol no. 11599, Pages- 53-92, SRO- I, Ghaziabad., in the chain Documents below mentioned documents not available i.e. Original Sale Deed dated 20.01.2006 executed by Mr. Jaageshwar S/o Mr. Shadiram in favour of Mrs. Renu Verma W/o Mr. Sakal Dev Verma (As Doc no. 529, Book no.1, Vol no. 6417, Pages- 61-76, SRO- I, Ghaziabad) & Original Sale Deed dated 24.10.2008 executed by Mrs. Renu Verma W/o Mr. Sakal Dev Verma in favour of Mr. Vivek Kumar S/o Mr. Ramveer Singh (As Doc no. 5842, Book no.1, Vol no. 7621, Pages- 49-74, SRO- I, Ghaziabad). now our client is declaring that that any other Person does not have any right over the said property, and same property sold too be Mr. Ranjeet and same has been finance by ICICI Home Finance Co. Ltd. Branch: Noida Uttar Pradesh. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained

[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

अवैध कॉलोनियों में ना करें कोई निर्माण, विभाग द्वारा की जाएगी कार्रवाई: डीटीपी सतीश कुमार

एजेंसी

करनाल। जिला नगर योजनाकार सतीश कुमार ने बताया कि गत दिवस असंध में 4 अवैध कॉलोनियों के विरूद्ध तोडफ़ोड़ की कार्रवाई की गई। उन्होंने बताया कि असंध में सफीदों रोड पर खाटू श्याम मंदिर के नजदीक लगभग 4 एकड़ में स्थित अवैध कॉलोनी में सभी कच्ची सडक़ों व 2 डी.पी.सी. को तोड़ा गया। इसी प्रकार से मलिकपुर रोड पर लगभग 8.5 एकड़ में फैली अवैध कॉलोनी में सभी कच्ची सड़कों, 3 डी.पी.सी., सीवर नैटवर्क व 2 दुकानों के विरूद्ध तोडफ़ोड़ की कार्रवाई की गई। इसके अतिरिक्त 3 दुकानों को सील किया गया। उन्होंने बताया कि असंध बाई पास पर बस स्टैण्ड के पीछे गीता कॉलोनी के साथ लगभग 3 एकड़ में स्थित एक अवैध कॉलोनी में 3 निर्माणाधीन मकान, 5 डी.पी.सी., सीवर नेटवर्क व सभी कच्ची सड़कों को ध्वस्त किया गया। इसी प्रकार करनाल-असंध रोड पर यश होटल के नजदीक लगभग 2.5 एकड़ में स्थित एक अवैध कॉलोनी में 2 डी.पी.सी. व सभी पक्की सडक़ों के विरूद्ध तोडफ़ोड़ की कार्रवाई की गई। उन्होंने बताया इस अवैध कॉलोनी में विभाग द्वारा पांचवी बार तोडफ़ोड़ की कार्रवाई की गई है। कार्रवाई के दौरान जिला नगर योजनाकार व कार्यालय की टीम, ड्यूटी मजिस्ट्रेट व थाना असंध की पुलिस फोर्स उपस्थित रहे।जिला नगर योजनाकार ने लोगों से अपील की कि कोई भी व्यक्ति अवैध कॉलोनी में कोई निर्माण नहीं करें अन्यथा कार्यालय द्वारा तोडफ़ोड़ की कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि अवैध कॉलोनियों व अवैध निर्माणों के विरुद्ध किसी प्रकार की कोताही नहीं बरती जाएगी व तोडफ़ोड़ की कार्यवाही जारी रहेगी तथा दोषियों के विरुद्ध मुकदमे दर्ज करवाये जायेंगे।

तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी के चलते आग हुई जवान

नारनौल। तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी के चलते आग वर्तमान में पूरी जवान हो चुकी है। ऐसे मौसम में होने वाली आग लगी की घटनाओं पर जागरूकता से ही पाया जा सकता है। गर्मी के मौसम में अक्सर फसल अथवा पशु चारे के साथ-साथ ईंधन में आग लगने की घटनाएं सामने आती रहती हैं, जिससे किसानों को आर्थिक समस्या का सामना तो करना पड़ता ही है साथ ही वह मानसिक रूप से भी काफी परेशान हो जाते है। फसल कटाई के दौरान आगलगी जैसी कोई अप्रिय घटना ना घटे इसके लिए किसानों को बेहद जागरूक रहने की दरकार है। अप्रैल का महीने में ही तापमान मई जून जैसा होता जा रहा है, वहीं हवा की वजह से आग लगने की घटनाएं भी बढ़ी है। हालांकि जिला प्रशासन ने जागरूकता अभियान के तहत लोगों को जागरूक तो किया है, लेकिन फिर भी किसानों को इन बातों का ध्यान रखना जरूरी हैं। इस मौसम में यदि खुले में आग जलाते हैं तो उसे बुझाना ना भूलें, क्योंकि कई बार हवा या घास फूस के माध्यम से आग फसल तक पहुंच जाती है। वहीं, रास्ते में चलने वाले राहगीर ध्यान रखें, यदि आप सिगरेट या बीड़ी के जलते टुकड़े इधर उधर ना फेंकें। साथ ही यह भी सुनिश्चित कर लें कि ये टुकड़े पूरी तरह बुझ चुके हैं, और जहां फेंक रहे हैं, वहां फसल तो नहीं है। खेत की मेड़ एवं आसपास की जगह को साफ रखें, जिससे आग पकड़ने का डर नहीं रहे।

पहलगाम आतंकी हमला मानवता के विरुद्ध जघन्य अपराध : गोयल

जींद। अखिल भारतीय अग्रवाल समाज हरियाणा के अध्यक्ष एवं प्रमुख समाजसेवी डॉ. राजकुमार गोयल ने जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए इसे मानवता के विरुद्ध जघन्य अपराध बताया है। गोयल ने कहा कि यह हमला न केवल निर्दोष नागरिकों पर किया गया कायराना कृत्य है बल्कि यह देश की एकता, अखंडता और सामाजिक सौहार्द्र को चोट पहुँचाने का भी षड्यंत्र है। उन्होंने स्पष्ट किया कि ऐसे आतंकी हमले हमें कमजोर नहीं कर सकते बल्कि हमें आतंकवाद के खिलाफ और अधिक दृढ़ बना देते हैं। उन्होंने कहा कि इस हमले में जिन निर्दोष नागरिकों ने अपने प्राण गंवाए उनके प्रति वे अपनी गहरी संवेदनाएं प्रकट करते हैं और साथ ही घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करते है।

समाधान शिविर के माध्यम से हो रहा है नागरिकों की शिकायतों का त्वरित निपटान : एडीसी

जींद। लघु सचिवालय स्थित सभागार में आयोजित समाधान शिविर के दौरान अतिरिक्त उपायुक्त विवेक आर्य ने नागरिकों की विभिन्न शिकायतें सुनीं और मौके पर ही संबंधित अधिकारियों को त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि हरियाणा सरकार की पहल पर अब प्रत्येक सोमवार और समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं, ताकि आमजन की समस्याओं का एक ही स्थान पर शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जा सके। आयोजित शिविर में कुल 7 शिकायतें प्राप्त हुईं। गांव रधाना से रघुवीर ने बिजली संबंधी समस्या रखी, जबकि गांव राजपुरा निवासी देवेंद्र ने अपनी फैमिली आईडी में सुधार की मांग की।

मंत्री अनिल विज ने विदेश भेजने के नाम पर ठगी की शिकायतों पर लिया कड़ा संज्ञान, डीएसपी को सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए

कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने वीरवार अपने आवास पर अम्बाला छावनी विधानसभा क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को सुना

एजेंसी

अम्बाला। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री श्री अनिल विज ने आज अपने आवास पर अम्बाला छावनी विधानसभा क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को सुना और उनके निवारण के लिए संबंधित अधिकारियों को कार्रवाई के दिशा-निर्देश दिए।

विदेश भेजने के नाम पर ठगी के अलग-अलग मामलों में कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने पुलिस को सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए। अशोक नगर निवासी व्यक्ति ने शिकायत देते हुए मंत्री अनिल विज को बताया कि उस मतिदास नगर निवासी एक एजेंट ने उसे झांसा दिया कि वह उसके बेटे को विदेश में भेज देगा।

बेटे को स्लोवाकिया भेजने के लिए उसने ढाई लाख रुपए दिए थे। मगर कुछ समय बाद एजेंट ने यह राशि उसे वापस लौटाते हुए कहा कि स्लोवाकिया का वीजा नहीं लग रहा वह दूसरे देश में उसके बेटे को भेज देंगे और उसे ढाई लाख रुपए वापस कर दिए। इसके बाद एजेंट ने उसके बेटे को कैनेडा भेजने के नाम पर 15 लाख रुपए लिए मगर आज तक

उसके बेटे को कैनेडा भेजा नहीं किया न ही राशि वापस लौटाई गई। कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने मौके पर मौजूद डीएसपी कैंट को मामले में सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए। इसी प्रकार कैंट थाना क्षेत्र निवासी व्यक्ति ने बताया कि एजेंट ने उस विदेश जाने के लिए उसके साथ 25 लाख रुपए की ठगी की। इस मामले में वह कार्रवाई बार एजेंट से मिला मगर उसकी राशि वापस नहीं की गई। इस मामले में मंत्री अनिल विज ने डीएसपी को कार्रवाई के निर्देश दिए।

ऊर्जा मंत्री अनिल विज ने बिजली से संबंधित शिकायतों के जल्द समाधान के निर्देश दिए

ऊर्जा मंत्री अनिल विज के समक्ष बिजली के संबंधित कई समस्याएं आई जिनपर उन्होंने मौके पर मौजूद अधिकारियों को कार्रवाई को कहा। राजिंद्र नगर निवासियों ने क्षेत्र में तारों को कसने व बिजली पोल लगाने की शिकायत दी। इसी प्रकार बाबा बालक नाथ मंदिर के निकट रहने वाली महिला ने बिजली विभाग पर उसका मीटर जबरन उतारने की शिकायत दी। अमन नगर निवासी व्यक्ति ने उसके मीटर रीडिंग में गड़बड़ी होने व मीटर जांच की मांग करी। इसके अलावा बिजली से संबंधित अन्य शिकायतें भी आई।

ऊर्जा व परिवहन मंत्री अनिल विज को महेशनगर निवासी महिला ने शिकायत देते हुए बताया कि उसके पति ने उसके साथ मारपीट करते हुए उसे घर से निकाल दिया है। इसी तरह सदर क्षेत्र निवासी व्यक्ति ने शटरिंग के सामान व पैसों के लेनदेन को लेकर व्यक्ति से विवाद की शिकायत दी, राजेंद्र नगर निवासियों ने क्षेत्र में नया ट्यूबवेल लगाने की शिकायत दी जिसपर मंत्री अनिल विज ने जन स्वास्थ्य विभाग के एक्सईएन को कार्रवाई के निर्देश दिए।

राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने नौसेना अधिकारी लेफ्टिनेंट विनय नरवाल के परिवार से की बात

पहलगाम आतंकी हमला मानवता के खिलाफ सबसे जघन्य अपराध- बंडारू दत्तात्रेय

एजेंसी

चण्डीगढ़। हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने नौसेना अधिकारी लेफ्टिनेंट विनय नरवाल के शोक संतप्त परिवार के सदस्यों से बात की। विनय देश के वीर सपूत थे, जिन्होंने पहलगाम में हुए आतंकी हमले में अपनी जान गंवा दी। राज्यपाल ने शोकाकुल परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त की और एक साहसी युवा अधिकारी के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया।

श्री बंडारू दत्तात्रेय ने पहलगाम आतंकी हमले को मानवता के खिलाफ सबसे जघन्य अपराध बताते हुए इस क्रूर कृत्य की कड़ी निंदा की और कहा कि इस तरह के कायरतापूर्ण हमले कभी भी भारतीय नागरिकों, सशस्त्र बलों या राष्ट्र की भावना के संकल्प को हिला नहीं पाएंगे। राज्यपाल ने कहा कि एक बहादुर और युवा नौसेना अधिकारी लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की क्षति को कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। उन्होंने परिवार के सदस्यों से कहा कि हरियाणा और पूरा देश इस दुख की घड़ी में आपके साथ खड़ा है। घृणित आतंकी हमले के पीड़ितों के प्रति

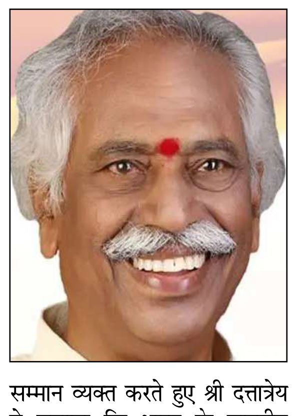

सम्मान व्यक्त करते हुए श्री दत्तात्रेय ने बताया कि भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ से अपनी आत्मकथा 'जनता की कहानी मेरी आत्मकथा' के विमोचन समारोह को स्थगित करने का अनुरोध किया था, जो मूल रूप से 24 अप्रैल को उपराष्ट्रपति भवन में होना था। जिसे देर रात स्थगित कर दिया गया।

निहत्थे और निर्दोष पर्यटकों को निशाना बनाना आतंकियों की कायर्ता को दर्शाता है- कैप्टन अभिमन्यु

एजेंसी

चण्डीगढ़। जम्मू-कश्मीर के प्रमुख पर्यटन स्थल पहलगाम में हाल ही में हुए कायरतापूर्ण आतंकी हमले को लेकर वरिष्ठ नेता कैप्टन अभिमन्यु ने गहरा दुख और आक्रोश प्रकट किया है। उन्होंने इस जघन्य हमले को मानवता पर कलंक बताया और स्पष्ट कहा कि इसका माक़ूल जवाब जरूर दिया जाएगा।

'कश्मीर घाटी जैसे शांतिपूर्ण और खूबसूरत स्थल पर निहत्थे और निर्दोष पर्यटकों को निशाना बनाना आतंकियों की कायर्ता को दर्शाता है। ये हमला केवल पर्यटकों पर नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत, पर्यटन और भारत की आत्मा पर किया गया है। देश इसे कभी माफ नहीं करेगा।'उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और गृहमंत्री श्री अमित शाह जी, इस नृशंस हमले का 140 करोड़ भारतवासियों की भावनाओं के अनुरूप जवाब देंगे। 'ये नया भारत है, जवाब जरूर मिलेगा – निर्णायक, सटीक और ऐसा जो दुश्मनों को संदेश देगा कि भारत के धैर्य की परीक्षा लेना कितना महँगा पड़ता है।

कैप्टन अभिमन्यु ने कहा कि वह

समय दूर नहीं जब क्षेत्र में फिर से शांति और खुशहाली लौटेगी। 'पहलगाम की वादियाँ फिर से गूंजेंगी, पर इस बार आतंक की नहीं, शांति, प्रेम और न्याय की गूंज होगी।उन्होंने पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि पूरा देश उनके साथ खड़ा है।

सहकारिता क्षेत्र अगले पांच साल में एक खरब डॉलर का योगदान देगा : कृष्णपाल गुर्जर

एजेंसी

अम्बाला। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री श्री अनिल विज ने आज अपने आवास पर अम्बाला छावनी विधानसभा क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को सुना और उनके निवारण के लिए संबंधित अधिकारियों को कार्रवाई के दिशा-निर्देश दिए। विदेश भेजने के नाम पर ठगी के अलग-अलग मामलों में कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने पुलिस को सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए। अशोक नगर निवासी व्यक्ति ने शिकायत देते हुए मंत्री अनिल विज को बताया कि उस मतिदास नगर निवासी एक एजेंट ने उसे झांसा दिया कि वह उसके बेटे को विदेश में भेज देगा। बेटे को स्लोवाकिया भेजने के लिए उसने ढाई लाख रुपए दिए थे। मगर कुछ समय बाद एजेंट ने यह राशि उसे वापस लौटाते हुए कहा कि स्लोवाकिया का वीजा नहीं लग रहा वह दूसरे देश में उसके बेटे को भेज देंगे और उसे ढाई लाख रुपए वापस कर दिए। इसके बाद एजेंट ने उसके बेटे को कैनेडा भेजने के नाम पर 15 लाख रुपए लिए मगर आज तक

उसके बेटे को कैनेडा भेजा नहीं किया न ही राशि वापस लौटाई गई। कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने मौके पर मौजूद डीएसपी कैंट को मामले में सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए। इसी प्रकार कैंट थाना क्षेत्र निवासी व्यक्ति ने बताया कि एजेंट ने उस विदेश जाने के लिए उसके साथ 25 लाख रुपए की ठगी की। इस मामले में वह कार्रवाई बार एजेंट से मिला मगर उसकी राशि वापस नहीं की गई। इस मामले में मंत्री अनिल विज ने डीएसपी को कार्रवाई के निर्देश दिए।

ऊर्जा मंत्री अनिल विज ने बिजली से संबंधित शिकायतों के जल्द समाधान के निर्देश दिए

ऊर्जा मंत्री अनिल विज के समक्ष बिजली के संबंधित कई समस्याएं आई जिनपर उन्होंने मौके पर मौजूद अधिकारियों को कार्रवाई को कहा। राजिंद्र नगर निवासियों ने क्षेत्र में तारों को कसने व बिजली पोल लगाने की शिकायत दी। इसी प्रकार बाबा बालक नाथ मंदिर के निकट रहने वाली महिला ने बिजली विभाग पर उसका मीटर जबरन उतारने की शिकायत दी। अमन नगर निवासी व्यक्ति ने उसके मीटर रीडिंग में गड़बड़ी होने व मीटर जांच की मांग करी। इसके अलावा बिजली से संबंधित अन्य शिकायतें भी आई।

ऊर्जा व परिवहन मंत्री अनिल विज को महेशनगर निवासी महिला ने शिकायत देते हुए बताया कि उसके पति ने उसके साथ मारपीट करते हुए उसे घर से निकाल दिया है। इसी तरह सदर क्षेत्र निवासी व्यक्ति ने शटरिंग के सामान व पैसों के लेनदेन को लेकर व्यक्ति से विवाद की शिकायत दी, राजेंद्र नगर निवासियों ने क्षेत्र में नया ट्यूबवेल लगाने की शिकायत दी जिसपर मंत्री अनिल विज ने जन स्वास्थ्य विभाग के एक्सईएन को कार्रवाई के निर्देश दिए।

जिले में अवैध माइनिंग करने वालों के खिलाफ होगी कड़ी कार्रवाई डीसी मीणा ने दिए सख्त आदेश

एजेंसी

नूंह।उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने कहा कि जिला में अवैध माइनिंग की गतिविधियों में शामिल लोगों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जा रही है। 1 जनवरी 2025 से मार्च 2025 तक अवैध खनन करते हुए पकड़े जाने पर 40 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है और 30 वाहनों को जब्त किया गया है। अवैध माइनिंग करने वाले लोगों और वाहनों के ओवरलोडिंग के चालान कर अब तक 160611 रुपए राशि

का जुर्माना लगाया गया है। उपायुक्त अवैध खनन मामलों को रोकने के लिए गठित जिला स्तरीय टास्क फोर्स कमेटी की अध्यक्षता करते हुए यह जानकारी दी। उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिला में अवैध माइनिंग की गतिविधियों पर पूर्ण रूप से रोक सुनिश्चित की जाए। इसके लिए खनन, वन, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पुलिस विभाग तथा इनफोर्समेंट ब्यूरो की टीमें आपसी तालमेल से कार्य करें तथा दोषियों लोगों के खिलाफ त्वरित कार्यवाही की जाए। कोई भी व्यक्ति अवैध खनन जैसी गतिविधियों में संलिप्त पाया जाता है तो उनके खिलाफ तुरंत मामला दर्ज कर कानूनी कार्यवाही की जाए। उन्होंने बैठक में जिला में अवैध खनन पर स्थिति रिपोर्ट, जब्त किए वाहनों व उन पर लगाए गए जुर्माने का विवरण, ओवरलोड वाहनों पर अब तक की गई कार्रवाई के मामलों की समीक्षा की। बैठक में एसडीएम नूंह अश्वनी कुमार, एसडीएम पुन्हाना कंवर आदित्य सिंह, खनन विभाग के अधिकारी तथा इनफोर्समेंट ब्यूरो से एसएचओ सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

नूंह के नवनियुक्त पुलिस कप्तान राजेश कुमार ने संभाला कार्यभार

अपराध व अपराधियों पर पूर्णतया अंकुश लगाने के साथ-साथ आमजन को न्याय दिलाना होगी प्राथमिकता : राजेश कुमार

एजेंसी

नूंह। नूंह जिले के नवनियुक्त पुलिस कप्तान राजेश कुमार आईपीएस ने बुधवार को देर सायं नूंह पहुंच का कार्यभार संभाल लिया है। जिला पुलिस कार्यालय नूंह पहुंचने पर उप-पुलिस अधीक्षक फिरोजपुर झिरका अजायब सिंह ने फूलों का गुलदस्ता भेंट कर पुलिस अधीक्षक नूंह का स्वागत किया । पुलिस अधीक्षक नूंह राजेश कुमार भारतीय पुलिस सेवा हरियाणा कैडर के 2014 बैच के अधिकारी है। एसपी राजेश कुमार आमजन के कार्यों के लिये समर्पित पुलिस अधिकारी के तौर पर जाने जाते हैं और अपराधियों के लिए सिरदर्द बने रहते हैं । इनकी प्राथमिकता हमेशा शांति एवं कानून व्यवस्था बनाये रखना, क्राइम कंट्रोल के साथ-साथ अपराधियों के खिलाफ सख्ती से कार्रवाई करना तथा आमजन की समस्यायों का

अविलम्ब निपटारा व समाधान करने की रही है। जोखिम व चुनोतिपूर्ण कार्यों में उन्होंने हमेशा सफलता पाई है । एसपी राजेश कुमार हरियाणा के रेवाडी एवं फतेहाबाद जिलों सहित एंटी करप्शन ब्यूरों में बतौर पुलिस अधीक्षक कार्यरत रह चुके हैं । अपनी नियुक्ति के दौरान संबंधित क्षेत्र में कानून व्यवस्था को सुचारू एवं शांति पूर्वक बनाए रखने एवं अपराध / अपराधियों पर लगाम लगाने में इनकी अहम भूमिका रही है।

कार्यभार ग्रहण करने उपरांत नव-नियुक्त पुलिस कप्तान राजेश कुमार ने कहा कि जिला नूंह में अपराधियों पर लगाम लगाने के लिये पहले से ही कार्य किया जा रहा हैं फिर भी और मजबूती के साथ अंकुश लगाने का कार्य करेंगे । इसके अतिरिक्त जिले में नशा उन्मूलन, सड़क दुर्घटनाओं को रोकने, साइबर अपराध नियंत्रण सहित सभी तरह के अपराधों पर रोक लगाने में उनकी प्राथमिकता रहेगी । नशीले पदार्थो व साइबर क्राइम पर अंकुश लगाने के लिए हर संभव प्रयास किये जायेंगे और पुलिस द्वारा नशीले पदार्थों का व्यापार करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी । साथ ही अपराधियों को सूचना और पनाह देने वालों के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई की जायेगी और उनकी सूचना देने वाले का नाम गुप्त रखा जाएगा ।

जिला में बेहतर कानून व्यवस्था एवं शांति बनाए रखने में आमजन के सहयोग की अपेक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि स्थानीय पुलिस आमजन की सेवा, सुरक्षा एवं सहयोग के लिए हमेशा तत्पर रहेगी । उन्होंने कहा कि थाना एवं कार्यालय में आने वाले किसी भी आगंतुक / शिकायतकर्ता से सभ्य तरीके से पेश आए । भ्रष्टाचार किसी भी सूरत में बर्दाशत नहीं होगा ।

परिवार पहचान पत्र में पारिवारिक रिश्तों में शुद्धिकरण के लिए सरकार को लिखा जाएगा : धीरेंद्र खडग़टा

एजेंसी

रोहतक । उपायुक्त धीरेंद्र खडग़टा ने कहा कि परिवार पहचान पत्र में पारिवारिक रिश्ता के शुद्धिकरण के बारे में सरकार को पत्र लिखा जाएगा ताकि परिवार पहचान पत्र में दर्ज गलत पारिवारिक रिश्तों को ठीक किया जा सके। धीरेंद्र खडग़टा स्थानीय लघु सचिवालय स्थित सभागार में अतिरिक्त उपायुक्त नरेंद्र कुमार, नगर निगम के संयुक्त आयुक्त भूपेंद्र सिंह के साथ समाधान शिविर में नागरिकों की शिकायतें सुन रहे थे। धीरेंद्र खडग़टा ने स्थानीय अमृत कॉलोनी निवासियों की पेयजल कनेक्शन से संबंधित शिकायत की सुनवाई करते हुए जनस्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे पुलिस सहायता लेकर पेयजल पाइप लाइन में तुरंत कनैक्शन करवाए ताकि इस एरिया के लोगों को पेयजल की आपूर्ति हो सके। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार नागरिकों की शिकायतों के निपटारे के लिए प्रति सप्ताह सोमवार व वीरवार को सुबह 10 से 12 बजे तक समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे है। उन्होंने समाधान शिविर में शिकायतों की सुनवाई करते हुए संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे शिविर में प्राप्त शिकायतों का यथाशीघ्र निपटारा सुनिश्चित करें।

प्रत्येक शुक्रवार को सरकार द्वारा समाधान शिविरों की शिकायतों के निपटारे की वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम समीक्षा की जाती है। उन्होंने समचाना निवासी की सडक़ पर किए गए अनाधिकृत निर्माण को हटाने की शिकायत की सुनवाई करते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे पुलिस बल के साथ अनाधिकृत निर्माण को शीघ्र हटाए। उपायुक्त धीरेंद्र खडग़टा ने जसिया गांव के निवासियों की जसिया-सांघी मार्ग पर बनाए गए नाले के विस्तार से संबंधित शिकायत की सुनवाई करते हुए कहा कि संबंधित विभाग द्वारा नाले का विस्तार करवाया जाएगा ताकि जल निकासी में सुविधा हो सके। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत द्वारा गंदे पानी की निकासी के लिए बनाए गए नाले की नियमित रूप से सफाई करवाई जाए। उन्होंने सनसिटी निवासी की प्लॉट एरिया में शुद्धिकरण से संबंधित शिकायत की सुनवाई करते हुए जिला नगर योजनाकार को निर्देश दिए कि वे इस संदर्भ में आवश्यक कार्रवाई करवाए। उन्होंने वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन, परिवार पहचान पत्र में आय कम करने, सरप्लस भूमि इत्यादि से संबंधित शिकायतों की सुनवाई करते हुए संबंधित अधिकारियों को शिकायतों के निपटारे बारे निर्देश दिए।

छीनाझपटी के मामले में आरोपी को 5 वर्ष की कैद

गुरुग्राम। छीनाझपटी के मामले की सुनवाई करते हुए जिला एवं सत्र न्यायाधीश संदीप चौहान की अदालत ने आरोपी को पुख्ता सबूतों व गवाहों के आधार पर दोषी करार देते हुए 5 वर्ष की कैद व जुर्माने की सजा सुनाई है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि वर्ष 2023 की 7 जनवरी को एक व्यक्ति ने थाना पालम विहार में शिकायत दी कि सेक्टर-22 से बाइक पर आए व्यक्तियों ने उसका मोबाइल फोन छीन लिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी निखिल का काबू कर लिया। गुरुग्राम पुलिस द्वारा आरोपी को गिरफ्तार करने उपरांत मामले की तफ्तीश बहुत ही गहनता से की गई। पुलिस ने इस मामले में आरोपी के खिलाफ सभी आवश्यक साक्ष्य व गवाह एकत्रित करके अदालत में पेश किए गए तथा उपरोक्त आरोपी के खिलाफ अदालत में चार्जशीट दाखिल की गई। अदालत ने पुलिस द्वारा आरोपी के खिलाफ दिए गए साक्ष्यों व गवाहों के आधार पर आरोपी को दोषी करार दिया गया।

डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने सबको एक समान अधिकार देने का काम किया : रवनीत सिंह बिट्टू

एजेंसी

अंबाला। केन्द्रीय राज्यमंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने कहा कि भारत रत्न डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने सबको एक समान अधिकार देने का काम किया हैं और आज उनकी ही देन है कि हमसब एक हैं। उन द्वारा बनाए गए संविधान की सराहना दुनिया में होती हैं। केन्द्रीय राज्यमंत्री रवनीत सिंह बिट्टू अम्बाला शहर में अम्ब कमल कार्यालय में आयोजित डॉ. भीम राव अम्बेडकर जिला गोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे थे और यह अभिव्यक्ति उन्होंने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहीं। इस मौके पर वशिष्ठ अतिथि के तौर पर पूर्व राज्यमंत्री असीम गोयल नन्यौला भी उपस्थित रहें। सिख समाज की ओर से, भाजपा जिला अध्यक्ष व अन्य पदाधिकारियों द्वारा मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि को पुष्पगुच्छ व शॉल भेंटकर उनका अभिनंदन किया गया। केन्द्रीय राज्यमंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने इस मौके पर जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुई घटना को निंदनीय बताते हुए दो मिनट का मौन रखकर जो शहीद हुए है उन्हें अपने श्रद्धासुमन भी अर्पित किए। उन्होंने कहा कि आतंकियों ने ऐसा कायराना काम किया है, जिनको दुनिया में कहीं भी जगह नहीं मिलेगी। उन्होंने इस अवसर पर यह भी कहा कि उनके स्वर्गीय दादा सरदार बेअंत सिंह ही केवल देश को आगे ले जाने में नहीं थे बल्कि उनके साथ-साथ बीजेपी व आरएसएस के अलावा जिन लोगों ने देश के लिए सोचा है उन्होंने देश को आगे ले जाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं।

विक्रम सोलर को महाराष्ट्र से 150 मेगावाट सौर मॉड्यूल की आपूर्ति का ऑर्डर

एजेंसी

कोलकाता। भारत के सबसे बड़े और सबसे विश्वसनीय सौर पीवी मॉड्यूल निर्माताओं में से एक, विक्रम सोलर लिमिटेड को महाराष्ट्र सरकार की पहल, महाराष्ट्र स्टेट पावर जनरेशन कंपनी लिमिटेड (महाजेनको) से एक बड़ा ऑर्डर मिला है। कंपनी ने घोषणा की है कि, उसे महाजेनको की 150 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा परियोजना के लिए सौर मॉड्यूल की आपूर्ति का एक महत्वपूर्ण ऑर्डर मिला है। यह रणनीतिक ऑर्डर कंपनी के परियोजना पोर्टफोलियो में उच्च क्षमता वाले सौर मॉड्यूल भी शामील हो गये है। यह ऑर्डर भारत की अनुमोदित मॉडल और निर्माता सूची (एएलएमएम) में अग्रणी कंपनियों में से एक के रूप में कोलकाता मुख्यालय वाली विक्रम सोलर की स्थिति को और मजबूत करता है। कंपनी 150 मेगावाट क्षमता वाले उन्नत एन-टाइप मॉड्यूल की आपूर्ति करेगी। ये मॉड्यूल अपने उच्च प्रदर्शन और ऊर्जा उत्पादन के लिए जाने जाते हैं। ये मॉड्यूल मुख्यमंत्री सौर कृषि वाहिनी योजना (एमएसकेवीवाई) परियोजना 2.0 के तहत महाराष्ट्र राज्य के जलगांव और सोलापुर जिलों में महाजेनको परियोजनाओं को प्रदान किए जाएंगे। साथ ही, इस ऑर्डर के तहत वित्तीय वर्ष 2025-26 में यह मॉड्यूल वितरित किए जाएंगे। इस परियोजना के कार्यान्वयन से महाराष्ट्र की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता बढ़ेगी। यह भी आशा है कि, इससे कार्बन उत्सर्जन को कम करने तथा पर्यावरणीय स्थिरता को और बढ़ाने में मदद मिलेगी। विक्रम सोलर के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री ज्ञानेश चौधरी ने कहा, हमें यह ऑर्डर पाकर बहुत गर्व है।

क्रेडिफिन लिमिटेड ने 213.6 करोड़ रुपये की पूंजी जुटाई: गुप्ता

जालंधर। अचल संपत्ति के बदले बंधक ऋण (संपत्ति के बदले ऋण या एलएपी) और ई-वाहनों, मुख्य रूप से ई-रिक्शा, ई-लोडर और ईवी , दुपहिया वाहन को वित्तपोषण प्रदान करने वाली गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनी क्रेडिफिन लिमिटेड (पहले पीएचएफ लीजिंग लिमिटेड) ने इक्विटी और ऋण के रूप में 213.6 करोड़ रुपये की पूंजी जुटाई है। क्रेडिफिन लिमिटेड के सीईओ शल्य गुप्ता ने यहां बताया कि कंपनी भारत के मेट्रोपॉलिटन स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध, एनबीएफसी है। इसका मुख्यालय जालंधर और इसका कॉर्पोरेट कार्यालय दिल्ली-एनसीआर में है। उन्होने कहा कि कंपनी ने इक्विटी और ऋण के रूप में 2.49 करोड़ अमेरिकी डॉलर (213.6 करोड़ रुपये) की पूंजी जुटाई है। इसमें लगभग 6.7 प्रतिशत इक्विटी और 93.3 प्रतिशत ऋण शामिल है। इस पैसे का इस्तेमाल कंपनी द्वारा अपने परिचालन वाले क्षेत्रों में देखी जा रही जोरदार वृद्धि को निधि देने के लिए किया जाएगा। श्री गुप्ता ने कहा कि क्रेडिफिन ने पिछले चार वर्षों में प्रभावशाली वृद्धि दर्ज करते हुए विकास की गति को तेज कर दिया है। यह मौजूदा कार्यालयों को मजबूत कर रहा है, तेजी से नए भौगोलिक क्षेत्र खोल रहा है और पारंपरिक ऋण चैनलों से पीछे छूट गए लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए उत्पाद पेश कर रहा है। क्रेडिफिन लिमिटेड देश के वित्तीय समावेशन के दृष्टिकोण के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध है और श्रृंखला में निचले खंड को व्यवहार्य वित्तीय समाधान प्रदान करने के लिए अथक प्रयास कर रहा है और ऐसे व्यवहार्य वित्तीय समाधान लेकर आ रहा है जो प्रभाव डालते हैं।

ग्रीनलाइन ने बेकार्ट के साथ मिलकर शुरू की ग्रीन लॉजिस्टिक्स की नई पहल

मुंबई। देश में हरित लॉजिस्टिक्स को बढ़ावा देने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए एस्सार समूह की इकाई ग्रीनलाइन मोबिलिटी सॉल्यूशंस लिमिटेड ने टायर सुदृढ़ीकरण तकनीकों में वैश्विक अग्रणी कंपनी बेकार्ट के लिए एलएनजी (लिक्विफाइड नैचुरल गैस) संचालित ट्रकों के एक बेड़े को हरी झंडी दिखाई। कंपनी ने बयान जारी कर बताया कि यह पहल पुणे के समीप स्थित बेकार्ट के रंजनगांव संयंत्र में शुरू की गई है। यह पायलट परियोजना बेकार्ट के लॉजिस्टिक्स संचालन को डीकार्बोनाइज करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जो भारत सरकार की गैस-आधारित अर्थव्यवस्था के विज़न के साथ भी मेल खाता है। ग्रीनलाइन के मुताबिक, प्रत्येक एलएनजी ट्रक से सालाना 24 टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में कमी आने की संभावना है। इससे बेकार्ट के उस लक्ष्य को मजबूती मिलेगी, जिसमें वह 2050 तक कार्बन नेट-ज़ीरो बनने और अपनी 65 प्रतिशत बिक्री स्थायी समाधानों से प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर है। ग्रीनलाइन मोबिलिटी सॉल्यूशंस लिमिटेड के सीईओ आनंद मिमानी ने कहा, बेकार्ट के साथ हमारी यह साझेदारी दूरदर्शी कॉरपोरेट्स की पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

डीएस ग्रुप का अगले पांच साल में 20 हजार करोड़ राजस्व का लक्ष्य

नयी दिल्ली। एफएमसीजी समूह और बहुव्यवसायी कॉर्पोरेशन धर्मपाल सत्यपाल ग्रुप (डीएस ग्रुप) ने वित्त वर्ष 2024-25 में 10 हजार करोड़ रुपए का के राजस्व हासिल करते हुए अगले चार से पांच वर्षों में इसको दोगुना करने का लक्ष्य तय किया है। कंपनी ने यहां जारी बयान में कहा कि 10 हजार करोड़ रुपए के राजस्व के साथ ही यह भारत की शीर्ष 15 एफएमसीजी कंपनियों में शामिल हो गया है। इस उपलब्धि में सबसे बड़ा योगदान खाद्य एवं पेय सेगमेंट का रहा, जो कुल राजस्व का 42 प्रतिशत है। इसके बाद माउथ फ्रेशनर सेगमेंट 38 प्रतिशत, हॉस्पिटैलिटी 3 प्रतिशत और अन्य व्यवसायों का संयुक्त योगदान रहा, जिसमें तंबाकू सेगमेंट का हिस्सा 10 प्रतिशत से भी कम है।

2024 की अक्षय तृतीया से अभी तक सोने में हुआ 35 प्रतिशत का फायदा

एजेंसी

नई दिल्ली। इस साल 30 अप्रैल को अक्षय तृतीया है। हिंदू धर्मावलंबी आमतौर पर सोने-चांदी की खरीदारी के लिए धनतेरस के अलावा इस दिन को भी काफी शुभ मानते हैं। पिछले 1 साल के दौरान सोने के भाव में आई तेजी के कारण ठीक अक्षय तृतीया के दिन ही सोना में निवेश करने वाले निवेशकों को अभी तक करीब 35 प्रतिशत का मुनाफा हो चुका है। ऐसे में अब लोग इस बात का अनुमान लगाने में जुटे हैं कि इस साल अक्षय तृतीया के दिन सोने में किए गए निवेश का अगले साल अक्षय तृतीया के दिन क्या असर होगा। पिछले साल 10 मई को अक्षय तृतीया थी। उस दिन घरेलू सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 73 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिका था। वहीं इस साल अक्षय तृतीया से 5 दिन पहले आज 24 कैरेट सोना 98,330 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर पहुंचा हुआ है। तीन दिन पहले ही 24 कैरेट सोना का

भाव कुछ देर के लिए 1 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर तक भी पहुंचा था। इस तरह पिछले साल अक्षय तृतीया के दिन 10 मई को सोना में निवेश करने वाले निवेशकों को अभी तक 34.25 प्रतिशत से अधिक का फायदा हो चुका है। माना जा रहा है कि 5 दिन बाद अक्षय तृतीया के दिन घरेलू सर्राफा बाजार में सोने की मांग बढ़ने के कारण इसकी कीमत में और भी तेजी का रुख बन सकता है। हालांकि सोने की चाल अगले 1 साल के दौरान कैसी रहेगी, इसको लेकर मार्केट एक्सपर्ट्स एक मत नहीं हैं। जानकारों का कहना है कि अगर टैरिफ वॉर को लेकर दुनिया भर में बनी असमंजस की स्थिति जल्द खत्म नहीं हुई, तो आने वाले दिनों में घरेलू सर्राफा बाजार में सोना 1,35,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर को भी पार कर सकता है। दूसरी ओर, अगर वैश्विक अर्थव्यवस्था में जारी उतार-चढ़ाव पर काबू पा लिया गया और टैरिफ को लेकर विवाद शांत हो गया, तो सोने की कीमत में बड़ा करेक्शन भी आ सकता है। इस करेक्शन के कारण सोना 75 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर तक गिर भी सकता है। कैपेक्स गोल्ड एंड इन्वेस्टमेंट्स के सीईओ राजीव दत्ता का कहना है कि पिछले 1 साल के दौरान वैश्विक स्तर पर बढ़ी महंगाई, दुनिया के कई देशों के केंद्रीय बैंकों द्वारा की गई सोने की खरीदारी और दुनिया के कई देशों के बीच जारी तनाव की वजह से निवेशकों ने सेफ इन्वेस्टमेंट के रूप में सोने में निवेश करना ज्यादा पसंद किया। इसी वजह से पिछले 1 साल की अवधि में सोने की कीमत में लगभग 35 प्रतिशत तक का उछाल आ गया।

मुकेश अंबानी ने पहलगाम हमले में घायलों के मुफ्त इलाज की पेशकश की

एजेंसी

नई दिल्ली। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) के चेयरमैन मुकेश अंबानी ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आंतकी हमले के घायल लोगों के लिए रिलायंस फाउंडेशन अस्पताल में मुफ्त इलाज की पेशकश की है। इस हमले में 26 लोग मारे गए थे। पहलगाम आतंकी हमले पर मुकेश अंबानी ने पीड़ितों के परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए बर्बर आतंकी हमले में निर्दोष भारतीयों की मौत पर रिलायंस परिवार के सभी सदस्यों के साथ शोक व्यक्त करता हूं। हम हमले में घायल हुए सभी लोगों के शीघ्र और पूर्ण स्वस्थ होने की कामना करते हैं। अंबानी ने कहा कि मुंबई में हमारा रिलायंस फाउंडेशन सर एचएन अस्पताल पहलगाम आतंकी हमले में सभी घायलों को मुफ्त इलाज मुहैया कराएगा। रिलायंस परिवार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भारत सरकार और पूरे देश के साथ पूरी तरह से खड़ा है। आतंकवाद मानवता का दुश्मन है। इसे किसी भी तरह से किसी भी व्यक्ति द्वारा समर्थन नहीं दिया जाना चाहिए।

एलआईसी ने पहलगाम आतंकी हमले के पीड़ितों के लिए रियायतों का किया ऐलान

एजेंसी

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की बीमा कंपनी भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) ने पहलगाम की सुंदर बैसरन घाटी में हुई निर्दोष लोगों की दुखद मृत्यु पर गहरा दुख व्यक्त किया है। एलआईसी ने मृतक व्यक्तियों के लिए मृत्यु दावों के निपटान में तेजी लाने के लिए विशेष विंडो की घोषणा की है।

एलआईसी ने पीड़ितों के मृत्यु दावे को जल्द से जल्द निपटाने के लिए विशेष रियायतों की घोषणा भी की है। मृत व्यक्तियों के आश्रितों को वित्तीय राहत प्रदान करने और दावों के निपटान में तेजी लाई जाएगी। एलआईसी ऑफ इंडिया के मुख्य कार्यपालक अधिकारी सीईओ और एमडी सिद्धार्थ मोहंती ने कहा कि एलआईसी ऑफ इंडिया इस दुख की घड़ी में पीड़ित परिवार के साथ मजबूती से खड़ा है। सिद्धार्थ मोहंती ने एलआईसी पॉलिसियों के दावेदारों की कठिनाइयों को कम करने के लिए कई रियायतों की घोषणा की। उन्होंने कहा कि मृत्यु प्रमाण पत्र के बदले केंद्र या राज्य सरकार द्वारा भुगतान किया गया

कोई भी मुआवजा मृत्यु के प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाएगा। एलआईसी ने कहा कि नॉमिनी को पता होना चाहिए कि मृत्यु दावा दायर करने की प्रक्रिया पूरी तरह से ऑफलाइन है। होम ब्रांच से संपर्क करने से पहले मृत्यु दावा दायर करने के लिए सभी आवश्यक दस्तावेज़ अपने पास रख लेने चाहिए, जहां से पॉलिसी जारी की गई थी। बीमा कंपनी ने कहा कि यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास किए जाएंगे कि प्रभावित परिवारों के दावों का शीघ्रता से निपटान किया जाए। आगे की सहायता के लिए दावेदार निकटतम एलआईसी शाखा/मंडल/ग्राहक क्षेत्रों से संपर्क कर सकते हैं।

डॉलर के मुकाबले 17 पैसे की मजबूती के साथ बंद हुआ रुपया

एजेंसी

नई दिल्ली। डॉलर इंडेक्स की कमजोरी और मुद्रा बाजार में डॉलर की आवक जारी रहने के कारण आज रुपया डॉलर की तुलना में 17 पैसे की मजबूती के साथ 85.26 (अस्थायी) के स्तर पर बंद हुआ। इसके पहले पिछले कारोबारी दिन बुधवार को भारतीय मुद्रा 85.43 रुपये प्रति डॉलर के स्तर पर बंद हुई थी। रुपये ने आज के कारोबार की शुरुआत कमजोरी के साथ की थी। पूरे दिन उतार चढ़ाव का सामना करने के बाद रुपये ने न केवल निचले स्तर से रिकवरी की, बल्कि डॉलर की तुलना में मजबूत स्थिति में पहुंच कर बंद हुआ।

भारतीय मुद्रा ने आज सुबह डॉलर के मुकाबले 15 पैसे की कमजोरी के साथ 85.58 रुपये के स्तर से कारोबार की शुरुआत की थी। दिन के कारोबार के दौरान डॉलर की मांग बढ़ने पर रुपया 24 पैसे फिसल कर 85.67 के स्तर तक भी आ गया था, लेकिन इसके बाद डॉलर की आवक बढ़ने पर रुपया 19 पैसा मजबूत होकर 85.24 के स्तर तक

पहुंच गया। हालांकि बाद में शेयर बाजार में विदेशी निवेशकों की बिकवाली के कारण बढ़ी डॉलर की मांग के कारण रुपया ऊपरी स्तर से थोड़ा गिर कर 85.26 के स्तर पर बंद हुआ। भारतीय मुद्रा रुपये ने डॉलर के साथ ही ज्यादातर दूसरी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के मुकाबले भी मजबूती दिखाई। आज के कारोबार के बाद ब्रिटिश पौंड (जीबीपी) की तुलना में रुपया 36 पैसे की मजबूती के साथ 113.43 के स्तर पर पहुंच गया। इसी तरह यूरो की तुलना में रुपया आज 46 पैसे की मजबूती के साथ 97.07 के स्तर पर पहुंचने में सफल रहा।

मौद्रिक नीति समिति की पिछली बैठक में एक ही राग अलाप रहे थे सदस्य

एजेंसी

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) में अप्रैल की बैठक की कार्यवाही के विवरण में सदस्यों के विचारों में उल्लेखनीय तालमेल दिखा। उल्लेखनीय है कि सात से नौ अप्रैल को हुई इस बैठक में रिजर्व बैंक ने अपनी मुख्य ब्याज दर को 0.25 प्रतिशत घटा कर छह प्रतिशत पर ला दिया है और उसके बाद बैंकिंग क्षेत्र में ब्याज में नरमी दिखने लगी है। रिजर्व बैंक द्वारा एमपीसी की इस बैठक में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के आयात-प्रशुल्क के फैसलों से संभावित नकारात्मक प्रभाव के जोखिमों के साथ ही भारत में मुद्रास्फीति में गिरावट को भी रेपो रेट-कटौती के निर्णय का आधार बताया गया। बैठक में माना गया है कि वैश्विक अनिश्चितता को देखते हुए निकट अवधि के नीतिगत-मार्ग पर स्पष्टता लाने की आवश्यकता है। गवर्नर संजय मल्होत्रा ने नीतिगत ब्याज दर में 0.25 प्रतिशत की कटौती के प्रस्ताव का पक्ष लेते हुए बैठक में कहा, ऐसे समय जब खुदरा मुद्रास्फीति अच्छी तरह से 4.0 प्रतिशत के अपने लक्षित स्तर के आसपास है और आर्थिक वृद्धि दर अब भी मध्यम स्तर पर है और इसमें सुधार हो रहा है, तो ऐसी मौद्रिक नीति वृद्धि की गति को और बढ़ाने के लिए घरेलू मांग आवेगों को पोषित करने वाली होनी चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि आगे भी, विकसित विकास-मुद्रास्फीति प्रक्षेपवक्र को देखते हुए, मौद्रिक नीति को समायोजन करने की आवश्यकता है। वित्तीय सेवा कंपनी एमके ग्लोबल ने आरबीआई की बैठक के विवरण का विश्लेषण करते हुए कहा है कि एमपीसी की जून की अगली द्वैमासिक बैठक में भी ब्याज में 0.25 प्रतिशत की कमी तय है और उसके बाद आगे चल कर 0.25-0.50 प्रतिशत तक कटौती की जा सकती है। एमके ग्लोबल ने कहा है कि इस बैठक में एमपीसी के सदस्य एक ही राग अलाप रहे हैं। सदस्यों के विचारों और दृष्टिकोण में उल्लेखनीय तालमेल दिखाई देता है जो कि रेपो दर में 0.25 प्रतिशत की कटौती करने के सर्वसम्मत निर्णय से स्पष्ट है। इस रुख को 'तटस्थ' से बदल कर उदार या 'समायोज्य' में बदल दिया गया है। बैठक में सदस्य इस राय के सहमत थे कि मुद्रास्फीति के सौम्य स्थिति और आगे इसमें नरमी बने रहने के परिदृश्य के बीच आर्थिक वृद्धि का समर्थन करने की आवश्यकता है। एमपीसी एकमत थी कि अमेरिका की शुल्क की घोषणाएं बनी रही तो वैश्विक आर्थिक वृद्धि को काफी क्षती पहुंचेगी और उसका भारत की निकट अवधि की आर्थिक वृद्धि की संभावनाओं को भी नुकसान पहुंचेगा। समिति के ज्यादातर सदस्यों ने कहा कि भारत की आर्थिक वृद्धि मुख्य रूप से घरेलू मांग से प्रेरित है जो महत्वपूर्ण वैश्विक झटकों के खिलाफ एक बफर की सुविधा उपलब्ध कराती है। गवर्नर मल्होत्रा का मानना है कि मजबूत घरेलू मांग वैश्विक बाधाओं के खिलाफ एक सुरक्षा प्रदान करेगी। डॉ. राजीव रंजन ने भारत की अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति की ओर इशारा किया क्योंकि यह मुख्य रूप से घरेलू संचालित है। सदस्यों ने राय व्यक्त की कि बाहरी हालात से के संभावित प्रभाव से वृद्धि के लिए जोखिम बढ़ गए हैं। सौगत भट्टाचार्य अमेरिकी प्रशुल्क कार्रवाई के मद्देनजर ऐसे संभावित बाहरी प्रभावों के असर को लेकर थोड़ा अधिक चिंतित थे ।

नाबार्ड ने ग्रामीण ऋण डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने के लिए ऐग्री-फ़िनटेक स्टार्टअप 24×7 मनीवर्क्स कंसल्टिंग प्राइवेट लिमिटेड में 10फीसदी हिस्सेदारी हासिल की

एजेंसी

नई दिल्ली। मुंबई, 24 अप्रैल 2025 - नैशनल बैंक फ़ॉर ऐग्रीकल्चर ऐंड रूरल डेवलपमेंट (नाबार्ड) ने अगली पीढ़ी के ऐग्री-फ़िनटेक उद्यम, 24म7 मनीवर्क्स कंसल्टिंग प्राइवेट लिमिटेड में इक्विटी हिस्सेदारी हासिल की है। यह किसी बूटस्ट्रैप्ड स्टार्टअप में नाबार्ड का पहला निवेश है, जो ग्रामीण भारत में डिजिटल बदलाव के लिए अपनी प्रतिबद्धता को मज़बूत करता है। 24म7 मनीवर्क्स कंसल्टिंग प्राइवेट लिमिटेड का प्रमुख प्लैटफ़ॉर्म, eKisanCredit , सहकारी बैंकों, PACS और RRB के लिए डिज़ाइन किया गया एक पूरी तरह से डिजिटल लोन ओरिजिनेशन सिस्टम है। eKCC प्लैटफ़ॉर्म भूमि रिकॉर्ड, आधार, eKCC, कोर बैंकिंग सिस्टम और ePACS के साथ मूल रूप से एकीकृत करता है, जो ग्रामीण क्रेडिट लाइफ़साइकल के एंड-टू-एंड ऑटोमेशन को सक्षम करता है। पिछले ढाई वर्षों में, नाबार्ड ने कई बैंकों में eKCC का संचालन किया है और यह प्रणाली अब राष्ट्रव्यापी स्तर पर रोल-आउट के लिए तैयार है। नाबार्ड के अध्यक्ष श्री शाजी के.वी. ने कहा, 'नाबार्ड को एक ऐसे स्टार्टअप का सहयोग करने पर गर्व है जो ग्रामीण वित्तीय क्षेत्र में नवाचार और प्रभाव शामिल करता है। "eKCC ने कृषि ऋण के वितरण के मामले में ऐक्सेस, पारदर्शिता और दक्षता में सुधार करने की क्षमता का प्रदर्शन किया है। यह रणनीतिक सहयोग सहकारी बैंकों, PACS और RRBs को छोटे और हाशिये पर खड़े किसानों को तेज़ी-से, पारदर्शी और अधिक समावेशी ऋण सेवाएँ मुहैया करवाने में मदद करेगा।

केंद्र ने भूमिगत कोयला खनन में तेजी लाने के लिए अग्रिम भुगतान से छूट दी

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र सराकर ने भूमिगत कोयला ब्लॉक के परिचालन में तेजी लाने के लिए अग्रिम भुगतान से छूट देने जैसे नए प्रोत्साहन उपायों की घोषणा की। भूमिगत कोयला खनन को बढ़ावा देने से जुड़ा यह कदम देश के टिकाऊ कोयला उत्पादन अभियान के तहत उठाया गया है।

कोयला मंत्रालय के मुताबिक भूमिगत कोयला खदानों के लिए राजस्व हिस्सेदारी का न्यूनतम प्रतीशत चार फीसदी से घटाकर दो फीसदी कर दिया गया है। इस कमी से पर्याप्त राजकोषीय राहत मिलेगी और वित्तीय रूप से भूमिगत परियोजनाओं व्यवहारिक होंगी। इसके साथ ही भूमिगत खनन उद्यमों के लिए अनिवार्य अग्रिम भुगतान की

आवश्यकता को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है। यह उपाय वित्तीय बाधा को दूर करने के साथ ही निजी क्षेत्र से व्यापक भागीदारी को प्रोत्साहित करेग, जिससे परियोजना के क्रियान्वयन में तेजी आएगी।

मंत्रालय के मुताबिक इन प्रोत्साहन उपायों के साथ भूमिगत कोयला ब्लॉक के लिए प्रदर्शन सुरक्षा पर मौजूदा 50 फीसदी छूट को बरकरार रखा गया है। यह सामूहिक रूप से प्रवेश सीमा को कम करता है और परियोजना क्रियान्वयन को भी सुचारू बनाता है।

भूमिगत कोयला खनन अधिक पर्यावरण अनुकूल है, क्योंकि यह खुले खदान में खनन की तुलना में सतह पर काफी कम बाधा उत्पन्न करता है। इन नीतिगत उपायों से कंपनियों के आधुनिक प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित होने की उम्मीद है जो पर्यावरण संतुलन सुनिश्चित करते हुए उत्पादकता को बढ़ावा देंगे।

नेस्ले इंडिया का मुनाफा मार्च तिमाही में 6.5 फीसदी घटकर 873.46 करोड़ रुपये

एजेंसी

नई दिल्ली। नेस्ले इंडिया लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2024-25 की जनवरी-मार्च तिमाही के नतीजे का ऐलान कर दिया है। 31 मार्च को समाप्त चौथी तिमाही में कंपनी का मुनाफा 6.5 फीसदी घटकर 873.46 करोड़ रुपये रहा है। इससे पिछले वित्?त वर्ष 2023-24 की जनवरी-मार्च तिमाही में कंपनी का शुद्ध लाभ 934.17 करोड़ रुपये था। नेस्ले इंडिया ने शेयरधारकों को 10 रुपये प्रति शेयर डिविडेंड देने का ऐलान किया है। स्विस बहुराष्ट्रीय कंपनी नेस्ले इंडिया ने शेयर बाजार को नियामकीय फाइलिंग में दी जानकारी में बताया कि कंपनी की उत्पादों की बिक्री से आय जनवरी-मार्च तिमाही में 3.67 फीसदी बढ़कर 5,447.64 करोड़ रुपये रही। इससे पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में यह 5,254.43 करोड़ रुपये थी।

कंपनी का मार्च तिमाही में कुल खर्च 4,307.76 करोड़ रुपये रहा। नेस्ले इंडिया की घरेलू बिक्री वित्त वर्ष 2024-25 की मार्च तिमाही में 4.24 फीसदी बढ़कर 5,234.98 करोड़ रुपये रही, जबकि इससे पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में यह 5,021.61 करोड़ रुपये थी।

कंपनी के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक सुरेश नारायणन ने कहा, ''जनवरी-मार्च तिमाही में पेय पदार्थ और कन्फेक्शनरी में दहाई अंक की वृद्धि हुई है। हमारी घरेलू बिक्री 5,235 करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर गई, जो किसी भी तिमाही में अब तक की सबसे अधिक बिक्री है।'

सोनीपत की मंडियों में 3,65,429 टन गेहूं की आवक

सोनीपत। हरियाणा में सोनीपत की विभिन्न मंडियों में शाम तक तीन लाख 65 हजार 429 टन गेहूं की आवक हो चुकी है। यह जानकारी उपायुक्त मनोज कुमार ने दी। उन्होंने बताया तीन लाख 65 हजार 429 गेहूं में से खाद्य एवं आपूर्ति विभाग ने एक लाख 14 हजार 31 टन, हैफेड एक लाख 50 हजार 683 टन, हरियाणा वेयर हाउसिंग 76 हजार 977 टन और फूड कार्पोरेशन आफ इंडिया (एफसीआई) दस हजार 842 टन गेहूं एवं आमजन के द्वारा (कमर्शियल गेहूं) 12896 टन गेहूं की खरीद की

जिला की मंडियों में पहुंचे गेहूं में बरोदा खरीद केन्द्र पर 3995 टन, भैंसवाल 3750 टन, बिचपड़ी 1204 टन, दातौली 4973 टन, फरमाणा 9684 टन, गन्नौर 31574 टन, गोहाना 124894 टन, हुल्लाहेड़ी 1268 टन, कासंडी 8580 टन, कथूरा 6994 टन, खानपुर खरीद केन्द्र पर 8142 टन, खरखौदा 54977 टन, मोहाना 9574 टन, मुण्डलाना 8040 टन, मुरथल 9835 टन, नाहरा 7890 टन, पुगथला 11550 टन, पुरखास 7887 टन, रूखी 10315 टन, सनपेड़ा 9074 टन तथा सोनीपत 31229 टन गेहूं की आवक हुई है। उपायुक्त ने बताया कि तीन लाख 65 हजार 429 टन गेहूं को 29 हजार 42 किसान लेकर आए हैं ।

शेयर बाजार में 7 कारोबारी दिन से जारी तेजी पर लगा ब्रेक, गिरावट के साथ बंद हुए सेंसेक्स और निफ्टी

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली, 24 अप्रैल (हि.स.)। घरेलू शेयर बाजार में पिछले 7 कारोबारी दिन से जारी तेजी के सिलसिले पर आज ब्रेक लग गया। आज के कारोबार की शुरुआत भी गिरावट के साथ हुई थी। बाजार खुलने के कुछ देर बाद खरीदारी के सपोर्ट से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक कुछ देर के लिए हरे निशान में भी पहुंचे, लेकिन थोड़ी देर में ही एक बार फिर बिकवाली का दबाव बन गया, जिसकी वजह से दोनों सूचकांकों ने दोबारा लाल निशान में गोता लगा दिया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.39 प्रतिशत और निफ्टी 0.34 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए।आज दिन भर के कारोबार के दौरान रियल्टी, एफएमसीजी और आईटी सेक्टर के शेयरों में लगातार दबाव बना रहा। इसी तरह बैंकिंग, ऑटोमोबाइल, कैपिटल गुड्स, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, ऑयल एंड गैस, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज और टेक इंडेक्स भी गिरावट के साथ बंद हुए। दूसरी ओर, फार्मास्यूटिकल और मेटल सेक्टर के शेयरों में आज खरीदारी होती रही। ब्रॉडर मार्केट में भी आज आमतौर पर बिकवाली का दबाव बना रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.16 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.01 प्रतिशत की सांकेतिक गिरावट के साथ आज के कारोबार का अंत किया। आज शेयर बाजार में आई कमजोरी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में 80 हजार करोड़ रुपये से अधिक की कमी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद घट कर 429.63 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। पिछले कारोबारी दिन यानी बुधवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 430.47 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 84 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हो गया। आज दिन भर के कारोबार में बीएसई में 4,086 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 1,922 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 2,013 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 151 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,541 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,210 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 1,331 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 13 शेयर बढ़त के साथ और 17 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। जबकि निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 20 शेयर हरे निशान में और 30 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स आज 58.06 अंक फिसल कर 80,058.43 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होने के कुछ देर बाद यह सूचकांक खरीदारी के सपोर्ट से उछल कर हरे निशान में 80,173.92 अंक के स्तर तक पहुंचा। बाजार की ये तेजी अधिक देर तक नहीं टिक सकी। थोड़ी ही देर बाद मुनाफा वसूली शुरू हो गई, जिसकी वजह से यह सूचकांक लगातार गिरता चला गया। लगातार हो रही बिकवाली के कारण शाम 3 बजे तक यह सूचकांक 391.94 अंक टूट कर 79,724.55 अंक के स्तर तक गिर गया। हालांकि आखिरी वक्त में हुई मामूली खरीदारी के कारण सेंसेक्स निचले स्तर से करीब 75 अंक की रिकवरी करके 315.06 अंक की कमजोरी के साथ 79,801.43 अंक के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स की तरह ही एनएसई के निफ्टी ने आज 51.05 अंक की गिरावट के साथ 24,277.90 अंक के स्तर से कारोबार की शुरुआत की। बाजार खुलने के कुछ देर बाद खरीदारी के सपोर्ट से यह सूचकांक 18.90 अंक की तेजी के साथ 24,347.85 अंक के स्तर तक पहुंचने में सफल रहा, लेकिन इसके बाद मुनाफा वसूली शुरू हो जाने के कारण इस सूचकांक की चाल में गिरावट आ गई।

गर्मियों में रोजाना तरबूज के बीज खाने से क्या होता है? यहां जानें

सीजनल फ्रूट तरबूज सिर्फ गर्मी के मौसम में ही मिलता है, पानी से भरपूर इस फल को लोग खूब खाना पसंद करते हैं. यह फल सिर्फ सेहत के लिए ही फायदेमंद नहीं बल्कि इसके बीज भी काफी हेल्दी होते हैं.

तरबूज गर्मियों में मिलने वाला फल है जिसमें कई सारे पोषक तत्व के अलावा पानी की मात्रा अधिक होती है, इसे खाने से आप डिहाइड्रेशन से भी बच सकते हैं. इस फल की खूबसूरती यह है कि यह ताजगी देने वाला फल है, जिसे खाते ही आप फ्रेश फिल करने लगते हैं. आपकी जानकारी के लिए बता दें कि सिर्फ फल ही नहीं इसके बीज भी काफी ज्यादा फायदेमंद होते हैं, जिससे ज्यादातर लोग अब तक अनजान है. आज हम इस आर्टिकल के जरिए इसके फायदें के बारे में विस्तार से बताएंगे.

इस फल में 92 प्रतिशत पानी की मात्रा होती है इसके अलावा इसमें विटामिन और आयरन जैसे पोषक तत्व होते हैं. वहीं इसके बीज की बात करें तो यह भी कई सारे सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं जैसे- जिंक, मैग्नीशियम, पोटेशियम. इस फल में कैलोरी कम होती है जो डायबिटीज, दिल की बीमारी वाले मरीज के लिए फायदेमंद है.

तरबूज के बीज खाने के फायदे जिससे आप हैं अनजान

बेहतर पाचन तंत्र

तरबूज के बीच में पोटेशियम के साथ-साथ हाई फाइबर होता है जिसे खाने से आपका ब्लड प्रेशर कंट्रोल में रहता है. यह पाचन तंत्र के लिए भी काफी ज्यादा फायदेमंद है जो कब्ज जैसी समस्या से निजात दिलाता है.

ग्लोइंग स्किन

जिन लोगों को त्वचा संबंधी समस्या है या कोलेजन की कमी से जूझ रहे हैं उन्हें तरबूज का बीच जरूर खाना चाहिए क्योंकि इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स और कोलेजन होते हैं जो त्वचा की चमक को बढाती है.

वजन कम

गर्मियों में मिलने वाला यह शानदार फल है जिसमें सभी तरह के पोषक तत्व शामिल हैं. एक तो यह कैलोरी में कम होती है और इसके अलावा इसमें पानी की मात्रा अधिक और फाइबर, विटामिन ए, फोलेट, पोटेशियम, प्रोटीन और विटामिन सी से भरपूर होता है. जिन्हें वजन कम करना है, वह इस फल को अपनी डाइट का हिस्सा बना सकते हैं.

मजबूत इम्युनिटी

किसी व्यक्ति की इम्युनिटी कितनी मजबूत है यह पूरी तरह से शरीर में जिंक की मात्रा पर निर्भर करती है, इसलिए आपको यह जानकर खुशी होगी कि तरबूज के बीज जिंक का एक अच्छा सोर्स है. जिंक इम्युनिटी सेल्स को मजबूत बनाने के साथ-साथ उसे एक्टिव रखने का काम करता है ताकि आप बीमारियों और इंफेक्शन से बचे रहें.

हेल्दी फैट

मोनोअनसैचुरेटेड और पॉलीअनसेचुरेटेड फैटी एसिड हेल्दी फैट होते हैं. यह हेल्दी फैट कोलेस्ट्रॉल को कम करने, हार्ट अटैक और स्ट्रोक से बचाने के लिए महत्वपूर्ण है. हेल्दी लिपिड जोकि आपके ओवरऑल हेल्थ के लिए जरूरी है वह सबकुछ तरबूज के बीजों में पाए जाते हैं.

नानी की अगर मानें तो भेड़िया जिंदा है

इस समय सही तस्वीर को देखने और समझने की ही जरूरत है। जैसे किसी जिग सॉ पहेली के अलग-अलग टुकड़ों को देखें तो सब कुछ बिखरा नजर आता है, लेकिन सारे टुकड़ों को सही तरीके से जोड़ने पर पूरी तस्वीर दिखती है, कु छ वैसा ही हाल आतंकी हमलों का भी है। इस बार के हमले में बताया जा रहा है कि आतंकी मुसलमान थे और पीड़ित हिंदू, लेकिन ये केवल पूरी पहेली का एक टुकड़ा भर है।

देश एक बार फिर लहूलुहान हुआ है और एक बार फिर लोग तमाशाई की भूमिका में आ गए हैं। 26 नवंबर 2008 को मुंबई पर किया गया हमला याद कीजिए, जिसे अक्सर 9/11 की तर्ज पर 26 /11 कहा जाता है। हालांकि अमेरिका की तर्ज पर चलना था तो फिर 11/ 26 कहना चाहिए था, खैर महीना पहले आया या तारीख पहले आई, ये बात कोई मायने नहीं रखती और ये केवल एक दिन का नहीं बल्कि तीन दिनों का हमला था, जिसमें मुंबई के कई जाने-माने स्थलों को आतंकियों ने अपने निशाने पर लिया था। कई जांबाज़ पुलिस और सैन्य अधिकारियों ने आतंकियों को खत्म करने में अपनी शहादत दी थी, हालांकि फिर भी डेढ़ सौ से अधिक लोग मारे गए थे।

तीन दिनों तक चले इस खूनी खेल में कई पत्रकार लाइव कवरेज के लिए पहुंच गए थे और कुछ तो ऐसे थे जिनकी तथाकथित जांबाज़ रिपोर्टिंग के कारण आतंकियों को खबर होती रही कि सुरक्षा बल कहां-कहां से उन्हें पकड़ने के लिए रास्ता बना रहे हैं। इस दौरान गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी भी फौरन मुंबई पहुंच गए थे, क्योंकि उन्हें तब सत्तारुढ़ कांग्रेस को घेरने और सवाल पूछने का अच्छा मौका मिला था।आपदा में अवसर तलाशने की आदत काफी पुरानी मानी जा सकती है। और उस समय कई लोग हमलाग्रस्त इलाकों के आसपास की छतों पर चढ़कर ये देखने में जुटे थे कि कैसे आतंकियों को पकड़ने की कोशिश की जा रही है। हर साल दशहरे पर हम भारतीय रावण, मेघनाद और कुंभकर्ण के पुतले को जलते देखने के लिए जैसे जुटते हैं, कमोबेश उसी तर्ज पर 2008 में लोग जुट गए थे।

2008 के इस हमले को कांग्रेस सरकार की बड़ी विफलता के तौर पर आज तक पेश किया जाता है, इसमें कुछ गलत नहीं है। अगर सुरक्षा एजेंसियां समुद्री मार्ग से आने वाले आतंकियों की जानकारी नहीं रख पाई और एक नहीं कई जगहों पर एक साथ हमले करने के बावजूद आतंकियों को फौरन नहीं पकड़ा जा सका, तो यह निश्चित ही विफलता है। ठीक ऐसी ही विफलता 2019 के पुलवामा हमले में भी हुई और अब 2025 के पहलगाम हमले में भी नजर आई है।

लेकिन अब मीडिया उस तरह से सरकार की नाकामियों की चर्चा नहीं करता है। और लोगों का एक बड़ा वर्ग भी तमाशाई की भूमिका में इस तरह आ गया है कि वह आतंकी हमले की आड़ में फैलाए जा रहे हिंदू-मुस्लिम नैरेटिव पर तो अपनी प्रतिक्रिया दे रहा है और भाजपा की तरह पूछ रहा है कि लोगों को मारने से पहले धर्म पूछा, जाति नहीं।

यानी कांग्रेस और इंडिया गठबंधन जो जाति जनगणना की मांग कर रहे हैं, उसका जवाब देने के लिए यही मौका भाजपा को मिला है। मीडिया के बनाए नैरेटिव में फंसे लोग यह क्यों नहीं देख रहे कि आतंकी हमले के फौरन बाद पीड़ितों की मदद के लिए आगे आए लोगों में हिंदू भी थे और मुसलमान भी, जो इन दोनों धर्मों की पहचान से पहले खुद को कश्मीरी मानते हैं।सोशल मीडिया पर अब कई वीडियो सामने आ गए हैं, जिनमें दिखाया जा रहा है कि कैसे कश्मीर के लोग धर्म से ऊपर उठकर इस कठिन वक्त में मदद के लिए आगे आए हैं। एक बस में फंसे पर्यटकों की मदद के लिए पास की मस्जिद के लोग पहुंचे, उन्हें वेज बिरयानी और पानी दिया, और कहा कि जैसे ही रास्ता खुलेगा आप चले जाएंगे, लेकिन तब तक हम आपकी मदद के लिए हैं।

एक मस्जिद से इस हमले की बाकायदा लाउड स्पीकर के जरिए निंदा की गई। हमले के फौरन बाद जब तक सरकारी मदद नहीं पहुंची, तब तक स्थानीय दुकानदारों, घोड़े वालों ने पर्यटकों को सुरक्षित नीचे पहुंचाने का काम किया। महाराष्ट्र से आई एक महिला एक वीडियो में बता रही है कि इस हमले को नेशनल मीडिया हिंदू-मुसलमान नैरेटिव में बदल रहा है, जबकि यहां कश्मीर में सारे लोग हमारी मदद कर रहे हैं।एनडीटीवी की ही खबर है कि मृतकों में शामिल सैयद हुसैन शाह इसलिए मारा गया क्योंकि उसने आतंकियों से भिड़ने का साहस किया। एक वीडियो में जीटीवी के पत्रकार ने पीड़ितों और चश्मदीदों से पूछा कि क्या आतंकियों ने नाम पूछकर मारा और तमाम लोगों ने ना में उत्तर दिया। आजतक के जम्मू-कश्मीर संवाददाता ने बताया कि जहां हमला हुआ वहां कम से कम 2 हजार पर्यटक थे, लेकिन सुरक्षाबल नहीं था, यह बड़ी सुरक्षा चूक है। हालांकि जब पत्रकार ये बात कह रहे थे तब दिल्ली स्टूडियो में उनकी आवाज रोककर दूसरी ब्रेकिंग खबर चलाई जाने लगी। ये तीनों चैनल भाजपा के समर्थन में खबरें पेश करने वाले माने जाते हैं, लेकिन इनके जम्मू-कश्मीर के संवाददाताओं ने असल तस्वीर पेश कर दी है।इस समय सही तस्वीर को देखने और समझने की ही जरूरत है। जैसे किसी जिग सॉ पहेली के अलग-अलग टुकड़ों को देखें तो सब कुछ बिखरा नजर आता है, लेकिन सारे टुकड़ों को सही तरीके से जोड़ने पर पूरी तस्वीर दिखती है, कु छ वैसा ही हाल आतंकी हमलों का भी है। इस बार के हमले में बताया जा रहा है कि आतंकी मुसलमान थे और पीड़ित हिंदू, लेकिन ये केवल पूरी पहेली का एक टुकड़ा भर है, इसके बाकी टुकड़ों को देखें तो आतंकी लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) के बताए जा रहे हैं, जो भले इस्लाम धर्म के हों, लेकिन असल में वो इस्लाम की शिक्षाओं पर नहीं चल रहे हैं। मरने वालों में हिंदू अधिक थे, लेकिन फिर वही बात कि इनमें मुसलमान और ईसाई भी थे, यानी आखिर में इंसान का ही खून बहा, इंसानियत को ही निशाने पर लिया गया। इस पूरे मसले को हिंदू-मुसलमान तक सीमित कर दिया जाएगा तो फिर दहशतगर्द अपने मकसद में कामयाब समझे जाएंगे।

लेकिन इससे आगे बढ़कर ये समझने की कोशिश की जाएगी कि आखिर इस हमले का मकसद क्या था। क्यों ये बात फैलाई गई कि आतंकियों ने धर्म पूछकर मारा। जब आतंकी एक-एक का धर्म पूछ रहे थे और गोलियां चला रहे थे, तब सुरक्षा बल कहां था। एक मिनट में कोई बम धमाका हो और सुरक्षा बल तत्काल न पहुंचे, तब तो बात समझ आती है, लेकिन आतंकियों को लोगों से धर्म पूछने और कलमा पढ़ने के लिए कहने का वक्त कहां से मिला, ये सवाल पूछा जाना चाहिए। पुलवामा में आरडीएक्स कहां से आया, इसका जवाब आज तक नहीं मिला है, अब क्या ये पता चल पाएगा कि सैन्य अधिकारियों के भेस में आतंकी घुस गए और जांच एजेंसियों को खबर नहीं हुई।हमला मंगलवार दिन में करीब ढाई बजे हुआ, लेकिन नरेन्द्र मोदी का पौने चार बजे का सऊदी अरब का वीडियो है,

जहां प्रवासी भारतीय मोदी-मोदी के नारे लगा रहे हैं और मोदीजी गदगद हैं। क्यों प्रधानमंत्री तुरंत अपने विमान से नहीं लौटे, क्या उन्हें इस हमले की जानकारी नहीं दी गई थी, अगर ऐसा है, तो क्या ये प्रधानमंत्री के साथ ही बड़ा खेल नहीं है। आखिर गृहमंत्री अमित शाह और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल क्या कर रहे हैं। क्या ये लोग किसी भी हादसे या हमले के बाद केवल बैठक करने के लिए अपने पद पर बैठे हैं, या इससे आगे बढ़कर इनकी कोई जिम्मेदारी है। अगर ये जिम्मेदारी पूरी नहीं कर पा रहे तो क्या उन्हें इस्तीफा नहीं दे देना चाहिए।

इस समय हरेक नागरिक को ऐसे सवालों को सरकार के सामने रखना चाहिए। मगर सवाल पूछने की जगह लोग इस बात पर नाराज हैं कि आतंकियों ने धर्म पूछा और फिर गोली चलाई। नाराजगी सही जगह इस्तेमाल नहीं होगी तो फिर एक दिन ऐसा वक्त भी आ सकता है कि नाराज होने का हक भी छीन लिया जाए।

संपादकीय

पहलगाम हमला: संशय के बादल

कश्मीर के सुप्रसिद्ध पर्यटन स्थल पहलगाम के बैसरन घाटी में मंगलवार को हुए आतंकी हमले में 27 लोगों की जान जाने का अफसोस पूरा देश मना रहा है, तो वहीं इस दर्दनाक घटना को लेकर हिन्दू-मुस्लिम की नयी लहर दौड़ पड़ी है। दोपहर तकरीबन ढाई बजे कई आतंकियों द्वारा उस वक्त अंधाधुंध फायरिंग की गयी जब एक बेहद खुशगवार मौसम में भारत के अलग-अलग हिस्सों से आये सैलानी प्रकृति का लुत्फ ले रहे थे। इनमें नवविवाहित जोड़े, सपरिवार या मित्रों के साथ आये लोग थे। गर्मी की छुट्टियों में इस हसीन वादी में लाखों पर्यटक आने लगे हैं। 2019 में हुए पुलवामा हमले के बाद इसे सबसे बड़ा आतंकी हमला माना जा रहा है जिसने सरकार के इस दावे को चंद मिनटों में झुठला दिया कि 2016 की नोटबन्दी तथा 5 अगस्त, 2019 को जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के बाद यहां से आतंकवाद की समाप्ति हो गयी है।कुछ दिनों पहले संसद में भी केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दावा किया था कि पहले यानी कांग्रेस के शासनकाल में कश्मीर कोई जाता नहीं था क्योंकि वहां होने वाले हमले के खिलाफ तत्कालीन सरकार कोई कार्रवाई नहीं करती थी। शाह के दावे के अनुसार अब नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चल रही भारतीय जनता पार्टी की सरकार की आतंक के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति से यहां सीमा पार से निर्देशित कार्रवाइयां ठहर गयी हैं।इतना ही नहीं, जिस प्रकार से इस घटना को लेकर भाजपा तथा उनके समर्थकों की ओर से विमर्श चलाया जा रहा है, वह बतला रहा है कि इस घटना का भाजपा राजनीतिक लाभ लेने की तैयारियां कर चुकी है। गहन संदेह व्यक्त किये जा रहे हैं कि वक्फ़ कानून को सुप्रीम कोर्ट में मिल रही चुनौती से भाजपा को ध्रुवीकरण के उसके जाने-पहचाने खेल में मात न मिल जाये, इसके लिये वह कश्मीर के इस हमले को अगले साल बिहार और फिर पश्चिम बंगाल में होने वाले विधानसभा चुनावों में वैसे ही भुनाएगी, जैसी वह पुलवामा हमले का लाभ 2019 के आम चुनाव में यह कहकर उठा चुकी है, कि%क्या पहली बार के वोटर पुलवामा के शहीदों के नाम अपना मत भाजपा को देंगे?% कहा जाता है कि बालाकोट के साथ पुलवामा पर हुए हमले का असर मतदाताओं, खासकर युवाओं पर इस कदर पड़ा था कि भाजपा को अपने दम 303 सीटें मिल गयी थीं जो पूर्ण बहुमत के 272 से कई सीटें अधिक थीं। असलियत यह बताई जाती थी कि यदि यह मुद्दा भाजपा के हाथ न लगता तो उसे यह संख्या मिलनी मुमकिन नहीं थी।याद हो कि पुलवामा हमले को लेकर आज भी संशय बना हुआ है कि राष्ट्रपति शासन के तहत रखे गये राज्य में इतनी बड़ी मात्रा में विस्फोटक (आरडीएक्स) कहां से आया था जिससे सेना के 40 जवान शहीद हो गये जो वाहनों में जा रहे थे। तत्कालीन जम्मू-कश्मीर राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने देशबन्धु के चैनल डीबी लाइव पर यह खुलासा किया था कि यह बहुत बड़ी सुरक्षा चूक थी। श्रीनगर से वाहनों का इतना बड़ा काफिला बगैर रास्तों को सुरक्षित किये, जिसे तकनीकी शब्दावली में सेनिटाइज़ करना कहते हैं, कैसे ले जाया गया। उस वक्त प्रधानमंत्री जिम कार्बेट नेशनल पार्क (उत्तराखंड) के घने जंगलों में एक विदेशी फिल्म निर्माता के साथ शूटिंग में व्यस्त थे जिनसे सम्पर्क करना सम्भव नहीं हुआ था। शाम को जब मलिक ने मोदी से कहा कि सुरक्षा सम्बन्धी चूक है तो बकौल मलिक प्रधानमंत्री ने इसे अलग तरह का मामला बताते हुए खामोशी बरतने को कहा था। आज तक इस हमले की न तो ठीक से जांच हो सकी है और न ही हमलावरों की गिरफ्तारी तो दूर उनकी शिनाख़्त तक हुई है।बैसरन घाटी पर हमला इसलिये शंका उत्पन्न कर रहा है क्योंकि रिपोर्ट के मुताबिक उस वक्त वहां 2000 से अधिक पर्यटक मौजूद थे लेकिन उनकी सुरक्षा के लिये एक भी जवान तैनात नहीं था। इसके अलावा भी बहुत सी बातें हैं जो इस ओर इशारा करती हैं कि सरकार ही नहीं, उसका समर्थक मीडिया भी घटना को तोड़-मरोड़कर भाजपा के पक्ष में पेश कर रहा है। एक बड़े टीवी चैनल के श्रीनगर स्थित संवाददाता ने जैसे ही कहा कि सुरक्षा सम्बन्धी बड़ी चूक के चलते यह हादसा हुआ है, एंकर ने उसकी बात को काटकर यह बताना शुरू कर दिया कि गोली चालन में दो विदेशी नागरिक भी मारे गये हैं .

भारतीय मिसाइलों व रक्षा उपकरणों का बज रहा दुनिया में डंका

मोदी जी के नेतृत्व में ये परिस्थितियाँ तीव्रता के साथ बदल रही हैं। अब भारत जल, थल और नभ तीनों सेनाओं के सभी अंगों को सुदृढ़ करने के लिए दिन-रात प्रयास कर रहा है जिससे रक्षा क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भरता और बल दोनों निरंतर बढ़ रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सर्वांगीण विकास के पथ पर बढ़ता हुआ आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है। रक्षा क्षेत्र भी इस धारा से अछूता नहीं है इसमें भी अहम और व्यापक परिवर्तन दिख रहा है । 2014 के पूर्व मात्र एक दशक पूर्व तक भारत की पहचान रक्षा उपकरणों के खरीदार की हुआ करती थी। रक्षा खरीद में घोटालों के समाचार आना सामान्य बात थी फिर भी ख़रीदे गए हथियारों की समय पर आपूर्ति नहीं होती थी।मोदी जी के नेतृत्व में ये परिस्थितियाँ तीव्रता के साथ बदल रही हैं। अब भारत जल, थल और नभ तीनों सेनाओं के सभी अंगों को सुदृढ़ करने के लिए दिन-रात प्रयास कर रहा है जिससे रक्षा क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भरता और बल दोनों निरंतर बढ़ रहे हैं। भारत के रक्षा वैज्ञानिक निरंतर शोध में में व्यस्त हैं। हर दिन किसी न किसी मिसाइल का सफल परीक्षण किया जा रहा है, रक्षा उपकरणों का उत्पादन बढ़ाया जा रहा है जिसके फलस्वरूप भारत की मिसाइलों व रक्षा उपकरणों का डंका विश्व बार में बजने लगा है। अब भारत रक्षा उपकरणों तथा तकनीक का क्रेता ही नहीं विक्रेता भी बन रहा है। द्विपक्षीय रक्षा सहयोग के अंतर्गत होने वाले समझौतों में भारत यह बात भी शामिल करता है कि क्रय किये जा रहे हथियारों का निर्माण व सम्बंधित प्रशिक्षण भी भारत में हो। राफेल लड़ाकू विमान इसका प्रमुख उदाहरण है।आज भारतीय मिसाइलों की क्षमता से विश्व प्रभावित हो रहा है और कई देश भारतीय मिसाइलें खरीदकर उन्हें अपनी सीमाओं की सुरक्षा में लगाना चाहते हैं। वह छोटे देश तथा जिनकी सीमा चीन से लगी हुई है या फिर जिन पर विस्तारवादी चीन की गिद्ध दृष्टि लगी है, विशेष रूप से भारत की ब्रह्मोस मिसाइल खरीदकर अपने यहां तैनात कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक कुशल रणनीतिकार की तरह चीन व पाकिस्तान को चारों ओर से घेरने का काम कर रहे हैं, जिसमें ब्रह्मोस जैसी मिसाइलें महत्वपूर्ण हैं। ब्रह्मोस एक ऐसी उन्नत मिसाइल है जिसे न केवल दक्षिण चीन सागर के राष्ट्र अपितु बड़े मुस्लिम राष्ट्र भी खरीद रहे हैं। चीन के शत्रु फिलीपींस को भारत ने ब्रह्मोस दी है। फिलीपींस को ब्रह्मोस मिसाइलों का निर्यात भारत द्वारा किसी भी देश के साथ किया गया अब तक का सबसे बड़ा रक्षा विक्रय समझौता है। भारत ने ब्रह्मोस सुपर सोनिक मिसाइल की आपूर्ति के लिए जनवरी 2022 में फिलीपींस के साथ 375 मिलियन डालर का समझौता किया था जो कि अब लागू हो चुका है। अप्रैल- 2024 फिलीपींस को ब्रह्मोस की पहली खेप मिली। इंडोनेशिया भी भारत की ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल खरीदने वाला है। वियतनाम और मलेशिया जैसे दक्षिण पूर्व एशियाई देशों ने भी इस अत्याधुनिक मिसाइल को खरीदने में रुचि दिखाई है।

आगामी दिनों में सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश भी ब्रह्मोस मिसाइल के बड़े खरीददार बन सकते हैं। श्रीलंका जैसे छोटे देश जिनकी सीमा चीन से मिलती है उन सभी देशों के साथ ब्रह्मोस को तैनात करने के लिए बातचीत चल रही है। साथ ही यह वर्ष ब्रह्मोस मिसाइल का 25वां वर्ष मनाया जा रहा है इसलिए 25 देशों के साथ ब्रह्मोस की डील को लेकर वार्ता चल रही है जिसमें कुछ देशों के साथ वार्ता अंतिम चरण में पहंच चुकी है।

ब्रह्मोस की विषेषता- सबसे तेज सुपरसेनिक क्रूज मिसाइल ब्रह्मोस भूमि, वायु, जल यानि समुद्र की गहराइयों में भी पलक झपकते ही शत्रु को निशाना बना लेती है। 12 जून 2001 को मिसाइल ने अपनी पहली सफल उड़ान भरी थी। यह भारत और रूस की एक संयुक्त परियोजना है जिस पर लगातार काम चल रहा है। इस मिसाइल का नामकरण भारत की नदी ब्रह्मपुत्र और मास्को की नदी मोसक्वा के नाम पर किया गया है। 24 जनवरी 2024 के ब्रह्मोस के नये उन्नत वर्जन का सफल परीक्षण किया गया। मिसाइल की रेंज को बढ़ाया गया है और साथ ही तकनीक को भी बेहतर बनाया गया है। यह मिसाइल अपनी सटीकता के लिए जानी जाती है। अब इस मिसाइल की रेंज बढ़कर 800 किमी हो गई है जबकि पहले रेंज केवल 200 किमी तक ही सीमित थी। यह हवा में ही रास्ता बदलने तथा चलते फिरते टारगेट को भी ध्वस्त करने में सक्षम है। यह 10 मीटर की ऊंचाई पर उड़ान भरने में सक्षम हैं। यह एक ऐसी मिसाइल है जिसे शत्रु अपने रडार से देख नहीं पायेगा। यह मिसाइल 1200 यूनिट की ऊर्जा पैदा करती है जो किसी भी बड़े टारगेट को पलक झपकते ही ध्वस्त कर सकती है। ब्रह्मोस मिसाइल भारतीय नौसेना के कई युद्धपोतों पर तैनात है। ब्रह्मोस मिसाइल के बाद भारत के कई अन्य हथियार भी विदेशी की सेनाओं में होंगे जिसमें आकाश मिसाइल, अर्जुन टैंक, लाइट एयरक्राफ्ट जैसे कई उपकरण शामिल हैं जिनके निर्यात करने की तैयारियां चल रही हैं।

इस तरह से करें बेकार पड़े प्लास्टिक के कपों का इस्तेमाल

हम सभी बाजार से बहुत सी ऐसी चीजें ला कर इस्तेमाल करते हैं जो प्लास्टिक के कपों, बोतल, बर्तनों, थैलों आदि में आती है। हम घर की सफाई करने के लिए इन कपों, बोतलों आदि का इस्तेमल करने के बाद कचरे में फेक देते हैं। पर यह सभी चीजें फेंकने के बाद भी जल्दी से गलती नहीं हैं। ऐसी प्लास्टिक की चीजों को गलने में बहुत समय लगता है। बहुत से शहरों और राज्यों में इन चीजों का उपयोग करने के लिए प्रतिबंध लगाएं गए हैं। इसलिए आज हम आपको इन प्लास्टिक के कपों को घर में इस्तेमाल करने के लिए कुछ आसान से टिप्स बताएगें। इसे आप इन चीजों को फिर से रीसायकल बिन कर सकते हैं। तो आइए जानते हैं...

- पेन रखने के लिए स्टैंड बनाएं

आप इन कपों से पेन रखने के लिए स्टैंड बना सकते हैं। ताकि बच्चें अपना प्रोजेक्ट बनाने का सारा सामान इसमें इकट्ठा करके रख सकें। - टूथब्रश रखने के लिए होल्डर अक्सर हम सभी जब बाजार से दही लेकर आते हैं तो दही खाने के बाद उन कपों को फेक देते हैं। आप इन कपों को फेंकने की जगह रंगों से डिजाइन बना कर घर में इस्तेमाल कर सकते हैं। जैसे कि उन्हें बाथरूम में टूथब्रश रखने के लिए होल्डर बना कर टांग सकते हैं।

- पैसे रखने के लिए

आप इन बेकार पड़े प्लास्टिक कपों में टूटे सिक्कों रख सकते हैं, ताकि आप सिक्को को एक जगह पर रखे सकें और ढूंढने में किसी तरह की दिक्कत भी न हो। - एस्सेसरीज चीजें रखने के लिए

जब भी हम किसी फंक्शन से आते हैं तो अपनी कीमती चीजें जैसे कि ईयरिंग्स या चैन आदि को घर में कही भी रख देते हैं। जिसे यह सारी चीजें गुम हो सकती हैं। इसलिए इन्हें एक जगह पर रखने के लिए ऐसी एस्सेसरीज चीजों को इकट्ठा करके इन प्लास्टिक कपों में संभाल कर रख सकती हैं। - पौधे लगाने के लिए बीज बोएं

आप घर में इन बेकार पड़े प्लास्टिक कपों और बाल्टियों में मिट्टी डालकर पौधो के बीज लगा सकते हैं, जैसे कि धनिया, पुदिना आदि के बीज। - कपों का पेपरवेट बनाएं

बाजार से मंहगे पेपरवेट लाने की जगह पर आप घर में बेकार पड़े सामान और प्लास्टिक के हैवी कपों का पेपरवेट बना सकते है। - कलर पैलेट

अगर आपके बच्चों चित्रकला का करने का शौक रखते हैं तो उन्हें रंगों के अलग-अलग शेड बनाने के लिए प्लास्टिक के कप दें सकते है। इन कपों में रंग सूखते नहीं है और उन्हें इस्तेमाल में भी लाया जा सकता हैं।

घर में कॉकरोचों का खात्मा करने के लिए अपनाएं ये टिप्स

आजकल हर घर में कॉकरोच आम देखने को मिलते हैं। कॉकरोच घर में जगह-जगह पर आपना घर बना कर मजे से रहते हैं। ऐसे में अगर हमारी किचन में खाने पीने की चीजों के आस पास कॉकरोच घुमते रहें तो पेट जैसी बहुत सी बीमारियां हो जाती हैं। अगर आप कॉकरोचों से परेशान हो गए है तो आज हम आपको कॉकरोचों का खात्मा करने के लिए कुछ आसान से घरेलू टिप्स बताएगें। तो आइए जानते हैं...

-लौंग

वैसे तो हम सभी लौंग का इस्तेमाल खाने में करते हैं, पर अगर आपके रसोईघर में बहुत ज्यादा कॉकरोच है तो उनसे मुक्ती पाने के लिए भी इसका उपयोग कर सकते है। ऐसे में अगर आप किचन कैबिनेट के अंदर थोड़े लौंग रख दें ताकि कॉकरोच भाग जाए।

-रेड वाइन

आप रसोईघर में बनी कैबिनेट के अंदर एक कटोरी में 1/3 रेड वाइन रख कर भी इनका खात्मा कर सकते हैं। - पाउडर वाली चीनी कॉकरोचों का खात्मा करने के लिए आप एक कटोरी में या फिर किसी बोतल की ढक्कन में चीनी का पाउडर डाल कर रख दें। चीनी को बोरिक एसिड के साथ मिलाकर भी रख सकते है।

-अण्डा

घर में हर कोई अंडा तो खाता ही है। पर हम सभी अण्डे के छिलकों को कचरे के डिब्बा में फेक देते है। अब आप ऐसा न करें। यदि आपकी किचन में कॉकरोच हैं तो उन्हें दूर करने के लिए आप अण्डे के छिलको को कैबिनेट या स्लेब पर रख दें।

-बेकिंग पाउडर

किचन में कॉकरोचों का खात्मा करने के लिए कटोरे में बेकिंग पाउडर डाल कर कैबिने के अंदर और बाहर रख दें। ध्यान में रखें कि 10-15 दिनों के बाद इस बदल जरूर दें क्योंकि नमी की वजह से इसकी महक चली जाती है।

घर में रखा है पालतू जानवर, तो इस तरह से करें

साफ-सफाई

जिन लोगों को घर में जानवर रखने का शौक है उन्हें उसकी देखभाल के साथ-साथ घर की साफ-सफाई का भी बहुत ध्यान रखना पड़ता है। वह जानवर की देखभाल अपने बच्चों की तरह करते हैं। फिर भी वह जितनी भी कोशिश कर लें, पर उनके लिए घर की सफाई करना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। ऐसे में जानवर आपके घर की साफ-सफाई को खराब कर ही देता है क्योंकि उसके शरीर के बाल घर में जगह-जगह पर बिखरे रहते हैं। इसलिए आज हम आपको बताएंगे कि आप जानवर होने पर किस तरह से घर की साफ-सफाई करें। तो आइए जानते है कैसे...

- नस्ल के बारे में जान लें घर में जानवर रखने से पहले उसकी नस्ल के बारे में जरूर जान लें क्योंकि कुछ नस्ल के जानवरों के बाल गिरते रहते हैं। ऐसे में आप घर पर हल्के बालों वाले जानवर ही पाले।

- देखभाल

अगर आपने घर में ऐसी नस्ल वाला जानवर रखा है जिसके बाल गिरते है तो ऐसे जानवरों के बालों की देखभाल जरूर करें। ऐसे में उसे समय पर नहलाएं और उसकी एक ड्रेस बना कर पहनाएं। हो सके तो जानवर के बालों को अच्छा रखने वाली दवा व क्रीम लगाएं।

- कारपेट और कपड़े

घर की सफाई करते समय कॉरपेट, बेडशीट, बिस्तर, सोफा आदि को अच्छे से साफ जरूर करें क्योंकि इस पर जानवर के बाल भी लगे हो सकते हैं। कोशिश करें कि हर हफ्ते एक बार वैक्यूम क्लीनर से घर के साफ जरूर करें।

- दाग

जानवर घर में कहीं भी मल या मूत्र देखे हैं, जिससे उस जगह पर दाग पड़ जाते हैं।अगर वह कॉरपेट पर कर दें तो यह जल्दी खराब हो जाता है। इसलिए उस जगह को शीघ्र ही साफ करें।

- कमरे की सजावट

कमरे में पड़े महंगे सामान को जानवर की पहुंच से दूर रखें। कमरे को तभी खोंले जब घर में मेहमान आएं। हो सके तो सभी चीजों की दिन में एक बार डस्टिंग जरूर कर लें।

- जानवर से फर्श को बचाएं

अगर आपके घर में पीवीसी शीट वाली फर्श बिछी है तो जानवर से फर्श को बचाएं क्योंकि सभी जानवरों के पंजे गढ़ाने की गंदी आदत होती है। वह शीट वाली फर्श को खराब कर सकता है। - प्रशिक्षण दें

अगर आप घर में जानवर को रखना चाहते हैं तो उसे घर में बैठने-उठने की अच्छी ट्रेनिंग दें।

खुश रहना है बहुत आसान

आपको यह बात थोड़ी अटपटी लग सकती है, लेकिन सच है कि कुछ छोटी-छोटी बातों को अपनी जीवनशैली में शामिल करके हमेशा तनावमुक्त और खुश रह सकती हैं।

1. सुबह अपने लिए थोड़ा समय जरूर निकाले ताकि आपके मस्तिष्क में अच्छे विचार आ सकें। इसके लिए आंखें बंद करके सकारात्मक भाव वाली किसी कविता या प्रार्थना का सस्वर पाठ करते हुए गहराई से उसका अर्थ समझने का प्रयास करे। इस दौरान नाक से सांस लें और उसे मुंह से वापस छोड़े। दिन भर तनावमुक्त रहने के लिए यह अच्छा व्यायाम है।

2. हाल ही में किए गए सर्वेक्षणों से यह तथ्य सामने आया है कि जो लोग सुबह का नाश्ता नहीं करते उनमें शारीरिक और मानसिक तनाव बहुत अधिक होता है और जो लोग सुबह के नाश्ते में पौष्टिक चीजें जैसे स्प्राउट्स, फल, जूस आदि लेते है उन्हे किसी तरह के तनाव का अनुभव नहीं होता। नाश्ते में मौजूद जिंक, विटमिन सी, विटमिन बी और मैग्नीशियम आपके शरीर को तनाव के नकारात्मक असर से लड़ने की ऊर्जा देते है।

3. अपने शारीरिक और मानसिक तनाव के लक्षणों को पहचानने की कोशिश करे कि किस स्थिति में आप स्वयं को ज्यादा तनावग्रस्त महसूस करती है। जब कभी तनाव महसूस हो तो इसे दूर करने के लिए आप यह करे-अपनी पीठ बिलकुल सीधी रखें, पेट के निचले हिस्से को भीतर की ओर हलका सा सिकोड़े और वापस उसी अवस्था में छोड़ दें। कम से कम चार-पांच बार ऐसा करने से आप स्वयं को तनावमुक्त महसूस करेगी। इससे सांस सही ढंग से चलने लगती है।

4. कंप्यूटर पर लगातार काम करते-करते आंखें थक जाती है। इस समस्या से बचने के लिए कम से कम हर तीन घंटे के अंतराल पर अपनी हथेलियों से दो मिनट के लिए पलकें बंद करे और फिर धीरे-धीरे आंखें खोलें। इससे आराम महसूस होगा।

5. हंसना तनाव दूर करने का सबसे आसान उपाय है। इसलिए टीवी पर गंभीर कार्यक्रमों के बजाय कोई कॉमेडी शो देखें।

6. संगीत तनाव दूर करने का सबसे बेहतर जरिया है। इसलिए वीकएंड में न सिर्फअपनी पसंद का संगीत सुनें, बल्कि खुद भी खुले गले से गुनगुनाएं। वैज्ञानिक सर्वेक्षणों से साबित हो चुका है कि गाने से मस्तिष्क तक ऑक्सीजन का प्रवाह तेज गति से होता है और इससे व्यक्ति तनावमुक्त महसूस करता है।

गर्मियों में फूड पॉइजनिंग से कैसे करें बचाव?

गर्मियों में बाहर का खाना कई बार सेहत को महंगा पड़ सकता है, इन दिनों कई प्रकार के खाद्य-पदार्थों के जल्दी खराब होने की आशंका बनी रहती है। ऐसे में कई बार तो घर में बना खाना भी जल्द खराब हो जाता है। आइए, हम आपको बताते हैं कि अगर गर्मियों में फूड पॉइजनिंग के शिकार हो जाएं, तो इससे बचाव के लिए कौन से उपाय अपना सकते हैं -

नींबू का सेवन करें: नींबू में एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटीबैक्टीरियल और एंटीवायरल गुण मौजूद होते हैं। इसलिए इसे पीने से फूड पॉइजनिंग वाले बैक्टीरिया मर जाते हैं। आप खाली पेट नींबू-पानी बनाकर पी सकते हैं या चाहें तो गर्म पानी में नींबू निचोड़ें और पी जाएं।

सेब के सिरके का सेवन करें: सेब के सिरके में मेटाबालिज्म रेट को बढ़ाने वाले तत्व होते हैं। खाली पेट इसका सेवन करने पर यह भी खराब बैक्टीरिया को मारने में मदद करते हैं।

तुलसी का सेवन करें: तुलसी में मौजूद रोगाणुरोधी गुण सूक्ष्म जीवों से लड़ते हैं। तुलसी का सेवन आप कई तरीकों से कर सकते हैं। एक कटोरी दही में तुलसी की पत्तियां, कालीमिर्च और थोड़ा सा नमक डालकर खा सकते हैं। पानी व चाय में भी तुलसी की पत्तियां डालकर पी सकते हैं।

दही खाएं: दही एक प्रकार का एंटीबायोटिक है, इसमें थोड़ा सा काला नमक डालकर इसे खा सकते हैं।

लहसुन खाएं: लहसुन में एंटी फंगल गुण होते हैं। आप सुबह खाली पेट लहसन की कच्ची कलियां पानी के साथ खा सकते हैं। इससे भी राहत मिलेगी।

पालक के यह गुण जानकर आप भी चौंक जाएंगे

पालक में जो गुण पाए जाते हैं, वे सामान्यतः अन्य शाक-भाजी में नहीं होते। यही कारण है कि पालक स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है, सर्वसुलभ एवं सस्ता है।

यह भारत के प्रायः सभी प्रांतों में बहुलता से सहज मिल जाता है। इसका पौधा लगभग एक से डेढ़ फुट ऊंचा होता है। इसके पत्ते चिकने, मांसल व मोटे होते हैं। यह साधारणतः शीत ऋतु में अधिक पैदा होता है, कहीं-कहीं अन्य ऋतुओं में भी इसकी खेती होती है।

गुण और लाभ

- इसमें पाए जाने वाले तत्वों में मुख्य रूप से कैल्शियम, सोडियम, क्लोरीन, फास्फोरस, लोहा, खनिज लवण, प्रोटीन, श्वेतसार, विटामिन 'ए' एवं 'सी' आदि उल्लेखनीय हैं। इन तत्वों में भी लोहा विशेष रूप से पाया जाता है।
- लौह तत्व मानव शरीर के लिए उपयोगी, महत्वपूर्ण, अनिवार्य होता है। लोहे के कारण ही शरीर के रक्त में स्थित रक्ताणुओं में रोग निरोधक क्षमता तथा रक्त में रक्तिमा (लालपन) आती है। लोहे की कमी के कारण ही रक्त में रक्ताणुओं की कमी होकर प्राय: पाण्डु रोग उत्पन्न हो जाता है।
- लौह तत्व की कमी से जो रक्ताल्पता अथवा रक्त में स्थित रक्तकणों की न्यूनता होती है, उसका तात्कालिक प्रभाव मुख पर विशेषतः ओष्ठ, नासिका, कपोल, कर्ण एवं नेत्र पर पड़ता है, जिससे मुख की रक्तिमा एवं कांति विलुप्त हो जाती है। कालान्तर में संपूर्ण शरीर भी इस विकृति से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।
- लोहे की कमी से शक्ति ह्रास, शरीर निस्तेज होना, उत्साहहीनता, स्फूर्ति का अभाव, आलस्य, दुर्बलता, जठराग्नि की मंदता, अरुचि, यकृत आदि परेशानियां होती हैं।
- पालक की शाक वायुकारक, शीतल, कफ बढ़ाने वाली, मल का भेदन करने वाली, गुरु (भारी) विष्टम्भी (मलावरोध करने वाली) मद, श्वास, पित्त, रक्त विकार एवं ज्वर को दूर करने वाली होती है।
- आयुर्वेद के अनुसार पालक की भाजी सामान्यत: रुचिकर और शीघ्र पचने वाली होती है। इसके बीज मृदु, विरेचक एवं शीतल होते हैं। ये कठिनाई से आने वाली श्वास, यकृत की सूजन और पाण्डु रोग की निवृत्ति हेतु उपयोग में लाए जाते हैं।
- गर्मी का नजला, सीने और फेफड़े की जलन में भी यह लाभप्रद है। यह पित्त की तेजी को शांत करती है, गर्मी की वजह से होने वाले पीलिया और खांसी में यह बहुत लाभदायक है।

रासायनिक विश्लेषण

पालक की शाक में एक तरह का क्षार पाया जाता है, जो शोरे के समान होता है, इसके अतिरिक्त इसमें मांसल पदार्थ 3.5 प्रतिशत, चर्बी व मांस तत्वरहित पदार्थ 5.5 प्रतिशत पाए जाते हैं।

पालक में लोहा काफी मात्रा में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें पाए जाने वाले तत्वों में कैल्शियम, सोडियम, क्लोरीन, फास्फोरस, खनिज लवण, प्रोटीन, श्वेतसोर आदि मुख्य हैं।

रेसिपी

वॉटरमेलन मॉकटेल

सामग्री

■ तरबूज- 2 कप (बीज निकालकर टुकड़ों में कटा) ■ पुदीने की पत्तियां- 5-7 ■ नींबू का रस- 1 बड़ा टीस्पून ■ आइस क्यूब- 4-5 ■ सोडा- (जरूरत अनुसार) ■ नींबू- 1 स्लाइस।

विधि

मिक्सर जार में कटा तरबूज, पुदीने की पत्तियां और नींबू का रस डालकर पीस लें। सर्विंग गिलास में आइस क्यूब्स डालें और ऊपर से तरबूज और पुदीने का मिक्सचर डालकर गिलास को आधा भर दें। ऊपर से सोडा और कुछ पुदीने की पत्तियां डालें। नींबू के स्लाइस को एक साइड से थोड़ा काट दें और गिलास के किनारों पर लगाकर ड्रिंक सर्व करें।

कुल्फी फालूदा

सामग्री

■ एक लीटर मलाई युक्त दूध ■ एक तिहाई टी-कप शक्कर ■ एक चौथाई टीस्पून पिसी छोटी इलायची ■ थोड़ी सी केसर ■ एक टेबलस्पून कॉर्नफ्लोर ■ 75 ग्राम कॉर्नफ्लोर ■ बर्फ के टुकड़े ■ पांच टेबलस्पून गुलाब का सिरप।

विधि

केसर कुल्फी के लिए एक छोटे बाउल में थोड़े से गरम दूध में केसर को भिगोइए और एक तरफ रख दीजिए। दो टेबलस्पून पानी में कॉर्नफ्लोर को घोलिए और एक तरफ रख दीजिए। एक चौड़े बर्तन में दूध डालिए और एक उफान के आने तक गरम कीजिए। कॉर्नफ्लोर का घोल और शक्कर डालिए और अच्छी तरह मिक्स कीजिए। मध्यम आंच पर लगातार चलाती रहिए, जब तक कि दूध की मात्रा घटकर प्रारंभिक मात्रा से आधी से थोड़ी कम नहीं रह जाती। पूरी तरह ठंडा कीजिए। फिर इलायची पाउडर और केसर का मिश्रण डालिए और अच्छी तरह से मिक्स कीजिए। कुल्फी के सांचों में डालिए और कुछ घंटे जमने के लिए रख दीजिए।

फालूदा की सेव के लिए: कॉर्नफ्लोर को 450 मिली. पानी में अच्छी तरह से मिक्स करके मुलायम घोल बनाइए। घोल को मंद आंच पर उबालिए। चलाते हुए पकाना जारी रखिए, जब तक कि घोल अर्द्ध पारदर्शी नहीं हो जाता। अब घोल को सेव के सांचे में डालिए और हाथ से दबाकर चलनी से होकर एक बर्तन में गिराइए, जो बहुत ठंडे पानी और बर्फ के टुकड़ों से भरा हो। इस फालूदा सेव को जब तक उपयोग में न लें, तब तक पानी में रखिए। कुल्फी को सांचे में से निकालने के लिए, इन सांचों को फ्रिज के बाहर कुछ देर तक रहने दीजिए। फिर लकड़ी की डंडी या कांटे को कुल्फी के मध्य में डालकर उसे खींचकर बाहर निकालिए। प्रत्येक परोसने के बर्तन में कुल्फी के टुकड़े रखकर, इसमें गुलाब का सिरप और थोड़े से फालूदा सेव डालिए और तुरंत परोसिए।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): सुबह-सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह रहेगा। किसी लाभदायक कार्य के लिए व्ययकारक स्थितियां पैदा होंगी। अल्प-परिश्रम से ही लाभ होगा। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। घरेलू बहुमूल्य वस्तुओं के क्रय का योग है। शुभांक-1-5-7

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): परामर्श व परिस्थिति सभी का सहयोग मिलेगा। अधिकारी वर्ग से आपकी निकटता बढ़ेगी। व्यावसायिक उपक्रम में उलटफेर की शुरुआत हो सकती है। स्थाई सम्पत्ति के निर्माण, मरम्मत व पुर्नस्थापना पर व्यय भार बढ़ेगा। किसी की टीका-टिप्पणी से आपको परेशानी हो सकती हैं। शुभांक-2-5-6

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): विश्वस्त लोगों के कहे अनुसार चलें। राजकीय कार्यों में सतर्कता बरतें। मान-सम्मान को ठेस लग सकती है। जोश से कम व होश में रहकर कार्य करें। नये आगंतुकों से लाभ होगा। कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। परिवार के साथ मनोरंजनिक स्थल की यात्रा होगी। शुभांक-5-7-9

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): पुरानी पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। परिश्रम प्रयास से कार्य सफल होंगें। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। अपनों का सहयोग मिलेगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी खिन्नता रहेगी। मनोरथ सिद्धि का योग है। शुभांक-1-3-6

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): दाम्पत्य जीवन में तनाव का वातावरण बन सकता हैं। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। आत्मचिन्तन करें। पुराने मित्र से मिलन होगा। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। अपने अधीनस्थ लोगों से कम सहयोग मिलेगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शुभांक-5-7-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे निपटा लें। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। शुभांक-3-5-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): संतान की ओर से हर्ष के प्रसंग बनेंगे। समय को देखकर कार्य करना ज्यादा हितकर रहेगा। परिश्रम अधिक करना पड़ेगा तभी आप लाभ की आशा कर सकते हैं। कार्य क्षेत्र में पदोन्नति के योग बनेंग। आलस्य का त्याग करें। पुरुषार्थ का सहारा लें। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेंगी। शुभांक-4-6-7

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): कर्म बल पर आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक क्षेत्र में वर्तमान क्षमता को बढ़ाएंगे उपक्रम का विस्तार करने का प्रयास सफल होगा। आप अच्छी सफलताएं प्राप्त करेंगे। बुद्धि कौशल से चुनौतीपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक दृष्टि से समय उपलब्धिकारक रहेगा। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-4-6-8

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य कमजोर बना रहेगा। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। श्रम अधिक करना पड़ सकता है। वरिष्ठजनों से मतभेद उभर सकते हैं। शुभांक-3-5-7

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): शनै:-शनै: स्थिति पक्ष की बनने लगेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। लाभदायक कार्यों की चेष्टएं प्रबल होंगी। पारिवारिक प्रेमभाव बढ़ेगा। शुभांक-2-4-6

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): विकास के लिए बनाई योजना सफल होगी। अच्छा हो कि आप अपने उद्देश्य को लेकर सचेत रहें। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य सौंपे जा सकते है जो कि अतिविश्वसनीय व्यक्तियों को ही दिये जाते हैं। कार्य साधक दिन है व्यर्थ न गंवाऐ। नैतिक दायरे में रहें। शुभांक-5-7-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): क्षमता से अधिक कार्य करने की नौबत आ सकती हैं। उत्तरदायित्व की अधिकता निजी जीवन में अपने ही ढ़ग की परेशानियां पैदा करेगी। कारोबार की उन्नति के लिये एक से अधिक सीढ़ी चढ़कर लोगों को आश्चर्य में डाल देगें। बौद्धिक क्षेत्र में प्रतियोगिता जीतने का मौका मिलेगा। शुभांक-1-5-8

लॉफिंग ज़ोन

न्यायाधीश (एक बूढ़े चोर से)- तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुमने दिनदहाड़े चोरी की? तुम्हे पकड़े जाने जरा भी डर नहीं लगा।

कटघरे में खड़ा बूढ़ा चोर बोला- क्या करूँ सरकार! आजकल मुझे रात में बहुत नींद आती है, इसलिए मैंने दिन में दिनदहाड़े चोरी कर ली।

□ □ □

पुलिस इंस्पेक्टर (रमन से)- नालायक...! तुम इते गिरे हुए हो कि केवल पाँच सौ रुपए के लिए इस बुजुर्ग व्यक्ति का सिर फोड़ दिया?

रमन हवलदार- और क्या करता साहब... मजबूरी है! ऐसे ही तो बूँद-बूँद से घड़ा भरता है हुजूर।

□ □ □

न्यूक्लियर फैमिली में रहने वाला चंपू अपने पिता से बोलता है, पापा- पापा मैं भी अपनी शादी में आइटम गर्ल को डाँस करवाऊँगा।

पापा- बेवकूफ क्या बकता है, यह तमाशा किस गधे की शादी में देख लिया?

चंपू- आपकी शादी के वीडियो में।

पापा- अबे नालायक अपनी मौसी और बुआ को नहीं पहचानता!!

□ □ □

काकुरो पहेली - 4035

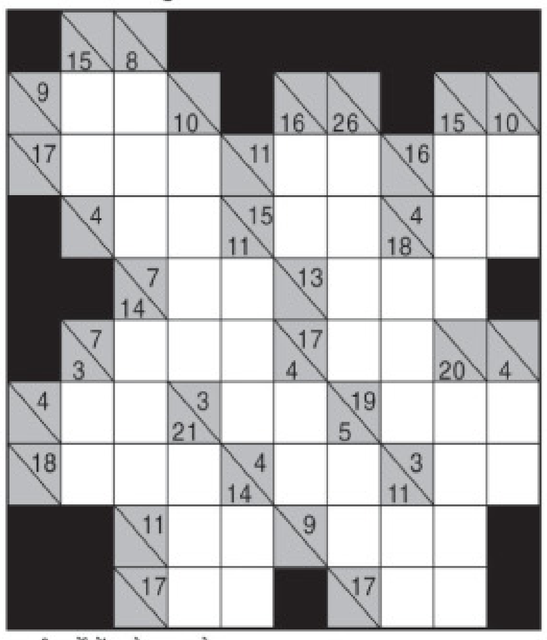

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए, किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

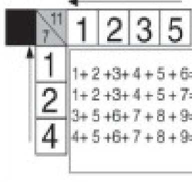

1+2+3+4+5+6=21
1+2+3+4+5+7=22
3+5+6+7+8+9=38
4+5+6+7+8+9=39

काकुरो -4034 का हल

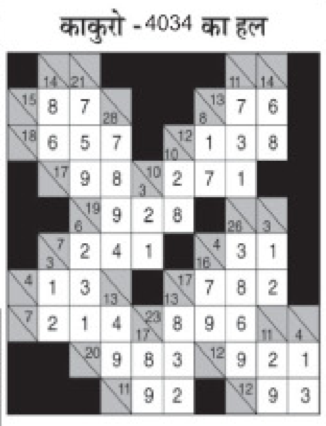

फिल्म वर्ग पहेली- 4035

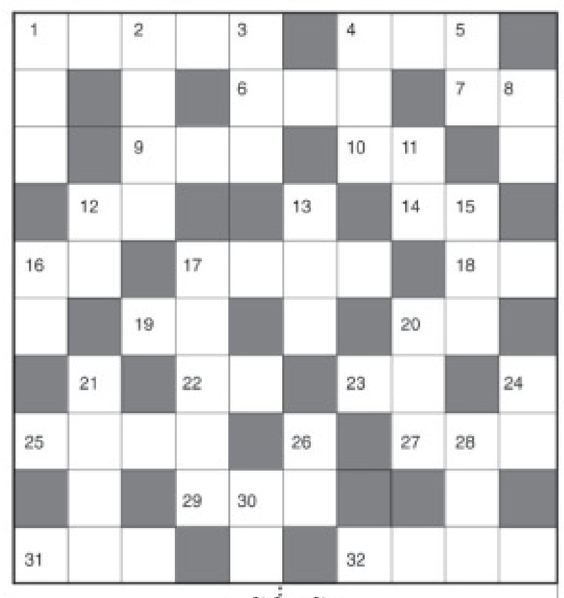

बायें से दायें:-

१. अमिताभ, राखी, की 'एक रास्ता है' गीत वाली फिल्म-२,३
४. 'ये नैन डरे डरे' गीत वाली फिल्म-३
६. सनी देओल, रवीना की 'दिल ना किसी का जाये' गीत वाली फिल्म-३
७. 'मैं तुझसे मिलने आई मंदिर जाने के बहाने' गीत वाली की फिल्म-२
९. संजयदत्त, पूजा की 'रहने को घर नहीं है' गीत वाली फिल्म-३
१०. 'कुछ लोग मुहब्बत करके' गीत वाली राज बब्बर, डिम्पल की फिल्म-२
१२. अजय देवगन, ट्विंकल खन्ना की जोड़ी वाली पहली फिल्म-२
१४. 'डाकिया रोज गली पर' गीत वाली मिथुन, स्वाति, मानसी की फिल्म-२
१६. 'हम प्यार करने वाले' गीत वाली फिल्म-२
१७. 'थोड़ा है थोड़े की' गात वाली राकेश रोशन, बिंदिया की फिल्म-२,२
१८. 'मैंने कहा फूलों से' गीत वाली फिल्म-२
१९. 'जिंदगी के खेल में' गात वाली अनिल कपूर, माधुरी की फिल्म-२
२०. फिल्म 'डकैत' में मीनाक्षी के साथ नायक कौन था?-२
२२. फिल्म 'परिंदा' में 'अन्ना' के चरित्र की भूमिका किसने की थी?-२
२३. 'ई है बंबई नगरिया' गीत वाली फिल्म-२
२५. जीतेंद्र, जया की 'बीती ना बिताई रैना' गीत वाली फिल्म-४
२७. 'झोंपड़ी में चारपाई' गीत वाली जीतेंद्र, श्रीदेवी, जया की फिल्म-३
२९. 'कितना बेचैन होके' गीत वाली फिल्म-३
३१. संजीव, राखी की एक फिल्म-३
३२. 'तारे हैं बाराती' गीत वाली फिल्म-४

ऊपर से नीचे:-

१. 'कितना प्यारा वादा' गीत वाली फिल्म-३
२. सुनीलदत्त, किशोर सायरा की फिल्म-४
३. 'सुंदरा सुंदरा' गात वाली फिल्म-३
४. फिल्म जिसमें शाहरूख ने गूँगे की भूमिका की थी-३
५. 'राहों में उड़ती जाए बिछड़े' गीत वाली फिल्म-२
८. 'जीवनमृत्यु' में धर्मेन्द्र के साथ नायिका?-२
११. 'अबके बरस ये हाल है' गीत किस म्यूजिक एलबम का है?-२
१२. 'मिजाजे गिरामी दुआ है' गीत वाली फिल्म-२
१३. संजय कपूर, शिल्पा की 'टक टका टक' गीत वाली फिल्म-३
१५. 'बिन साजन झूला झूलूँ' गीत वाली फिल्म-३
१६. फिल्म 'शोला और शबनम' में गोविंदा की नायिका कौन थी?-२
१७. 'पालकी में होके सवार' गीत वाली फिल्म-५
२० 'आंखों में नींदें ना' गीत वाली फिल्म-३
२१. जीतेंद्र, नंदा की 'देखते ही तुझे मेरे दिलने कहा' गीत वाली फिल्म-४
२४. 'सजना साथ निभाना' गीत वाली फिल्म-२
२६. लकी अली, गौरी की एक फिल्म-२
२८. 'एक बेचारा प्यार का मारा' गीत वाली फिल्म-३
३०. विनोद खन्ना, भानुप्रिया की फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली-4034

सूडोकु 4035

		5			3			
	2			9	5			
9						6		
			9				3	5
	6						7	
4	8				1			
		7						3
			2	4			9	
			8			2		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -4034 हल

2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2

शब्द पहेली -4035

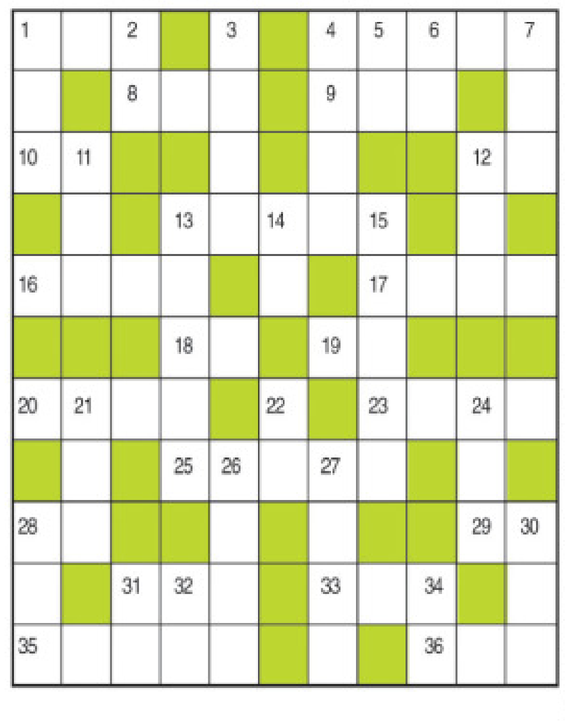

बाएँ से दाएँ

1.द्वेष,झगड़ा,रार-3
4.बुरकापोश-5
8.गागर,घड़ा-3
9.प्याऊ (उर्दू-3)
10.पैंदा,तला-2
12.बरस,वर्ष-2
13.सतत,लगातार-5
16.मजार,समाधि-4
17.उदारता,बड़प्पन-4
18.वायदा,कसम-2
19.महीना,माह-2
20.हमसफर-4
23.आदेश,आज्ञा-4
25.कहानी लेखक-5
28.गधा,गर्दभ-2
29.श्रवणेंद्रिय-2
31.बारिश,वर्षा-3
33.देवर्षि-3
35.दया करना-3,2
36.चिंतन

ऊपर से नीचे

1.कुपुत्र-3
2.अधिकार-2
3.सलाह,राय-4
4.अफसोस,खेद-4
5.शीतकालीन फसल-2
6.दलहन-2
7.ठंडा,सर्द-3
11.जिज्ञासा,उत्साह-3
12.बारिश का मौसम-3
13.धारावाही,अविराम, सीरियल-5
14.रीत,परंपरा-2
15.जीवनसाथी, हमराही-5
21.मोर-3
22.जल,नीर-2
24.पीहर-3
26.गजशाला, हाथी घर-4
27.करतब, करामात-4
28.उपभोग,खर्च-3
30.नेत्र,चक्षु,आंख-3
31.सवारी गाड़ी-2
32.रहन,गिरवी वस्तु-2
34.ताकत,जोर,बल-2

शब्द पहेली 4034 का हल

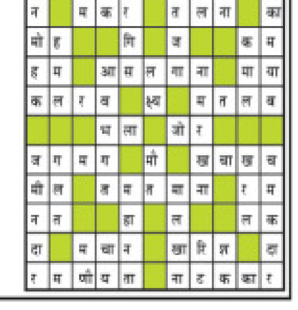

आतंकी हमले में दिवंगत सोमीसेट्टी मधुसूदन की राजकीय सम्मान से हुई अंत्येष्टि

एजेंसी

कावली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले में दिवंगत हुए सोमीसेट्टी मधुसूदन का शव कावली पहुंच गया। शव को देखते ही परिवार के सदस्य और स्थानीय लोगों में कोहराम मच गया। भारी संख्या में लोग उनके अंतिम दर्शन के लिए उमड़ पड़े। शाम पूरे राजकीय सम्मान के साथ उनके शव की अंत्येष्टि की गई। मधुसूदन का शव बुधवार की रात को चेन्नई एयरपोर्ट पर लाया गया। वहां से शव गुरुवार सुबह उनके गृहनगर कावली पहुंचा। उनका अंतिम संस्कार आज कावली में शाम के समय किया गया। इस दौरान आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण व पूर्व विधायक रामिरेड्डी प्रताप कुमार रेड्डी ने श्रद्धांजलि दी। पवन कल्याण ने पीड़ित परिवार के सदस्यों से मिलकर उन्हें सांत्वना दी। साथ ही आश्वासन दिया कि सरकार हर संभव सहायता प्रदान करेगी। उन्होंने मीडिया को बताया कि आतंकवादी जहाँ कहीं भी हो, उन्हें कड़ा दंड दिया जाना चाहिए। दिवंगत मधुसूदन के पिता तिरुपाल और माता पद्मावती शहर के बस स्टैंड पर केले और नारियल के व्यापारी हैं। उनके यहां दो बेटियाँ और मधुसूदन राव का जन्म हुआ। पेशे से इंजीनियर मधुसूदन राव 12 साल पहले बेंगलुरु में बस गए थे। वहां पर उन्होंने अपना घर भी वहीं बना लिया। गर्मी की छुट्टियों में मधुसूदन अपनी पत्नी कामाक्षी जो सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं, बेटी मेधु और बेटे दत्तू के साथ के साथ कश्मीर गए थे।

रिट्रीट सेरमनी में पाक रेंजरों से हाथ नहीं मिलाएंगे भारतीय सैनिक

चंडीगढ़। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले का असर पंजाब में स्थित पाकिस्तान की सीमाओं पर साफ दिखाई दिया। पंजाब के अटारी, हुसैनीवाला और सादकी बार्डर पर रोजाना होने वाली रिट्रीट सेरमनी के दौरान भारतीय सैनिक अब पाकिस्तान के रेंजरों के साथ न तो हाथ मिलाएंगे और न ही सीमा के गेट खुलेंगे। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत सरकार ने बुधवार की रात पाकिस्तान के खिलाफ लिए गए कड़े फैसलों के बाद अटारी में बीएसएफ के आला अधिकारियों की एक बैठक हुई। जिसके बाद बीएसएफ प्रवक्ता ने बताया कि रिट्रीट समारोह के दौरान औपचारिक प्रदर्शन को कम करने का निर्णय लिया गया है। पंजाब के अटारी, हुसैनीवाला और सादकी बार्डर पर रोजाना की तरह रिट्रीट सेरमनी किया गया लेकिन इस दौरान गेट नहीं खोले गए और न ही भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी उन्होंने बतायाकि अब आगामी फैसले तक रिट्रीट के दौरान भारतीय गार्ड कमांडर के पाकिस्तान में अपने समकक्ष गार्ड कमांडर के साथ हाथ मिलाने की रस्म को निलंबित कर दिया गया है। पहले यहां रिट्रीट के दौरान कुछ समय के लिए भारत व पाकिस्तान के गेट खोले जाते थे। इस दौरान दोनों देशों के जवानों की ओर से शक्ति व शौर्य का प्रदर्शन किया जाता था। अब बदले हुए हालातों में बीएसएफ ने आगामी आदेश तक रिट्रीट समारोह के दौरान गेट बंद रखने का फैसला किया है।

भारत-पाक सीमा पर बीएसएफ की सहायता को 5500 होमगार्ड जवान तैनात करेगी पंजाब सरकार

चंडीगढ़। भारत-पाक सीमा पर बीएसएफ के सहयोग के लिए पंजाब में पांच सौ किलोमीटर से अधिक सीमा पर पंजाब सरकार 5500 होमगार्ड जवानों को तैनात करेगी। इसके लिए होमगार्डों की भर्ती को राज्य सरकार ने मंजूरी दे दी है। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने पुलिस विभाग के आला अधिकारियों के साथ बैठक के बाद इस भर्ती को मंजूरी दे दी। बैठक में मुख्यमंत्री मान ने पहलगाम में हाल ही में आतंकी हमले के मद्देनजर राज्य के प्रति शत्रु ताकतों के नापाक मंसूबों को रोकने के लिए प्रभावी दूसरी रक्षा पंक्ति स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पंजाब में सुरक्षा घेरे को बढ़ाने के लिए पंजाब पुलिस के बॉर्डर विंग में 5500 जवानों को राज्य के सात सीमावर्ती जिलों में तैनात किया जाएगा। मुख्यमंत्री मान ने कहा कि दूसरी सुरक्षा पंक्ति स्थापित करने का यह प्रस्ताव अंतरराष्ट्रीय सीमा पर बीएसएफ के जाल से बचने वाले किसी भी तत्व को पकड़ने में मदद करेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस कार्य की विशालता को देखते हुए राज्य सरकार को केंद्र से सहायता की आवश्यकता होगी, जिसके लिए वे जल्द ही केंद्रीय गृह मंत्री से मुलाकात करेंगे।

कुणाल कामरा को कोर्ट से राहत, नहीं होगी गिरफ्तारी

मुंबई। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नाम लिए बगैर उन पर की गई टिप्पणी मामले में स्टैंड-अप कमीडियन कुणाल कामरा को बॉम्बे हाई कोर्ट से राहत मिली है। कोर्ट ने कामरा की गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है। बॉम्बे हाई कोर्ट ने मुंबई पुलिस को आदेश दिया कि उनके 'गद्दार' कमेंट को लेकर उनके खिलाफ दर्ज एफआईआर मामले में गिरफ्तार न किया जाए। इसके साथ ही कोर्ट से मुंबई पुलिस को चेन्नई में कुणाल कामरा से पूछताछ की अनुमति भी मिली है। अब मुंबई पुलिस चेन्नई जाकर स्थानीय पुलिस की मदद से कामरा का बयान दर्ज करेगी। जस्टिस सारंग कोतवाल और एसएम मोदक की बेंच ने ये आदेश सुनाया है। बेंच ने कहा कि खार में दर्ज मामले में याचिकाकर्ता को गिरफ्तार नहीं किया जाएगा। मामले की जांच जारी रह सकती है। जांच एजेंसी कामरा का बयान चेन्नई में स्थानीय पुलिस की सहायता से पूरी कर सकती है।

पहलगाम नरसंहार के दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा : केंद्रीयमंत्री सुकांत मजूमदार

एजेंसी

कोलकाता। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए पश्चिम बंगाल के आईबी अधिकारी मनीष रंजन मिश्रा की अंतिम यात्रा में शामिल हुए केंद्रीय मंत्री और पश्चिम बंगाल भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने आतंकियों को कड़ी चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि इस नृशंस हत्याकांड के पीछे जो भी आतंकवादी और उनके सरगना शामिल हैं, उन्हें किसी भी हाल में बख्शा नहीं जाएगा।मनीष मिश्रा उन तीन पर्यटकों में शामिल हैं, जिनकी आतंकियों ने बेरहमी से हत्या कर दी थी।

सुबह उनका पार्थिव शरीर रांची एयरपोर्ट लाया गया, जहां से उनकी पत्नी शव लेकर पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिला स्थित झलदा के लिए रवाना हुईं। झलदा मिश्रा का पैतृक निवास स्थान है, जहां उनका जन्म और स्कूली जीवन बीता था।जब उनका पार्थिव शरीर झालदा पहुंचा, तो पूरे नगर के लोग सड़कों पर उतर

आए और शव वाहन के पीछे चलने लगे। स्थानीय लोगों ने मनीष मिश्रा की याद में सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तक 12 घंटे का बंद भी रखा।झलदा में आयोजित अंतिम यात्रा में सुकांत मजूमदार भी मौजूद रहे। उन्होंने कहा, पहलगाम में जो हुआ वह अत्यंत भयावह था। मैं उस समय संयोगवश पुरुलिया में ही था, इसलिए इस बहादुर सपूत को श्रद्धांजलि देने आया। पूरे देश को यह जानना चाहिए कि पर्यटकों को चुन-चुन कर मारा गया। मनीष मिश्रा की हत्या इसलिए कर दी गई क्योंकि वे 'कलमा' नहीं पढ़ सके। इसके बावजूद कुछ नेता आज भी कह रहे हैं कि आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता। ऐसे नेता सच्चाई से मुंह चुरा रहे हैं।मनीष मिश्रा फिलहाल हैदराबाद में तैनात थे और वहीं अपने परिवार - पत्नी, बेटे और बेटी - के साथ रहते थे। उनका पहले झारखंड की राजधानी रांची में पदस्थापन था, हाल ही में उन्हें हैदराबाद स्थानांतरित किया गया था।

परिवार के सदस्यों ने बताया कि मनीष 15 अप्रैल को अपने परिवार के साथ एक लंबी छुट्टी पर हैदराबाद से निकले थे। उनका उद्देश्य माता वैष्णो देवी मंदिर दर्शन करना भी था, लेकिन कश्मीर यात्रा के दौरान यह हमला हो गया। सरकारी एजेंसियां अब इस हमले की गहराई से जांच कर रही हैं और सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इस बर्बर हमले के गुनहगारों को हर हाल में सजा दी जाएगी।

छत्तीसगढ़ की अंतरराज्यीय सीमा के जंगल में हुई मुठभेड़ में तीन महिला नक्सली ढेर

एजेंसी

जगदलपुर। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के दक्षिण पश्चिम सीमावर्ती क्षेत्रान्तर्गत अंतरराज्यीय सीमा के जंगल में डीआरजी, एसटीएफ, कोबरा, बस्तर फाईटर, सीआरपीएफ के संयुक्त अभियान में तीन महिला नक्सली मारे गए हैं। सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच अभी मुठभेड़ चल रही है। मुठभेड़ में तीन वर्दीधारी महिला नक्सलियों के मारे जाने की पुष्टि बस्तर आईजी सुंदरराज पी. ने की है। आईजी सुंदरराज पी. ने बताया कि इलाके में नक्सलियों के एकत्र होने की सूचना पर डीआरजी, एसटीएफ, कोबरा, बस्तर फाईटर, सीआरपीएफ कीसंयुक्त टीम को रवाना किया गया है। गुरूवार सुबह से ही सुरक्षाबल के जवानों और नक्सलियों के बीच जबरदस्त मुठभेड़ चल रही है। उन्होंने बताया कि बीजापुर जिले और तेलंगाना राज्य की सीमा में सुरक्षाबल के जवानों और नक्सलियों के बीच चल रही मुठभेड़ में तीन वर्दीधारी महिला नक्सली मारी गई हैं। मुठभेड़ में तीनों वर्दीधारी महिला नक्सलियों के शवों के साथ जवानों ने बड़ी मात्रा में हथियार, विस्फोटक और अन्य

सामान भी बरामद किया है। आईजी सुंदरराज पी ने बताया कि पुलिस की प्रारंभिक पहचान में मुठभेड़ में मारी गई महिला नक्सली पीएलजीए बटालियन नम्बर 1 की सदस्य हैं। पुलिस को मुठभेड़ स्थल में मिले निशान से कई नक्सलियों के मारे जाने एवं घायल होने की संभावना है। सुरक्षाबल मारे गई तीनों महिला नक्सलियों की शिनाख्त करने की कोशिश कर रही है।

पहलगाम हमले पर ओवैसी की मुस्लिमों से अपील, नमाज़-ए-जुम्मा में काली पट्टी बांधकर दें एकजुटता का संदेश

एजेंसी

नई दिल्ली। पहलगाम आतंकी हमले के मद्देनज़र एआईएमआईएम के नेता और सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने देश के मुसलमानों से एक विशेष अपील की है। उन्होंने कहा है कि शुक्रवार को नमाज़-ए-जुम्मा अदा करने वाले अपनी बांह पर काली पट्टी बांधकर जाएं। एक एक्स पोस्ट में ओवैसी ने कहा कि इससे एक स्पष्ट संदेश दिया जा सकेगा कि भारतीय मुसलमान विदेशी ताक़तों को देश की शांति और एकता को नुकसान नहीं पहुंचाने देंगे। ओवैसी ने कहा, इस हमले की वजह से कुछ शर-पसंद ताक़तों को हमारे कश्मीरी भाइयों को निशाना बनाने का मौक़ा मिल गया है। मैं तमाम भारतीयों से अपील करता हूँ कि वो दुश्मनों की इस चाल में न फँसें। हम सबको मिलकर देश की एकता और भाईचारे को मजबूत करना है।

आतंकवाद का धर्म सिर्फ इस्लाम, हिंदू करें शस्त्र पूजा : शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद

एजेंसी

ग्वालियर। उत्तराखंड के जोशीमठ स्थित ज्योतिषपीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने पहलगाम आतंकी हमले पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि इस हमले ने साबित कर दिया कि आतंकवाद का धर्म इस्लाम है। आतंकियों ने धर्म पूछकर निर्दोषों की हत्या की। उन्होंने पाकिस्तान की संलिप्तता पर सवाल उठाते हुए जवाबदेही तय करने और हिंदुओं को शास्त्र के साथ शस्त्र प्रशिक्षण लेने की वकालत की।जगद्गुरु शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद अल्प प्रवास पर ग्वालियर पहुंचे थे। यहां उन्होंने रामबाग कॉलोनी स्थित मंशापूर्ण हनुमान मंदिर में दर्शन के बाद पत्रकार वार्ता के जरिए पहलगाम आतंकी हमले, औरंगजेब, बागेश्वर

पीठाधीश्वर द्वारा बसाए जा रहे हिंदू गांव और अन्य मुद्दों पर अपनी बात रखी। पहलगाम हमले को लेकर उन्होंने कहा कि अभी तक आतंकवाद का कोई धर्म नजर नहीं आता था। लेकिन इस घटना के बाद अब स्पष्ट हो चुका है कि आतंकवाद का सिर्फ एक ही धर्म है वो इस्लाम है। यदि ऐसा नहीं है तो अभी तक मुस्लिम नेताओं और धर्म गुरुओं को सामने आना चाहिए था। ऐसे आतंकी मुसलमानों का बहिष्कार करने के बयान सामने आने चाहिए थे। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हो रहा है। इससे स्पष्ट हो गया है कि आतंक का धर्म सिर्फ इस्लाम है। शंकराचार्य ने कहा कि आतंकियों ने धर्म के आधार पर हत्याएं कीं, जो आतंकवाद के धार्मिक चरित्र को उजागर करता है। घटना के बाद से लगातार कहा जा रहा है कि इस हमले के पीछे पाकिस्तान का हाथ है। लेकिन भारत के पास इसके क्या सबूत है, यह अभी तक साफ नहीं किया गया है। इस तरह की घटनाएं को लेकर अभी तक जिम्मेदारी तय नहीं हो पाई है कि कहां लापरवाही हुई। इस घटना में इंटेलिजेंस का बड़ा फैलियर हुआ है। जब तक कोई ठोस कड़ी कार्रवाई नहीं की जाएगी, तब तक इस तरह के आतंकी हमले होते रहेंगे।

मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना में कन्या को बैंक खाते में अब मिलेंगे 60 हजार : सीएम योगी

एजेंसी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना का लाभ पाने के लिए निर्धारित 02 लाख रुपये वार्षिक आय सीमा को बढ़ाकर 03 लाख रुपये करने की आवश्यकता जताई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सामूहिक विवाह योजना वंचित वर्ग के लिए बड़ा संबल बनी है। अधिकाधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें, इसके लिए यह आवश्यक है कि पात्रता के लिए निर्धारित अधिकतम वार्षिक आय सीमा को बढ़ाया जाए।

समाज कल्याण विभाग की समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि राज्य सरकार ने नए वित्तीय वर्ष से सामूहिक विवाह योजना के अंतर्गत पात्र नवविवाहित जोड़ों को 51 हजार रुपये के स्थान पर 01 लाख रुपये करने का निर्णय लिया। 01 लाख रुपये की इस राशि में से 60 हजार रुपये कन्या के बैंक खाते में जमा किये जाएं जबकि नवविवाहित जोड़े को 25 हजार रुपये के उपहार दिए जाने चाहिए, शेष 15 हजार रुपये वैवाहिक समारोह में व्यय किये जायें। मुख्यमंत्री ने इस व्यवस्था को तत्काल लागू करने के निर्देश दिए हैं। वहीं, वृद्धावस्था पेंशन की अद्यतन स्थिति की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि यह

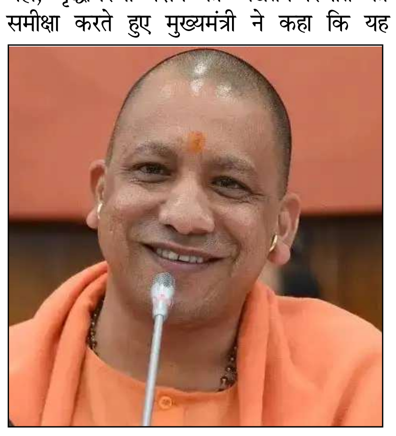

सुनिश्चित किया जाए कि एक भी पात्र वृद्धजन, पेंशन से वंचित न रहें। योजना के और बेहतर क्रियान्वयन के लिए इसे फैमिली आईडी से जोड़ा जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि फैमिली आईडी से जुड़ने के बाद पात्रता की श्रेणी का कोई भी निराश्रित वृद्धजन जैसे ही 60 वर्ष का होगा, उसे तत्काल पेंशन की राशि मिलने लग जायेगी। मुख्यमंत्री ने विभागीय अधिकारियों को फैमिली आईडी के माध्यम से वृद्धावस्था पेंशन कवरेज बढ़ाने के लिए आवश्यक तकनीकी व्यवस्था करने के निर्देश दिए।

बता दें कि इस योजना में अभी तक दाम्पत्य जीवन में खुशहाली एवं गृहस्थी की स्थापना के लिए कन्या के खाते में 35,000 रुपये की धनराशि का अनुदान एवं विवाह संस्कार के लिए आवश्यक सामग्री यथा कपड़े, बिछिया, पायल, बर्तन आदि 10,000 रुपये की धनराशि से क्रय करते हुए प्रदान किया जाता है। इसके साथ ही प्रत्येक जोड़े के विवाह आयोजन पर 6,000 रुपए की धनराशि व्यय किये जाने की व्यवस्था है। इस प्रकार योजनान्तर्गत एक जोड़े के विवाह पर कुल 51,000 रुपये की धनराशि की व्यवस्था है जो अब बढ़कर एक लाख रुपये हो गई है।

कश्मीर में आतंकियों से लोहा लेते बलिदान हुए बंगाल के झंटू अली शेख, परिजनों से मिले विधायक

एजेंसी

कोलकाता। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर ज़िले में आतंकियों के साथ मुठभेड़ में पश्चिम बंगाल के नदिया ज़िले के पाथरघाटा गांव निवासी सेना के कमांडो हवलदार झंटू अली शेख वीरगति को प्राप्त हो गए। सेना की विशेष बल इकाई छह पैरा में तैनात झंटू अली डुडू-बसंतगढ़ क्षेत्र में चल रहे तलाशी अभियान के दौरान आतंकियों से लोहा लेते हुए बलिदान हुए। तृणमूल विधायक तपस कुमार साहा बलिदान देने वाले जवान के घर पहुंचे और परिजनों से मुलाकात कर संवेदना व्यक्त की। सेना के जवान का बलिदान होने की जैसे ही जानकारी मिली तो गांव पाथरघाटा में शोक की लहर दौड़ गई। परिजनों और ग्रामीणों ने नम आंखों से अपने इस वीर सपूत को याद किया। एक स्थानीय बुजुर्ग ने कहा कि उसका बचपन से ही सेना में जाकर देश की सेवा करने का सपना था। आज वह उस सपने को निभाते हुए देश के लिए बलिदान हुआ है। उधर, भारतीय सेना ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर श्रद्धांजलि देते हुए लिखा व्हाइट नाइट कोर और समस्त सैन्य बल हवलदार झंटू अली शेख को नमन करते हैं, जिन्होंने आतंकियों के खिलाफ ऑपरेशन में सर्वोच्च बलिदान दिया। उनकी वीरता और समर्पण हमेशा याद किए जाएंगे। हम इस दुःख की घड़ी में उनके परिवार के साथ हैं।अली शेख तीन भाई थे। उनके बड़े भाई रफीकुर शेख भी भारतीय सेना में कार्यरत हैं और फिलहाल कश्मीर में ही तैनात हैं। वही सबसे पहले इस दुखद समाचार से अवगत हुए और उन्होंने ही परिवार को यह जानकारी दी।

पहलगाम हमले को लेकर विवादित बयान देने वाले एआईयूडीएफ विधायक अमीनुल गिरफ्तार

एजेंसी

गुवाहाटी। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले को लेकर विवादित बयान देने वाले एआईयूडीएफ विधायक अमीनुल इस्लाम को असम पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। असम पुलिस ने यह जानकारी दी। असम पुलिस ने सोशल मीडिया एक्स पर बताया कि धींग विधायक अमीनुल इस्लाम द्वारा सार्वजनिक रूप से भ्रामक और भड़काऊ बयान दिया गया था जो वायरल हो गया था। जिससे प्रतिकूल स्थिति पैदा होने की संभावना थी। नागांव पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया और विधायक को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने बताया कि विधायक के खिलाफ नागांव पुलिस थाने में धारा 152/196/197(1)/113(3)/352/353 बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया गया। 23 अप्रैल

को एक रैली के दौरान विधायक इस्लाम ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह पर आरोप लगाते हुए कहा था कि उन्होंने इन हमलों का राजनीतिक फायदा उठाने के लिए इस्तेमाल किया। इस बयान के बाद राज्यभर में विधायक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग तेज हो गई थी। इधर, एआईयूडीएफ प्रमुख मौलाना बदरुद्दीन अजमल ने विधायक के बयान से पार्टी को अलग करते हुए कहा कि मैंने सुना कि अमीनुल इस्लाम को उनके बयान को लेकर गिरफ्तार किया गया है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। हालांकि उन्होंने ये भी कहा कि ये उनके निजी विचार हैं, पार्टी का इससे कोई लेना-देना नहीं है। हमारी पार्टी राज्य सरकार के साथ खड़ी है, क्योंकि आतंकवाद का कोई धर्म या जाति नहीं होता। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने पुलिस की कार्रवाई पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए एक्स पर कहा कि असम सरकार उन सभी लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगी जो पहलगाम में हुए भयावह, पाकिस्तान प्रायोजित आतंकी हमले का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बचाव करने का साहस करेंगे।

छत्तीसगढ़ के नारायणपुर में दस लाख के इनामी खकुतुल एरिया कमेटी के चार नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण

एजेंसी

नारायणपुर। नारायणपुर जिले में चलाये जा रहे माड़ बचाओ नक्सल उन्मूलन अभियान के तहत छत्तीसगढ़ शासन की नक्सल उन्मूलन नीति नियद नेल्लानार के वृहत प्रचार-प्रसार का सकारात्मक असर देखने को मिला है। बड़े कैडर के नक्सली लगातार आत्मसमर्पण कर रहे हैं। अबूझमाड़ क्षेत्र में लगातार खोले जा रहे सुरक्षा कैंप एवं पुलिस के बढ़ते दबाव के फलस्वरूप नक्सली संगठन के खकुतुल एरिया कमेटी अन्तर्गत सक्रिय 10 लाख के इनामी चार नक्सलियों ने पुलिस अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। नारायणपुर पुलिस अधीक्षक कार्यालय के अनुसार आत्मसमर्पित नक्सलियों में तीन लाख के इनामी 23 वर्षीय समीर कश्य(पद- माड़ डिविजन कम्यूनिकेशन टीम कमाण्डर), निवासी भटनार थाना कोहकामेटा

जिला नारायणपुर, पांच लाख के इनामी 30 वर्षीय बैसाखू नुरेटी उर्फ देवलाल उर्फ अमित(पद- प्रेस टीम कमाण्डर एसीएम), निवासी सितरम थाना बांदे जिला एवं एक लाख के इनामी 18 वर्षीय कमल सिंह(बिनागुण्डा जन मिलिशिया पार्टी सदस्य), निवासी उसेबेड़ा थाना बांदे जिला कांकेर, एक लाख की इनामी 30 वर्षीय फुलमति उर्फ फूलो (एलओसएस व प्रेस टीम सदस्य), निवासी निवासी सितरम कोहकामेटा जिला नारायणपुर शामिल हैं। इन नक्सलियों ने नारायणपुर एसपी प्रभात कुमार, सुशील कुमार नायक अति. पुलिस अधीक्षक नारायणपुर, मो औबेदुल्लाह खान टूआई सी 41वी वाहनी आईटीबीपी, उप पुलिस अधीक्षक, डॉ. प्रशांत देंवागन, सुश्री अमृता पैकरा के समक्ष आत्मसमर्पण किया है। नारायणपुर एसपी प्रभात कुमार ने बताया कि आत्मसमर्पित नक्सलियों को बतौर प्रोत्साहन राशि 50-50 हजार का चेक प्रदाय किया गया एवं उन्हें नक्सल उन्मुलन नीति के तहत् मिलने वाली सभी सुविधाएं दी जाएंगी ।उल्लेखनीय है कि वर्ष 2025 में जिला नारायणपुर अन्तर्गत अब तक कुल 101 बड़े-छोटे कैडर के नक्सली आत्मसमर्पण कर चुके हैं।

भाजपा नेता रतन दुबे की हत्या मामले में एनआईए ने कांग्रेस के पदाधिकारी शिवानंद नाग को किया गिरफ्तार

एजेंसी

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के तीन दिन पहले नारायणपुर में हुई भाजपा नेता रतन दुबे की हत्या के मामले में एनआईए ने नारायणपुर जिला कांग्रेस कमेटी के महासचिव शिवानंद नाग को रायपुर के मौहदापारा से गिरफ्तार किया है। मामले में एक शूटर समेत 6 आरोपित पहले ही गिरफ्तार किए जा चुके हैं। रायपुर पुलिस के एक अधिकारी के मुताबिक एनआईए की टीम कांग्रेस नेता शिवानंद नाग को जगदलपुर की एनआईए कोर्ट में पेश करने जा रही है।उल्लेखनीय है कि नक्सलियों ने कुल्हाड़ियों से हमला कर 4 नवंबर 2023 को नारायणपुर जिले के कौशलनार गांव के साप्ताहिक बाजार में चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा नेता रतन दुबे की हत्या कर दी थी। बाजार में वे नुक्कड़ सभा को संबोधित कर रहे थे। इसी दौरान उसकी हत्या कर दी गई। रतन दुबे पर किए गए हमले का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार एनआईए ने 23 फरवरी 2024 को स्थानीय पुलिस से इस मामले की जांच अपने हाथ में ली। शिवानंद नाग पर आरोप है कि नक्सलियों से मिलीभगत कर हत्या की साजिश रची थी। इसके बाद पूरे हत्याकांड की जांच राष्ट्रीय जांच एजेंसी यानी एनआईए ने अपने हाथ में ली। 5 जून 2024 को एनआईए ने एक आरोपित धन सिंह कोर्राम के खिलाफ पहली चार्जशीट दाखिल की थी।

सामूहिक विवाह योजना में कन्या को बैंक खाते में अब मिलेंगे 60 हजार रुपयेः मुख्यमंत्री

एजेंसी

लखनऊ । मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना का लाभ पाने के लिए निर्धारित 02 लाख रुपये वार्षिक आय सीमा को बढ़ाकर 03 लाख रुपये करने की आवश्यकता जताई है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि सामूहिक विवाह योजना वंचित वर्ग के लिए बड़ा संबल बनी है। अधिकाधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें, इसके लिए यह आवश्यक है कि पात्रता के लिए निर्धारित अधिकतम वार्षिक आय सीमा को बढ़ाया जाए। समाज

कल्याण विभाग की समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि राज्य सरकार ने नए वित्तीय वर्ष से सामूहिक विवाह योजना के अंतर्गत पात्र नवविवाहित जोड़ों को 51 हजार रुपये के स्थान पर 01 लाख रुपये करने का निर्णय लिया है। 01 लाख रुपये की इस राशि में से 60 हजार रुपये कन्या के बैंक खाते में जमा किये जाएं, जबकि नवविवाहित जोड़े को 25 हजार रुपये के उपहार दिए जाने चाहिए, शेष 15 हजार रुपये वैवाहिक समारोह में व्यय किये जायें। मुख्यमंत्री ने इस व्यवस्था को तत्काल लागू करने के निर्देश दिए हैं। वहीं, वृद्धावस्था पेंशन की अद्यतन स्थिति की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि एक भी पात्र वृद्धजन, पेंशन से वंचित न रहें। योजना के और बेहतर क्रियान्वयन के लिए इसे फैमिली आईडी से जोड़ा जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि फैमिली आईडी से जुड़ने के बाद पात्रता की श्रेणी का कोई भी निराश्रित वृद्धजन जैसे ही 60 वर्ष का होगा, उसे तत्काल पेंशन की राशि मिलने लग जायेगी। मुख्यमंत्री ने विभागीय अधिकारियों को फैमिली आईडी के माध्यम से वृद्धावस्था पेंशन कवरेज बढ़ाने के लिए आवश्यक तकनीकी व्यवस्था करने के निर्देश दिए।

पृष्ठासन से कहें थकान को अलविदा

तिर्यक कटिचक्रासन और पृष्ठासन ऐसे ही आसन हैं जिन्हें साथ-साथ किया जा सकता है. इससे संतुलन बना रहता है और शरीर के हर अंग की मालिश भी हो जाती है।

कैसे करें?

- सीधे खड़े हो जाएं। दोनों पैरों में डेढ़ फुट का अंतर रखें। दोनों हाथों की अंगुलियों को आपस में गूंथ लें. अब सांस भरें और दोनों बाजुओं को सिर के ऊपर लाएं।
- बाजू सीधा रखें। कलाई को पलटें ताकि हथेली का रूख आकाश की ओर रहे। अब सांस छोड़ते हुए कमर से आगे 90 डिग्री के कोण पर झुकें। सामने हथेली की ओर देखें। सांस बाहर रोककर रखें।
- अपने शरीर और बाजुओं को ज्यादा से ज्यादा दाईं ओर घुमाएं। इसी तरह बाईं ओर घुमाएं। सांस भरें और सीधे खड़े हो जाएं। अब सांस निकालते हुए हाथों को नीचे कर लें। यह एक पूरा चरण है।

पृष्ठासन

- नियमित अभ्यास से पैरों की मॉसपेशियां मजबूत बनती हैं।

आसन प्रयोग

- सीधे खड़े हो जाएं। दोनों पैरों में डेढ़ फुट का अंतर रखें। पैरों को समानांतर नहीं रखें। दोनों पैरों की अंगुलियों को थोड़ा बाहर की ओर मोड़ लीजिए।
- दोनों हाथों को नितम्ब के नीचे यानी जंघाओं के पिछले भाग पर सटाकर रखें। सांस भरें और सांस छोड़ते हुए घुटनों को थोड़ा मोड़ें। कमर से पीछ झुकते जाएं और हाथों को नीचे सरकाते जाएं।
- पीछे झुकते हुए अगर आप हाथों को घुटनों के पिछले भाग तक पहुंचा सकें तो बहुत अच्छा है। अभ्यास हो जाने पर आप अपने हाथ टखनों तक पहुंचा सकते हैं। लेकिन पीछे झुकने में जल्दबाजी नहीं करें और संतुलन बनाकर रखें।
- पृष्ठासन करने समय सिर को पीछे की ओर ढीला छोड़ दें। इस अवस्था में कुछ सेकेंड रुकने का प्रयास करें।
- सांस भरें और फिर सीधे खड़े हो जाएं। यह पूरा एक चरण है। तीन बार इसका अभ्यास करना चाहिए।
- पेट में अल्सर, उच्च रक्तचाप, श्याटिका या स्लिप डिस्क की समस्या होने पर पृष्ठासन का अभ्यास नहीं करें।

ध्यान दें

पांच बार इस इस आसन का अभ्यास करें। श्याटिका या स्लिप डिस्क की समस्या होने पर आगे की ओर झुकने वाले आसन नहीं करें। तिर्यक कटिचक्रासन कंधे, पीठ और कमर की मांसपेशियों को व्यायाम देता है और उनकी शक्ति बढ़ाता है। इस आसन के नियमित अभ्यास से कमर की जकड़न दूर होती है। शारीरिक और मानसिक तनाव कम करने में भी यह आसन सहायक है।

क्या है लाभ?

पृष्ठासन करने से पेट की मांसपेशियों में खिचाव आता है। इससे पेट के सभी अंगों की कार्यक्षमता बढ़ती है और स्फूर्ति आती है। नियमित अभ्यास से पीठ और कमर के हिस्से में रक्त का संचार बढ़ जाता है। पीठ और कमर की जकड़न दूर होती है। तंत्रिकाओं को ताकत मिलती है और ताजगी की अनुभूति होती है। साथ ही मानसिक संतुलन बढ़ता है।

व्यक्तित्व से स्वभाव बनता है विनम्र या आक्रामक

आपका विनम्र या आक्रामक होना आपके व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। यह खुलासा एक नए सर्वे में हुआ है। न्यू साउथ वेल्स विश्वविद्यालय के सर्वेकर्ता पीटर बिरो कहते हैं कि अक्सर एथलीट्स या शारीरिक रूप से सक्रिय रहने वाले लोगों को आक्रामक और सामाजिक बताया जाता है जबकि सुस्त रहने वाले लोगों के बारे में कहा जाता है कि वे सामाजिक गतिविधियों के प्रति अनभिज्ञ रहते हैं या दब्बू होते हैं। जर्नल 'ट्रेंड्स इन ईकोलॉजी एंड इवोल्यूशन' के मुताबिक बिरो के नए अध्ययन में शरीर की चयापचय दर और व्यक्तित्व के बीच एक सम्बंध देखा गया है। चयापचय क्रिया में भोजन ऊर्जा में परिवर्तित होता है। इस सर्वे में मालूम हुआ है कि विनम्र या आक्रामक होना चयापचय क्षमता से सम्बंधित होता है।

डैंड्रफ से परेशान हैं अपनाएं ये नुस्खें...

खूबसूरत बालों की इच्छा तो हर किसी की होती है लेकिन बदलते मौसम में अगर ध्यान न दिया जाए तो आपके बालों को नजर लग सकती है रुसी की। सही समय पर अगर रुसी से बालों को न बचाया जाए तो ये आपके बालों के लिए बेहद खतरनाक भी साबित हो सकती है इसलिए अब हो जाइए तैयार अपने बालों की देखभाल करने के लिए। रेशमी, काले और घने बाल की तमन्ना हर किसी को रहती है। बालों को सुंदर बनाए रखने के लिए लोग हजारों रुपए तक खर्च कर डालते हैं। कभी बालों का कलर बदलना तो कभी उसके लिए नए-नए प्रयोग करना। सुंदर बालों की चाहत रखने वाले अपनी इच्छा पूरी करने के लिए लगातार कुछ न कुछ करते रहते हैं। लेकिन इस दौरान लोग जिस खास बात का ध्यान नहीं देते हैं वो है बालों में जमने वाली रुसी। रूसी की वजह से देखते ही देखते बालों का हाल बुरा होने लगता है। बाल झड़ने लगते हैं और फिर आपकी चाहत साल दर साल गंजेपन में तब्दील होने लगती है।

वाणी ही है सुख दुःख की वजह

हमारे जीवन में वाणी की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। वेदों के गूढ़ अर्थों से परिपूर्ण सूत्र ही कठिन समय में आपके सबसे विश्वसनीय साथी हो सकते हैं। देखा जाए तो अक्सर लोगों की शारीरिक कमजोरियों या दूसरे कारणों से बहुत जल्दी गुस्सा आ सकता है, इन व्याधियों की वजह से आप बहुत जल्दी खीझ सकते हैं। इसलिए रोज सुबह जब आप अपनी दिनचर्या तय करते हैं, तब सबसे पहले यह तय करें कि किसी से भी निरर्थक वार्तालाप नहीं करेंगे, जो कुछ कहेंगे वह अर्थपूर्ण होगा, कोई बात यदि पसंद नहीं आएगी तो उसे शालीनता से अस्वीकृत करेंगे-चिढ़ कर, खीझ कर नहीं।

विख्यात दार्शनिक इमर्सन ने कहा है-संसार को दुखमय बनाने वाली अधिकांश व्याधियां वाणी के विकार से उत्पन्न होती हैं। विश्व का इतिहास इसका साक्षी है कि गलत बातों ने गजब का कहर ढाया है इसीलिए कहा भी जाता है कि बाण का, तीर का घाव तो भर जाता है, लेकिन वाणी का घाव कभी नहीं भरता।

महाभारत की पृष्ठभूमि में जो प्रधान कारण गिनाए जाते हैं, उनमें द्रौपदी द्वारा दुर्योधन को दिया गया यह ताना भी शामिल है कि- अंधे का पुत्र अंधा। वाणी के इस महत्व के कारण ही वेदों में ऋषियों ने वाणीगत व्यवहार के अमर सूत्र दिए हैं- सत्यं वद, प्रियं वद, मधुरं वद् अर्थात सत्य बोलें, प्रिय बोलें, मधुर बोलें।

रोगी अथवा उनकी देखरेख करने वालों के लिए वाणी की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण हो जाती है। वेदों के ये तीन सूत्र ही इस समय में ऐसे लोगों सबसे विश्वसनीय साथी हो सकते हैं।दरअसल, रोगी शारीरिक कमजोरियों या दूसरे कारणों से बहुत जल्दी गुस्से में आ सकता है, वह बहुत जल्दी खीझ सकता है। इसलिए उनके प्रति देखरेख करने वालों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। अत: उन्हें संवेदनशील होने के नाते सबसे पहले यह तय करना होगा कि किसी भी हालत में रोगी से भी निरर्थक वार्तालाप नहीं करें, जो कुछ कहें वह अर्थपूर्ण हो, कोई बात यदि वह पसंद नही करता तो उसे शालीनता से अस्वीकृत करें- चिढ़ कर, खीझ कर नहीं।

घर में रोगी के और सगे-संबंधी हो सकते हैं, वे उनसे तरह-तरह के सवाल, जिज्ञासाएं कर सकते हैं। यदि वे बच्चे हैं तो जाहिर है कि वे नहीं जानते कि अस्वस्थ्य व्यक्ति की मनोदशा क्या है, इसलिए वे किसी भी वक्त कुछ भी पूछ सकते हैं। ऐसे में रोगी के हितैषी होने के नाते आपको ही तय करना है कि आप तो उनकी बातों का कैसा रूख देते हैं और क्या जवाब दें, जिससे अनावश्यक तनाव न उत्पन्न होने पाए। यदि आप उनके मनोभाव को समझकर उनकी बातों का रोचक ढंग से जवाब देने की कोशिश करते हैं तो रोगी के साथ साथ ये बच्चे भी आपके मुरीद बन जाएंगे, आप इनकी जरूरत बन जाएंगे। यदि आपने ऐसा करने के बजाय उनकी जिज्ञासाओं के प्रति उपेक्षा का रवैया अपनाया या उन्हें झिड़कने की कोशिश की तो आपको दोहरी मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

रोगग्रस्त व्यक्ति के परिजन होने के नाते इस माहौल का असर सिर्फ बच्चों और आप तक सीमित नही रहता है, बल्कि प्राय: यह फैलते हुए आपके दूसरे रिश्तों को भी अपने घेरे में ले लेता है, क्योंकि आखिर ये सभी रिश्तेदार आपके ही परिवार का अहम हिस्सा होते हैं। शुरू-शुरू में आपके अपने इन बातों को नजरंदाज कर सकते हैं, लेकिन हर बात की एक सीमा होती है। यदि आपका कडा बर्ताव या बातचीत का ढंग नकारात्मक ही बना रहा तो एक दिन वे भी आपसे ऐसी बात कह सकते हैं, जो शायद आपको अच्छी न लगे।

यह भी देखने में आता है कि गंभीर बीमारियों से ग्रस्त रोगियों में से बहुत से लोग प्राय: नकारात्मक व्यवहार करने लगते हैं और ऐसी बातें करते हैं जिन्हें दूसरे लोग अशुभ मानते हैं, जैसे- अब अपना तो क्या, चार दिन के मेहमान हैं, अब तो ऊपर वाले के बुलावे का इंतजार है, जब बुला ले। वास्तविकता में जीवन और मृत्यु सब ईश्वर के हाथ में हैं, इसलिए ऐसी बातें करने वालों को ढांढ़स बंधाएं। उन्हें भरोसा दिलाएं कि जब तक जीवन है, तब तक जीवन की ही बात होनी चाहिए, जीवन की ही चर्चा करनी चाहिए। जहां तक मौत का सवाल है तो आप नहीं चाहेंगे, तब भी जब उसे आना है वह आ जाएगी। ऐसे में उसकी चर्चा कर, उनकी खूबियां बताकर बातों को शालीनता से पाजिटिव पुट देना सार्थक पहल होगी। माहौल को बोझिल बनने से बचाएं। दरअसल, पूरी जीवंतता आपकी वाणी में भी मुखर होनी चाहिए।

अपनी वाणी को रूग्ण की खुशी का कारण बनाएं, तकलीफ का नहीं। कोशिश करें कि आपकी वाणी मधुर हो और उसमें मनोविनोद भी शामिल हो।

यदि आपकी वाणी में रस छलकेगा तो आप कठिन क्षणों से आसानी से पार पा लेंगे। इसी अनुपात में आप देखेंगे कि आपके परिवार की तकलीफें भी कम होती जाएंगी, क्योंकि जब आप अच्छा बोलेंगे, अच्छे ढंग से बोलेंगे तो आपको इसका प्रतिसाद भी वैसा ही मिलेगा। वैसे भी आज की आपा-धापी भरी जिंदगी में लोगों के बोलने का ढंग भी तनाव ग्रस्त हो गया है। इसलिए वाणी के महत्व को समझें और उसे बुद्धिमानी से उपयोग करें।

यदि कम करना हो कोलेस्ट्रॉल का स्तर...

यदि आपको कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम करना है तो अखरोट और बादाम जैसी सूखी मेवा खूब खाएं। एक नए अध्ययन में स्पष्ट हुआ है कि इससे रक्त में कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम होता है।

हृदय संबंधी बीमारियों के खतरे को कम करने और रक्त में लिपिड (वसा व कोलेस्ट्रॉल) का स्तर कम करने की अखरोट, बादाम व मूंगफली जैसी सूखी मेवा की पोषण संबंधी अद्वितीय विशेषताओं के चलते इन पर ज्यादा अध्ययन किया जा रहा है। इस तरह की सूखी मेवा में पौधों के प्रोटीन, वसा (खासकर असंतृप्त वसा अम्ल), खाने योग्य रेशे, खनिज, विटामिन और एंटीऑक्सीडेंट्स और फाइटोस्टीरॉइड्स जैसे अन्य यौगिकों की मात्रा अधिक होती है।

कैलिफोर्निया के लोमा लिंडा विश्वविद्यालय के अध्ययनकर्ता जोएन सैबेटी और उनके साथियों ने सात देशों के कोलेस्ट्रॉल की उच्च मात्रा व कोलेस्ट्रॉल की सामान्य मात्रा वाले 583 स्त्री-पुरुषों को 25 परीक्षणों में खाने के लिए अखरोट देने के बाद इन परीक्षणों में प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों का अध्ययन किया था। इन सभी परीक्षणों में लोगों को दो समूह में बांटा गया था। एक समूह के लोगों को खाने के लिए अखरोट नहीं दिया गया, जबकि दूसरे समूह को अखरोट दिया गया। अध्ययन में शामिल लोगों को लिपिड की मात्रा कम करने के लिए कोई दवा नहीं दी गई थी। अध्ययन में शामिल प्रतिभागियों ने प्रतिदिन औसतन 67 ग्राम अखरोट का सेवन किया था। इसके बाद उनमें कोलेस्ट्रॉल की सांद्रता में 5.1 प्रतिशत की कमी, कम-घनत्व वाले लिपोप्रोटीन (खराब कोलेस्ट्रॉल) में 7.4 प्रतिशत की कमी और उच्च-घनत्व वाले लिपोप्रोटीन (अच्छा कोलेस्ट्रॉल) के स्तर में 8.3 का बदलाव देखा गया। अध्ययकर्ताओं का कहना है कि अखरोट, बादाम या मूंगफली के सेवन से होने वाला असर इन सूखी मेवाओं की ली जाने वाली मात्रा पर निर्भर करता है और सभी प्रकार की सूखी मेवाएं रक्त में मौजूद लिपिड के स्तर पर समान प्रभाव डालती हैं।

इजिप्ट में होने वाली सब-जूनियर स्पीड बॉल इंटरनेशनल प्रतियोगिता के लिए छात्र अर्पित शिवगोत्रा का हुआ चयन

एजेंसी

आरएस पुरा। इजिप्ट में 26 अप्रैल से लेकर 30 अप्रैल तक होने वाली सब-जूनियर स्पीड बॉल इंटरनेशनल प्रतियोगिता के लिए रेनू नेशनल हायर सेकेंडरी स्कूल टांडा आरएस पुरा के छठी कक्षा के छात्र अर्पित शिवगोत्रा पुत्र प्रीतम शिवगोत्रा का चयन हुआ हैं। स्कूल प्रबंधन की तरफ से कार्यक्रम का आयोजन कर सब जूनियर अंतर्राष्ट्रीय स्पीड बॉल प्रतियोगिता के लिए चयन होने पर छात्र अर्पित शिवगोत्रा को सम्मानित किया गया। स्कूल के प्रधानाचार्य प्रीतम शिवगोत्रा की अध्यक्षता में आयोजित इस सम्मानित समारोह के दौरान स्कूल स्टाफ के अन्य सदस्य भी उपस्थित रहे। इस मौके पर स्कूल के प्रधानाचार्य प्रीतम शिवगोत्रा ने कहा कि जम्मू कश्मीर के साथ-साथ क्षेत्र के लिए भी गर्व की बात है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली जूनियर इंटरनेशनल स्पीड बाल चैंपियनशिप के लिए उनके स्कूल के छात्र अर्पित शिवगोत्रा का चयन हुआ है। उन्होंने बताया कि छात्र अर्पित पिछले 2 साल से स्पीड बॉल प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहा है और हाल ही में हिमाचल प्रदेश में संपन्न हुई प्रतियोगिता में भी अर्पित का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा है और अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाली प्रतियोगिता के लिए उसका चयन हुआ है जो की एक गर्व की बात हैं। उन्होंने बताया कि जम्मू कश्मीर के तीन प्रतिभागियों का इस प्रतियोगिता के लिए चयन हुआ है। स्कूल के प्रधानाचार्य ने बताया कि कोच सनी नंदा की अध्यक्षता में सभी खिलाड़ी आज इजिप्ट के लिए रवाना होंगे।

फेडरेशन कपः ट्रिपल जंपर प्रवीण चित्रवाल ने की अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी

नई दिल्ली। ट्रिपल जंपर प्रवीण चित्रवाल ने कोच्चि में फेडरेशन कप के दौरान अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। चित्रवाल ने महाराजा कॉलेज स्टेडियम में 17.37 मीटर की छलांग दर्ज की, जिससे उन्होंने 2023 में क्यूबा के हवाना में होने वाले प्रूबा डे कॉन्फ्रॉन्टेसियन इवेंट में बनाए गए अपने रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। 23 वर्षीय चित्रवाल ने इस प्रयास के साथ ही इस वर्ष की एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप और विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए भी क्वालीफिकेशन हासिल कर लिया है। तमिलनाडु के इस जम्पर ने प्रतियोगिता से हटने से पहले फेडरेशन कप में अपनी दूसरी छलांग के साथ कीर्तिमान स्थापित किया।

फेडरेशन कपः ट्रिपल जंपर प्रवीण चित्रवाल ने की अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी

नई दिल्ली। ट्रिपल जंपर प्रवीण चित्रवाल ने कोच्चि में फेडरेशन कप के दौरान अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। चित्रवाल ने महाराजा कॉलेज स्टेडियम में 17.37 मीटर की छलांग दर्ज की, जिससे उन्होंने 2023 में क्यूबा के हवाना में होने वाले प्रूबा डे कॉन्फ्रॉन्टेसियन इवेंट में बनाए गए अपने रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। 23 वर्षीय चित्रवाल ने इस प्रयास के साथ ही इस वर्ष की एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप और विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए भी क्वालीफिकेशन हासिल कर लिया है। तमिलनाडु के इस जम्पर ने प्रतियोगिता से हटने से पहले फेडरेशन कप में अपनी दूसरी छलांग के साथ कीर्तिमान स्थापित किया।

रॉयल रेंजर्स, ड्रीम एफसी और एमिटी की रोमांचक जीत

नई दिल्ली। अनीता की शानदार हैट्रिक की मदद से रॉयल रेंजर्स ने सिटी एफसी को 3-0 से हरा कर डीएसए महिला प्रीमियर लीग में शानदार जीत दर्ज की।नेहरू स्टेडियम में खेले गए दिन के पहले मैच में हंस कैपिटल फुटबाल क्लब ने ईव्स स्पोर्ट्स क्लब पर 4-2 की जीत दर्ज की। विजेता के लिए दो शानदार गोल करने वाली सृष्टि कुमार को 'प्लेयर ऑफ द मैच' के पुरस्कार से नवाजा गया। वी चिंग और पायल ने एक-एक गोल बांटे। वहीं ईव्स के लिए नैंसी और नेहा ने एक-एक गोल किये। पुरुषों की ए डिवीजन के एक मैच में आशुतोष के दो दर्शनीय गोलों से द ड्रीम टीम ने उत्तराखंड फुटबाल क्लब को 2-0 से पराजित किया। विजेता टीम ने अधिकांश समय दबदबा बनाया लेकिन कई आसान मौके गँवाए। वरना जीत का अंतर बड़ा हो सकता था। अम्बेडकर स्टेडियम में खेले गए सीनियर डिवीजन लीग के मैच में एमिटी इंडियन नेशनल फुटबाल क्लब ने अहबाब एफसी को 5-3 से हराया। रोमांचक मुकाबले में विजेता टीम के लिए विकास दलाल और विनय ने दो दो तथा तनिश ने एक गोल किया। अहबाब के टी मिसाओ, मंगते और एल बेंजमीन ने एक-एक गोल दागे।

आईपीएलः सर्वाधिक रन बनाने वाले खिलाड़ियों की सूची में दूसरे स्थान पर पहुंचे विराट कोहली

एजेंसी

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग 2025 (आईपीएल) में एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर और राजस्थान रॉयल्स के बीच हुए मुक़ाबले के बाद सर्वाधिक रन बनाने वालों और विकेट लेने वालों की सूची में कई बदलाव हुए।

साई सुदर्शन शीर्ष पर कायम, कोहली दूसरे स्थान पर पहुंचे

गुजरात टाइटंस के युवा बल्लेबाज बी. साई सुदर्शन 417 रन बनाकर अब भी पहले स्थान पर बने हुए हैं। उन्होंने आठ मैचों में 52.12 की औसत और 152.18 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए हैं। वहीं, विराट कोहली ने लगातार दूसरा अर्धशतक जमाते हुए ऑरेंज कैप की दौड़ में लंबी छलांग लगाई है। राजस्थान के खिलाफ उन्होंने 42 गेंदों में 70 रन बनाए और अब उनके नाम नौ पारियों में 392 रन हो गए हैं।

निकोलस पूरन खिसके, सूर्यकुमार चौथे नंबर पर

लखनऊ सुपर जायंट्स के निकोलस पूरन ने प्रतियोगिता की शुरुआत धमाकेदार अंदाज़ में की थी और काफी मैचों तक सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी बने रहे। लेकिन हाल के मुकाबलों में खराब फॉर्म की वजह से अब वह तीसरे स्थान पर खिसक गए हैं। उनके नाम 377 रन हैं। मुंबई इंडियंस के सूर्यकुमार यादव इस सत्र में लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने हर मैच में उपयोगी योगदान दिया है और अब 373 रनों के साथ चौथे स्थान पर हैं।

पर्पल कैप की दौड़- हेज़लवुड ने पकड़ी रफ्तार

गुजरात टाइटंस के तेज़ गेंदबाज़ प्रसिद्ध कृष्णा अब भी सर्वाधिक विकेट लेकर पर्पल कैप धारक हैं। उन्होंने आठ मैचों में 16 विकेट लिए हैं। लेकिन रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के जोश हेज़लवुड ने राजस्थान के खिलाफ 4 विकेट लेकर 16 विकेट पूरे कर लिए हैं। हालांकि उनकी रनगति (इकोनॉमी रेट) अधिक होने के कारण वह दूसरे स्थान पर हैं।

12 विकेट लेने वाले गेंदबाजों की होड़

प्रसिद्ध कृष्णा और जोश हेज़लवुड के बाद सात गेंदबाज ऐसे हैं जिनके नाम 12-12 विकेट हैं। इनमें आरसीबी के क्रुणाल पांड्या (2 विकेट बनाम राजस्थान) नया नाम हैं।

ग्लोबल कबड्डी लीग: मराठी वल्चर्स की धमाकेदार जीत, अंक तालिका में शीर्ष पर पहुंची

एजेंसी

गुरुग्राम। ग्लोबल इंडियन प्रवासी कबड्डी लीग (जीआईपीकेएल) के पुरुष वर्ग के मुकाबले दर्शकों के लिए रोमांच से भरपूर रहे। गुरुग्राम यूनिवर्सिटी स्टेडियम में खेले गए मैचों में मराठी वल्चर्स, तमिल लायंस और पंजाबी टाइगर्स ने शानदार जीत दर्ज करते हुए अंक तालिका में अपनी स्थिति मजबूत की। आज की जीत के साथ मराठी वल्चर्स 13 अंकों के साथ अंक तालिका में शीर्ष स्थान पर पहुंच गई है। वहीं, पंजाबी टाइगर्स 12 अंकों के साथ दूसरे और तमिल लायंस 10 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर काबिज हैं। मैचों में मुख्य अतिथि के तौर पर गुरुग्राम के उपायुक्त अजय कुमार और भारतीय सेना के ब्रिगेडियर एस.के. सरीन उपस्थित रहे। दोनों ने खिलाड़ियों को 'प्लेयर ऑफ द मैच' सम्मान प्रदान किया और उनके प्रदर्शन की सराहना की। अजय कुमार ने कहा कि खिलाड़ियों का समर्पण और जोश इस लीग को खास बना रहा है। मुकाबलों की बात करें तो पहले मैच में तमिल लायंस ने भोजपुरी लेपर्ड्स को 35-33 से हराया। मुकाबला आखिरी क्षणों तक कांटे का रहा, लेकिन तमिल टीम की रणनीतिक रेडिंग और निर्णायक सुपर रेड ने उन्हें जीत दिलाई। दूसरे मैच में पंजाबी टाइगर्स ने तेलुगु पैंथर्स को 47-39 से पराजित किया। उनकी आक्रामक रेडिंग और मजबूत डिफेंस ने 6 ऑल-आउट के साथ टीम को जीत दिलाई। तीसरे और अंतिम मुकाबले में मराठी वल्चर्स ने हरियाणवी शार्क्स को 52-35 से हराकर अपनी ताकत का प्रदर्शन किया। मराठी टीम ने रेडिंग, टैकल और ऑल-आउट में शानदार संतुलन दिखाया।

मैड्रिड ओपन से हटे कार्लोस अल्कराज, चोट बनी वजह

एजेंसी

मैड्रिड। विश्व रैंकिंग में तीसरे स्थान पर काबिज स्पेनिश टेनिस खिलाड़ी कार्लोस अल्कराज ने मेड्रिड ओपन से अपना नाम वापस ले लिया है। पैर की चोट के कारण वे टूर्नामेंट में हिस्सा नहीं ले पाएंगे। मैड्रिड में उनका मुकाबला शनिवार को होना था। अल्कराज ने बताया कि उन्हें ऊपरी पैर में पहले से चोट थी, जो उन्हें बीते रविवार को बार्सिलोना ओपन के फाइनल के दौरान भी परेशान कर रही थी। इसके अलावा, अब उनके बाएं पैर में भी चोट है। उन्होंने कहा कि मेडिकल रिपोर्ट आने के बाद ही उन्होंने खेलने से इनकार करने का फैसला लिया।

अल्कराज ने 2022 और 2023 में मैड्रिड ओपन का खिताब जीता था। इस बार वे टूर्नामेंट के दूसरे वरीय खिलाड़ी थे और उनका ड्रा नोवाक जोकोविच के साथ एक ही हाफ में था। बार्सिलोना फाइनल में होल्गर रून से हार के दौरान उन्हें ट्रीटमेंट लेना पड़ा था। अल्कराज ने कहा कि उनकी ये चोट फ्रेंच ओपन में खेलने में बाधा नहीं बनेगी। उन्होंने

पिछले साल रोलां गैरो (फ्रेंच ओपन) में अलेक्जेंडर ज़्वेरेव को हराकर खिताब जीता था। इस बार भी वे खिताब बचाने उतरेंगे। ज़्वेरेव ने हाल ही में म्यूनिख ओपन जीतकर अल्कराज को पीछे छोड़ दूसरा स्थान हासिल कर लिया है।

अल्कराज ने इस साल अब तक 24 मुकाबलों में जीत और केवल 5 में हार दर्ज की है। उन्होंने फरवरी में रॉटरडैम (हार्ड कोर्ट) और अप्रैल में मोंटे कार्लो (क्ले कोर्ट) पर खिताब जीता है। हालांकि, हालिया कार्यक्रम को लेकर उन्होंने थकान की शिकायत भी की थी।

सुपरबेट रैपिड एंड ब्लिट्ज 2025: कार्लसन की गैरमौजूदगी में प्रज्ञानानंद खिताब के प्रबल दावेदार

एजेंसी

नई दिल्ली। ग्रैंड चेस टूर का हिस्सा सुपरबेट रैपिड और ब्लिट्ज शतरंज टूर्नामेंट शनिवार से शुरू हो रहा है। इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में इस बार नॉर्वे के स्टार खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन हिस्सा नहीं ले रहे हैं, जिससे भारतीय ग्रैंडमास्टर आर. प्रज्ञानानंद खिताब के सबसे बड़े दावेदारों में शुमार हो गए हैं। इस टूर्नामेंट में भारत की ओर से आर. प्रज्ञानानंद और अरविंद चिथंबरम भाग ले रहे हैं। कार्लसन की गैरमौजूदगी ने मुकाबले को पूरी तरह खुला बना दिया है और ऐसे में प्रज्ञानानंद की तेजी से खेले जाने वाले फॉर्मेट में सटीकता उन्हें बेहद खतरनाक खिलाड़ी बनाती है। उन्होंने इस साल टाटा स्टील मास्टर्स में विश्व चैंपियन डी. गुकेश को हराकर खिताब जीता था, जिससे उनके आत्मविश्वास में जबरदस्त इजाफा हुआ है। अरविंद चिथंबरम ने प्राग मास्टर्स में शानदार प्रदर्शन कर यह वाइल्ड कार्ड एंट्री हासिल की है। यह टूर्नामेंट उनके लिए बड़ी परीक्षा की तरह होगा, जहां उन्हें विश्व स्तरीय खिलाड़ियों का सामना करना है। फ्रांस के अलीरेजा फिरूज़जा को भी खिताब का प्रबल दावेदार माना जा रहा है। वहीं उनके हमवतन मैक्सीम वाचिए-लाग्रेव भी पिछले दशक में फ्रेंच खिलाड़ियों की छवि को आगे बढ़ाने की उम्मीदों के साथ उतरेंगे। पोलैंड के डूडा और अमेरिका के लेवोन अरोनियन भी खिताब की रेस में रह सकते हैं। विश्व नंबर-1 मैग्नस कार्लसन ने क्लासिकल फॉर्मेट में अपनी रुचि कम होने की बात स्वीकार करते हुए इस टूर्नामेंट से दूरी बना ली है। वे अब 'फ्रीस्टाइल चेस' की ओर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और हाल ही में लगातार दो टूर्नामेंट जीत चुके हैं।

इस टूर्नामेंट में कुल पुरस्कार राशि 1,75,000 अमेरिकी डॉलर है, और इसके साथ-साथ पूरे सीजन के अंत में ग्रैंड प्राइज का हिस्सा बनने का मौका भी मिलेगा। हर टूर्नामेंट में प्रदर्शन के आधार पर अंक मिलते हैं, जो अंत में ग्रैंड चेस टूर के विजेता का फैसला करेंगे।

मैड्रिड ओपनः स्वियातेक ने मियामी की हार का लिया बदला, एलेक्स ईला को दी शिकस्त

एजेंसी

मैड्रिड। पोलैंड की स्टार टेनिस खिलाड़ी इगा स्वियातेक ने मैड्रिड ओपन के दूसरे दौर में रोमांचक मुकाबले में फिलीपींस की 19 वर्षीय उभरती सितारा एलेक्स ईला को 4-6, 6-4, 6-2 से हराया। पिछले महीने मियामी ओपन में ईला से मिली करारी हार के बाद यह जीत स्वियातेक के लिए बदला लेने जैसी रही।मैच की शुरुआत में ईला ने शानदार खेल दिखाते हुए स्वियातेक की सर्विस तोड़ी और पहला सेट 6-4 से अपने नाम कर लिया। लेकिन इसके बाद स्वियातेक ने अनुभव का फायदा उठाते हुए गेम पर पकड़ मजबूत की और अगले दोनों सेट 6-4, 6-2 से जीतकर मुकाबला अपने नाम किया। एलेक्स ईला ने मियामी ओपन में स्वियातेक को सीधे सेटों में हराकर सुर्खियां बटोरी थीं। उन्होंने उस टूर्नामेंट में जेलेना ओस्तापेंको और मैडिसन कीज़ जैसी ग्रैंड स्लैम विजेताओं को भी शिकस्त दी थी। हालांकि उनका सफर सेमीफाइनल में जेसिका पेगुला के हाथों हार के साथ समाप्त हुआ था। इस प्रदर्शन की बदौलत वह टॉप 100 में जगह बनाने वाली पहली फिलिपीना खिलाड़ी बनीं और फिलहाल रैंकिंग में 72वें स्थान पर हैं। दुनिया की नंबर 2 खिलाड़ी और गत विजेता स्वियातेक इस साल अब तक तीन सेमीफाइनल (ऑस्ट्रेलियन ओपन, इंडियन वेल्स, और एक अन्य) तक पहुंच चुकी हैं लेकिन फाइनल नहीं खेल सकी हैं। पिछले हफ्ते स्टटगार्ट में उन्हें जेलेना ओस्तापेंको के हाथों तीन सेटों में हार का सामना करना पड़ा था।

अन्य मुकाबलों में एंड्रीवा और निशिकोरी का जलवा

महिला वर्ग में रूस की मिर्रा एंड्रीवा ने मेरी बौजकोवा को 6-3, 6-4 से हराकर तीसरे दौर में जगह बनाई। ब्राज़ील की बीया हद्दाद मायिया ने पेरा को 2-6, 6-3, 6-1 से मात दी। अमेरिका की केटी वोलिनेट्स को डायना श्नाइडर ने 6-1, 6-2 से हराया जबकि एम्मा नवारो ने माया जॉइंट को 7-5, 7-5 से हराकर जीत दर्ज की।

केई निशिकोरी का 450वां टूर-स्तरीय जीत

पुरुष वर्ग में जापान के पूर्व विश्व नंबर 4 केई निशिकोरी ने अलेक्ज़ेंडर वुकिक को 6-4, 3-6, 6-3 से हराकर अपने करियर की 450वीं टूर-स्तरीय जीत दर्ज की। उन्होंने कहा, 'मुझे इसका अंदाजा नहीं था। बस एक-एक मैच खेलता हूंज अब तक 18 साल का सफर रहा है, उम्मीद है 500 तक पहुंच जाऊं।÷ उनका अगला मुकाबला 29वीं वरीयता प्राप्त डेनिस शापोवालोव से होगा।

खिलाड़ियों को आवेदन की जरूरत नहीं,अब सरकार खुद देगी इनाम: मनसुख मांडविया

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने इंदिरा गांधी स्टेडियम में डिजीलॉकर के माध्यम से खेल प्रमाणपत्र जारी करने के पहल की शुरुआत की।

इस मौके पर उन्होंने नेशनल सेंटर फॉर स्पोर्ट्स साइंस एंड रिसर्च का भी उद्घाटन किया।डॉ. मांडविया ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी सरकार की हर खेल पहल खिलाड़ी-केंद्रित है। उन्होंने बताया कि नेशनल स्पोर्ट्स गवर्नेंस बिल 2024, नेशनल स्पोर्ट्स पॉलिसी 2024 और एज फ्रॉड के खिलाफ नेशनल कोड 2025 जैसे कदम सरकार की पारदर्शिता और सुशासन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। मांडविया ने ऐलान किया कि डिजीलॉकर से जुड़े खेल प्रमाणपत्र जल्द ही नेशनल स्पोर्ट्स रिपॉजिटरी सिस्टम से जोड़े जाएंगे। इससे खिलाड़ियों को सरकार द्वारा मिलने वाली नकद पुरस्कार राशि डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) के माध्यम से उनके बैंक खातों में सीधे मिलेगी।

उन्होंने कहा कि अब खिलाड़ी को सरकार से इनाम पाने के लिए आवेदन नहीं करना पड़ेगा। जब पूरी दुनिया ने देखा है कि उसने पदक जीता है, तो फिर प्रमाण देने की जरूरत क्यों? मांडविया ने 2036 ओलंपिक की मेज़बानी की तैयारी के रोडमैप का जिक्र किया और 2030 कॉमनवेल्थ गेम्स की मेज़बानी में भी रुचि दिखाई।

आरसीबी ने घरेलू मैदान पर दर्ज की सीजन की पहली जीत, राजस्थान रॉयल्स को 11 रन से हराया

एजेंसी

बेंगलुरु। आईपीएल 2025 के 42वें मुकाबले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने अपने घरेलू मैदान एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम पर शानदार प्रदर्शन करते हुए राजस्थान रॉयल्स (आरआर) को 11 रनों से शिकस्त दी। यह जीत आरसीबी की इस सत्र में अपने होम ग्राउंड पर पहली है और इसके साथ ही टीम अंक तालिका में तीसरे स्थान पर पहुंच गई है। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी आरसीबी की टीम ने 5 विकेट पर 205 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया। ओपनर्स फिल सॉल्ट (26) और विराट कोहली (70) ने तेज शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 61 रन जोड़े। कोहली ने अपनी 70 रनों की शानदार पारी में 8 चौके और 2 छक्के लगाए। इसके बाद देवदत्त पडिक्कल (50 रन) ने विराट के साथ मिलकर दूसरे विकेट के लिए 105 रनों की अहम साझेदारी की।

अंत में टिम डेविड (23 रन, 15 गेंद) और जितेश शर्मा (नाबाद 20 रन, 10 गेंद) की तेज पारियों ने स्कोर को 200 के पार पहुंचाया। राजस्थान की ओर से संदीप शर्मा ने दो विकेट, जबकि हसरंगा और जोफ्रा आर्चर ने एक-एक विकेट लिया। 206 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए राजस्थान रॉयल्स की शुरुआत अच्छी रही। यशस्वी जायसवाल (49 रन, 19 गेंद) ने आक्रामक अंदाज में बल्लेबाजी की, लेकिन उन्हें जॉश हेजलवुड ने आउट कर दिया। इसके बाद लगातार विकेट गिरते गए। रियान पराग (22 रन), नीतीश राणा (28 रन) और हेटमायर (11 रन) पिच पर टिक नहीं सके। हालांकि ध्रुव जुरेल (47 रन) ने अंत तक संघर्ष किया, लेकिन जोश हेजलवुड के शानदार 19वें ओवर ने मैच का रुख पूरी तरह आरसीबी की ओर मोड़ दिया। राजस्थान की टीम 20 ओवरों में 9 विकेट पर 194 रन ही बना सकी और मैच 11 रन से हार गई।

आरसीबी के लिए जॉश हेजलवुड ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 4 विकेट चटकाए और क्रुणाल पंड्या ने 2 विकेट झटके। भुवनेश्वर कुमार को एक सफलता मिली। इस जीत के साथ आरसीबी के 12 अंक हो गए हैं, और अब वो गुजरात टाइटंस और दिल्ली कैपिटल्स के साथ शीर्ष तीन में शामिल हो गई है।

मुंबई सिटी एफसी ने कलिंगा सुपर कप में चेन्नईयिन एफसी को 4-0 से हराया

भुवनेश्वर। लल्लियनजुआला छांगते के दो गोल के शानदार गोल के दम पर मुंबई सिटी एफसी ने कलिंगा सुपर कप के राउंड ऑफ 16 के मुकाबले में चेन्नईयिन एफसी को 4-0 से हरा दिया।कलिंगा स्टेडियम में बुधवार रात खेले गये मुकाबला का पहला हाफ 1-0 से बराबरी पर समाप्त हुआ। मुंबई सिटी एफसी की ओर से निकोलाओस करेलिस ने (43वें) मिनट पहला गोल दागकर अपनी टीम को बढ़त दिलाई। इसके बाद लल्लियनजुआला छांगते ने (64वें, 86वें) मिनट में दो गोल करके स्कोर 3-0 कर दिया। इसके बाद सब्सटीट्यूट बिपिन सिंह ने (90वें) में गोलकर मुकाबला 4-0से जीत लिया।लल्लियनजुआला छांगते को उनके शानदार खेल के लिए कलिंगा प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार से नवाजा गया।

सैफ चैंपियनशिप 2025 स्थगित, अब 2026 में होगा आयोजन

एजेंसी

नई दिल्ली। दक्षिण एशियाई फुटबॉल महासंघ (सैफ) ने घोषणा की कि आगामी सैफ चैंपियनशिप 2025 को स्थगित कर अब 2026 में आयोजित किया जाएगा। महासंघ के मुताबिक, प्रतियोगिता को बेहतर और भव्य तरीके से आयोजित करने के लिए अभी और तैयारियों की आवश्यकता है। हालांकि अभी तारीखों का ऐलान नहीं किया गया है।

सैफ ने अपने मीडिया बयान में कहा, हमारे सदस्य संघों और साझेदार स्पोर्टफाइव के साथ विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि टूर्नामेंट की सफलता सुनिश्चित करने हेतु इसे 2026 तक के लिए टाल दिया जाए, जिससे सभी संबंधित पक्षों को आयोजन के लिए पर्याप्त समय मिल सके। 2025 संस्करण को शुरू में होम एंड अवे फॉर्मेट में कराने की योजना थी, जिसे बाद में बदलकर श्रीलंका में केंद्रीकृत

आयोजन का निर्णय लिया गया था। हालांकि, अब वह योजना भी रद्द कर दी गई है और आयोजन की नई तारीख और स्थान की घोषणा अभी नहीं की गई है। सैफ ने यह भी बताया कि चूंकि 2026 में फीफा वर्ल्ड कप भी आयोजित होगा, इसलिए समय और स्थान के निर्धारण में अतिरिक्त सतर्कता बरती जाएगी ताकि दोनों टूर्नामेंटों में तालमेल बना रहे।

बयान में आगे कहा गया, हम अपने सभी प्रशंसकों, मीडिया और सदस्य संघों से अनुरोध करते हैं कि वे हमारे साथ सहयोग करें ताकि सैफ चैंपियनशिप को एक प्रतिष्ठित और त्रुटिहीन आयोजन के रूप में प्रस्तुत किया जा सके। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2023 में यह टूर्नामेंट भारत में सफलतापूर्वक आयोजित हुआ था, जहां भारत ने रिकॉर्ड नौवीं बार खिताब जीता था। भारत के दिग्गज खिलाड़ी सुनील छेत्री को उस संस्करण में गोल्डन बॉल (सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी) और गोल्डन बूट (सर्वाधिक गोल) से सम्मानित किया गया था।

ग्फेडरेशन कपः ओडिशा के अनीमेश कुजुर ने 200 मीटर दौड़ में तोड़ा राष्ट्रीय रिकॉर्ड

एजेंसी

कोच्चि। ओडिशा के अनिमेष कुजूर ने कोच्चि के महाराजा स्टेडियम में संपन्न राष्ट्रीय महासंघ सीनियर एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2025 में पुरुषों की 200 मीटर में राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा। उन्होंने 20.40 सेकंड में दौड़ को पूरा करते हुए पिछले रिकॉर्ड धारक अमलान बोरगोहेन को पीछे छोड़ स्वर्ण पदक अपने नाम किया। दौड़ पूरी करते ही अनीमेश ने जोरदार गर्जना के साथ अपनी खुशी का इजहार किया। उन्होंने कहा, 100 मीटर में शानदार प्रदर्शन के बाद मुझे यकीन हो गया था कि 200 मीटर में कुछ बड़ा होने वाला है। अनीमेश के कोच मार्टिन ओवेन्स, जो उन्हें ओडिशा रिलायंस सेंटर में प्रशिक्षण देते हैं, ने कहा, यह सफलता लंबे समय से प्रतीक्षित थी। हमें उन एथलीट्स का भी धन्यवाद करना चाहिए जिन्होंने उन्हें प्रेरित किया– मणि, रघुल और अमलान।

ट्रिपल जंप और लॉन्ग जंप में भी रिकॉर्ड की बौछार

वहीं तमिलनाडु के प्रवीण चित्रवेल ने भी ट्रिपल जंप में 17.37 मीटर की छलांग लगाकर न केवल अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी की, बल्कि टोक्यो वर्ल्ड्स के लिए क्वालिफाई भी कर लिया। उन्होंने अपनी जर्सी के पीछे '17.20मिनट फॉर माई कोच यॉन्ड्रिस' लिखकर एक भावुक संदेश भी दिया। प्रवीण ने कहा, 'मैं

अपनी एड़ी की चोट से जूझ रहा था, इसलिए सिर्फ तीन प्रयासों के बाद रुक गया।' इस स्पर्धा में एशियाई चैंपियन अब्दुल्ला अबूबक्कर ने 16.99 मीटर के साथ रजत पदक जीता। वहीं, लंबी कूद में शैली सिंह ने शानदार 6.64 मीटर की छलांग लगाकर अपनी मेंटर अंजू बॉबी जॉर्ज का 23 साल पुराना मीट रिकॉर्ड तोड़ दिया। एशियाई खेलों की रजत पदक विजेता एंसी सोजन को 6.46 मीटर के साथ दूसरा स्थान मिला। शैली के कोच रॉबर्ट बॉबी जॉर्ज ने उम्मीद जताई थी कि वह 6.75 मीटर तक जाएंगी। हालांकि शैली उस आंकड़े तक नहीं पहुंच सकीं, लेकिन पिछले दो सालों में यह उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था।

शॉट पुट और जैवलिन में भी चौंकाने वाले नतीजे

शॉट पुट में समरदीप गिल ने 19.34 मीटर की थ्रो के साथ एशियाई खेलों के स्वर्ण विजेता तजिंदरपाल सिंह तूर (18.77 मीटर) को पीछे छोड़ दिया और सभी को चौंका दिया। महिलाओं की भाला फेंक प्रतियोगिता में अन्नू रानी अपनी पूरी लय में नहीं थीं, लेकिन फिर भी उन्होंने आराम से खिताब जीत लिया। फेडरेशन कप का यह संस्करण भारतीय एथलेटिक्स के लिए कई मायनों में ऐतिहासिक रहा। नए रिकॉर्ड, उभरते सितारे और अनुभवी खिलाड़ियों की वापसी ने इसे यादगार बना दिया है।

तीसरी शादी, एक्स वाइफ श्वेता से अनबन का असर और बेटी

पलक तिवारी

राजा चौधरी ने किए कई खुलासे

टीवी की मशहूर एक्ट्रेस श्वेता तिवारी के एक्स-हस्बैंड राजा चौधरी की सोनी सब टीवी के शो 'तेनाली रामा' में एंट्री हो रही है. इस सीरियल में वो 'चौडप्पा राया' का किरदार निभाने वाले हैं. राजा चौधरी को आखिरी बार सीरियल 'कैसा है ये रिश्ता अंजाना' शो में देखा गया था. इस शो के बाद उन्होंने एक छोटा ब्रेक लिया था. अपनी वापसी पर खुशी जाहिर करते हुए टाइम्स ऑफ़ इंडिया के साथ की अपनी बातचीत में कहा कि पूरी यूनिट और दोस्तों के साथ दोबारा जुड़कर बहुत अच्छा लग रहा है. इस दौरान उन्होंने ये भी कहा कि उनकी एक्स-वाइफ श्वेता तिवारी के साथ हुई अनबन का असर उनकी प्रोफेशनल जिंदगी पर भी पड़ा है.

राजा चौधरी ने कहा, मुझे नहीं लगता कि मुझे उतना काम मिला, जिसका मैं सही में हकदार था. शायद ये मुझसे जुड़ी निगेटिव पब्लिसिटी की वजह से हुआ. जिन लोगों ने मुझसे कभी मुलाकात भी नहीं की, वे भी मान लेते हैं कि मैं दूसरों के लिए हमेशा समस्याएं खड़ी करता हूं. अगर मैं सच में दूसरों को परेशान करता, तो 'तेनाली रामा' के प्रोड्यूसर मुझे वापस क्यों लाते ? हां, दूसरों की मेरे बारे में बनी इस धारणा के कारण मुझे प्रोफेशनल रूप से नुकसान उठाना पड़ा.

शराब छोड़ने के लिए शुरू किया पिकल बॉल

राजा ने अपनी शराब की लत (Alcoholism) के बारे में भी बात की. उन्होंने बताया कि वो अब कुछ समय से सोबर हैं (शराब का सेवन नहीं कर रहे हैं). उन्होंने कहा, शराब की लत मेरी ज़िंदगी में एक बड़ी

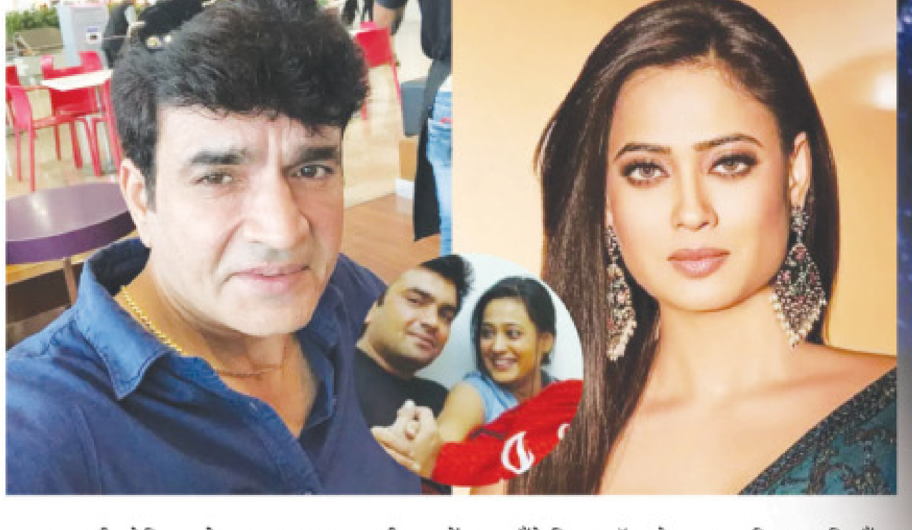

समस्या थी, लेकिन मुझे इसका एहसास काफी बाद में हुआ. मैंने पिकलबॉल खेलना शुरू किया, ताकि मैं इस आदत पर काबू पा सकूं. मैंने खुद को इस खेल में पूरी तरह लगा दिया, जिसने मुझे व्यस्त रखा और मेरी लत से लड़ने में मदद की, शुक्र है मैंने इस पर काबू पा लिया है. 2021 से मैं एक सोबर जीवन जी रहा हूं और अब मैं अधिक स्पष्ट रूप से सोच सकता हूं, शांत रह सकता हूं, और खुश हूं.

परिवार ने की मदद

राजा ने अपनी रिकवरी का श्रेय उनके परिवार को भी दिया. वो बोले, मेरे माता-पिता मेरी शराब की लत से परेशान थे. आखिरकार, आप अपने परिवार के लिए जीते हैं, और जब वे आपसे खुश नहीं होते हैं, तो आपको एहसास होता है कि आपको बदलने की जरूरत है. जब मैंने अपनी गलतियों को स्वीकार किया, तब मुझे खुद पर काम करने की ताकत आ गई. मेरा परिवार इस सब में मेरे साथ रहा है. उन्होंने मुझे सपोर्ट किया.

अब शादी नहीं करनी

दो शादियां टूटने के बाद (एक एक्ट्रेस श्वेता तिवारी और दूसरी दिल्ली की कॉर्पोरेट प्रोफेशनल श्वेता सूद के साथ), अब राजा फिलहाल प्यार या शादी की तलाश में नहीं हैं. वो कहते हैं, मैं प्यार और शादी के खिलाफ नहीं हूं, लेकिन फिलहाल मैं इस बारे में नहीं सोच रहा. अपनी पहली शादी से हुई बेटी, एक्ट्रेस पलक तिवारी के साथ अपने रिश्ते के बारे में उन्होंने कहा, हम अब भी संपर्क में रहते हैं. जब भी उसे अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय मिलता है, वो मुझसे बात करती है और मैं भी ऐसा ही करता हूं. मुझे उस पर बहुत गर्व है.

'रामायण' के 'हनुमान' की बहू थी ये मुस्लिम एक्ट्रेस, पहले सिख फिर हिंदू से रचाई थी शादी

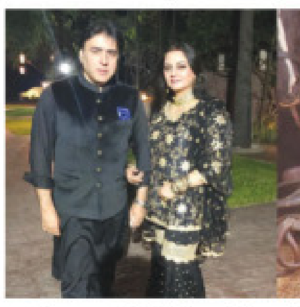

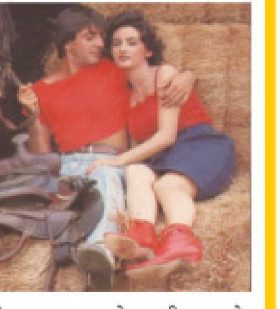

90 के दशक में बॉलीवुड में अपनी शुरुआत करने वाली तब्बू ने अपने करियर में अच्छा खासा नाम कमाया था. हालांकि उनकी बड़ी बहन फराह नाज को इस तरह की लोकप्रियता हासिल नहीं हो पाई. फराह ने 80 और 90 के दशक में बॉलीवुड में काम किया था, लेकिन वो बड़ी एक्ट्रेस बनने में नाकाम रहीं.फराह नाज ने अपने दौर में कई फिल्मों में काम किया था, लेकिन वो अपने समय की एक्ट्रेसेस के मुकाबले चर्चा में नहीं रहीं और वो अब एक गुमनाम जीवन जी रही हैं. लेकिन एक्ट्रेस अपनी पर्सनल लाइफ के चलते सुर्खियों में रही हैं. तब्बू जहां आज तक 53 साल की उम्र में भी कुंवारी हैं, तो वहीं फराह ने दो-दो शादी की थी. मुस्लिम धर्म से संबंध रखने वाली फराह ने पहली शादी सिख एक्टर से जबकि दूसरी शादी हिंदू एक्टर से की थी.

1985 में किया एक्टिंग डेब्यू

56 वर्षीय फराह का जन्म 9 दिसंबर 1968 को हैदराबाद में हुआ था. उन्होंने साल 1985 में आई फिल्म 'फासले' से एक्टिंग डेब्यू किया था. इसके बाद एक्ट्रेस के खाते में 'लव 86' और 'नसीब अपना-अपना' जैसी हिट फिल्में आईं. फिर उन्होंने 'घर घर की कहानी', 'यतीम', 'रखवाला', 'जवानी जिंदाबाद', 'ईमानदार', 'अचानक' और 'हलचल' जैसी फिल्मों में भी काम किया.

'रामायण' के 'हनुमान' दारा सिंह की बहू थीं फराह

फराह नाज ने अपने करियर के पीक पर शादी करने का फैसला लिया था. मुस्लिम धर्म से ताल्लुक रखने के बावजूद उन्होंने सिख एक्टर विंदु सिंह से साल 1996 में शादी की थी. विंदु दिवंगत पहलवान और रामानंद सागर के धारावाहिक 'रामायण में 'हनुमान' की भूमिका निभाने वाले दारा सिंह के बेटे हैं. शादी के बाद विंदु और फराह एक बेटे फतेह रंधावा के पैरेंट्स बने. लेकिन कपल ने शादी के 6 साल बाद साल 2002 में तलाक ले लिया था.

फिर हिंदू एक्टर से की दूसरी शादी

विंदु सिंह से अलग होने के बाद फराह नाज ने जल्द ही दूसरी शादी करने का फैसला कर लिया था. सिख एक्टर के बाद उन्होंने हिंदू एक्टर सुमीत सहगल को अपना लाइफ पार्टनर चुना. सुमीत बॉलीवुड में काम कर चुके हैं. सुमीत और फराह ने साल 2003 में शादी रचाई थी. अब कपल की शादी को करीब 22 साल बीत चुके हैं. कभी अपनी खूबसूरती के लिए भी चर्चा में रहीं फराह अब काफी बदल चुकी हैं.

जब जूते पहनकर रणबीर कपूर ने कर दी थी ऐसी हरकत, पिता ऋषि कपूर ने जड़ दिया था थप्पड़

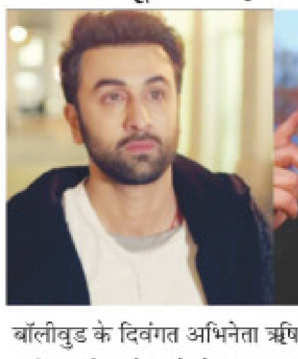

बॉलीवुड के दिवंगत अभिनेता ऋषि कपूर अपने सख्त मिजाज के लिए भी जाने जाते थे. एक बार उन्होंने अपनी इस सख्ती के चलते बेटे रणबीर कपूर को जोरदार थप्पड़ रसीद कर दिया था. तब रणबीर काफी छोटे थे. हालांकि तब बचपन में अनजाने में रणबीर से एक गलती हो गई थी, जिसे ऋषि कपूर बर्दाश्त नहीं कर सके.रणबीर कपूर अपने पिता ऋषि कपूर के साथ बेहद अच्छा रिश्ता रखते थे. हालांकि अब ऋषि इस दुनिया में नहीं हैं. लेकिन उनसे जुड़े कई किस्से काफी मशहूर हैं. आज ऐसा ही एक किस्सा हम आपको बता रहे हैं, जो खुद रणबीर ने अपने एक इंटरव्यू के दौरान शेयर किया था. दरअसल एक बार बचपन में रणबीर पूजा घर में जूते पहनकर चले गए थे और गुस्से में तब रणबीर को ऋषि ने तमाचा जड़ दिया था.

पूजा घर में जूते पहनकर चले गए थे रणबीर

ये किस्सा उस समय का है जब रणबीर बिल्कुल बच्चे और नादान थे. उन्हें सही गलत का भेद पता नहीं था. तब उनकी उम्र थी 12 साल. एक दिन रणबीर जूते पहनकर अपने घर के पूजा स्थल में चले गए थे, जिससे ऋषि का गुस्सा सातवे आसमान पर था और उन्होंने रणबीर पर तुरंत सारा गुस्सा निकाल दिया.

ऋषि ने रणबीर को मारा थप्पड़

एक इंटरव्यू के दौरान रणबीर ने बचपन की इस घटना को शेयर करते हुए कहा था, मैं अपने पापा का हमेशा से फैन रहा हूं, उनके डिफरेंट किरदारों को देखना मुझे अच्छा लगता है. यूं तो पापा कभी मुझ पर चिल्लाए नहीं लेकिन बचपन में एक बार मुझे बहुत जोर का चांटा मारा था, क्योंकि मैं जूते पहनकर पूजा रूम में चला गया था. तब मैं करीब 12 साल का था.

2007 में हुआ था रणबीर का डेब्यू

रणबीर कपूर ने पिता ऋषि कपूर और मां नीतू कपूर की राह पर चलते हुए साल 2007 में अपने बॉलीवुड करियर की शुरुआत फिल्म 'सावरिया' से की थी. इसमें उनके अपोजिट सोनम कपूर नजर आई थीं. हालांकि ये पिक्चर पिट गई. लेकिन रणबीर ने जल्द ही फैंस के दिलों को जीता और बॉलीवुड के सुपरस्टार कहलाए.

अब रामायण में नजर आएंगे रणबीर

रणबीर ने अपने 18 साल के करियर में 'बर्फी', 'संजू', 'ए दिल है मुश्किल', 'ये जवानी है दीवानी', 'तू झूठी मैं मक्कार', 'ब्रह्मास्त्र-पार्ट वन', 'एनिमल', रॉकस्टार', और 'राजनीति' जैसी शानदार फिल्में दी हैं. अब रणबीर 1 हजार करोड़ के बजट में बन रही फिल्म 'रामायण' में भगवान श्री राम की भूमिका में नजर आने वाले हैं.

वरुण धवन

की 5 सुपरहिट रॉम-कॉम फिल्में, जिन्हें फैमिली या पार्टनर के साथ कहीं भी देख सकते हैं

2012 में करण जौहर की सुपरहिट फिल्म स्टूडेंट ऑफ द ईयर से तीन नए कलाकारों ने डेब्यू किया था, जिनके नाम आलिया भट्ट, सिद्धार्थ मल्होत्रा और वरुण धवन हैं. यहां बात वरुण धवन की करें तो उन्होंने सबसे ज्यादा सफल फिल्में दी हैं और अलग-अलग समय में उनका हर तरह का किरदार देखने को मिला. वरुण को हमेशा रोमांटिक-कॉमेडी फिल्मों में देखना फैंस पसंद करते हैं.

24 अप्रैल 1987 को मुंबई में जन्में वरुण धवन के पिता मशहूर फिल्म डायरेक्टर डेविड धवन हैं. इस साल वरुण अपना 38वां बर्थडे मना रहे हैं और आने वाले समय में उनकी कई बेहतरीन फिल्में रिलीज भी होने वाली हैं. उन फिल्मों के पहले वरुण की कुछ रोम-कॉम फिल्मों को एक बार फिर देख लेना चाहिए.

वरुण धवन की सुपरहिट रोम-कॉम फिल्में

आज के यंगस्टर्स वरुण धवन को देखना पसंद करते हैं. वरुण ने अपने अभी तक के करियर में कॉमेडी और सीरियस दोनों तरह के किरदारों को निभाया और उसके साथ जस्टिस भी किया है. अगर आप वरुण की कॉमेडी फिल्में पसंद करते हैं तो ये 5 फिल्में भी जरूर पसंद करते होंगे.

'जुग जुग जियो'

24 जून 2022 को रिलीज हुई इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई की थी. फिल्म में वरुण धवन और कियारा आडवाणी की जोड़ी बनी थी और इनके अलावा अनिल कपूर, नीतू कपूर भी अहम किरदारों में थे. फिल्म का निर्देशन राज मेहता ने किया था और इसे करण जौहर के बैनर धर्मा प्रोडक्शन में बनाया गया था. ये फिल्म आज आप प्राइम वीडियो पर देख सकते हैं.

'बद्रीनाथ की दुल्हनिया'

10 मार्च 2017 को रिलीज हुई इस फिल्म का निर्देशन शशांक खैतान ने किया था वहीं इसे करण जौहर ने प्रोड्यूस किया था. इस फिल्म में वरुण धवन के साथ आलिया भट्ट नजर आई थीं और फिल्म में भरपूर कॉमेडी के साथ एक सोशल मैसेज भी दिखाया गया था. इस फिल्म को आप प्राइम वीडियो पर देख सकते हैं.

'हम्टी शर्मा की दुल्हनिया'

11 जुलाई 2014 को रिलीज हुई इस फिल्म का निर्देशन भी शशांक खैतान ने किया था और करण जौहर ने इसे प्रोड्यूस किया था.

फिल्म में वरुण के साथ आलिया भट्ट ही नजर आई थीं और इस फिल्म में वरुण और आलिया ने 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' के बाद पहली बार साथ काम किया था. ये फिल्म भी प्राइम वीडियो पर उपलब्ध है.

'मैं तेरा हीरो'

4 अप्रैल 2014 को रिलीज हुई इस फिल्म का निर्देशन वरुण के पिता डेविड धवन ने ही किया था. फिल्म को एकता कपूर ने प्रोड्यूस किया था. इस फिल्म में वरुण के अलावा इलियाना डिक्रूज, नरगिस फाखरी और अनुपम खेर अहम किरदारों में नजर आए थे. ये फिल्म आप जियो हॉटस्टार पर देख सकते हैं.